www.terapanthionfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 14 ■ 16-31 मई, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ **सदस्यता शुल्क :**

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ **विज्ञापन सहयोग :**

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❐ **सम्पर्क सूत्र :**
अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली--110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

- अस्पृश्यता — *आचार्य तुलसी* — 3
- सेवा और नैतिकता — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 5
- आखिरकार क्या सीख रहे हैं हमारे बच्चे — *आशीष वशिष्ठ* — 8
- विशिष्ट जनों की सुरक्षा — *प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा* — 10
- क्या देश प्रगति कर रहा है? — *सत्यनारायण भटनागर* — 12
- मिलावट के दरिन्दे — *डॉ. विनोद गुप्ता* — 15
- धन की बौछार करतीं गंदी बस्तियां — *अंकुर पालीवाल* — 16
- मन का बोझ — *डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'* — 18
- सिलीगुड़ी-दार्जिलिंग यात्रा :1: — *डॉ. महेन्द्र कर्णावट* — 20
- युवा शक्ति मिटा सकती है भय और भूख — *रामस्वरूप रावतसरे* — 23
- परोपकार ही है धर्म का मूल — *अशोक सहजानन्द* — 24
- मनुष्यों में निवेश करो — *जनार्दन शर्मा* — 25
- अब आदमी नहीं मिलेगा....? — *ब्र.ना. कौशिक* — 26
- शारीरिक दुर्बलता और प्रेक्षा चिकित्सा :2: — *मुनि किशनलाल* — 28
- बच्चों में मानव मूल्यों का विकास — *रजनीकांत शुक्ल* — 30
- शाश्वत और सार्वभौमिक धर्म — *डॉ. बी.एन. पांडेय* — 32

■ स्तंभ

- संपादकीय — 2
- राष्ट्र चिंतन — 7
- कविता — 4, 13, 17
- झाँकी है हिन्दुस्तान की — 19
- पाठकों के स्वर — 27
- अणुव्रत आंदोलन — 35-39
- कृति — 40

पृथ्वी बचाओ

पिछली सदी में हुई औद्योगिक क्रांति एवं स्वच्छंद भोग प्रवृत्ति से धरती का तापमान 0.7 डिग्री बढ़ा है। यदि आने वाले समय में 5.0 से 6.0 डिग्री तक और बढ़ गया तो पृथ्वी रहने लायक नहीं रहेगी। तपती धरती ने आम आदमी को पानी के लिए भी तरसा दिया है। औद्योगिकरण ने मनुष्य के सामने जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण जैसे विश्वव्यापी खतरे पैदा कर दिये हैं, जिसके कारण मनुष्य को शुद्ध पानी, शुद्ध वायु, शांत वायुमंडल का अभाव झेलना पड़ रहा है और भूमि की उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है।

पृथ्वी की संरचना में 42 प्रतिशत लोहा (निकिल व फेरियम) 29.5 प्रतिशत ऑक्सीजन 15.2 प्रतिशत सिलिकॉन, 12.7 प्रतिशत मैग्नीशियम है। ज्यादातर लोहा केन्द्र में है, जहाँ यह हिस्सा 88 प्रतिशत है। पृथ्वी के वायुमंडल का अस्तित्व 10 हजार किलोमीटर की ऊँचाई तक मिलता है। हालांकि इसका 75 फीसदी हिस्सा सतह से 11 किमी. की ऊँचाई तक ही सीमित है।

4.6 अरब वर्ष पुरानी धरती पर जीवन का उद्‌भव 3.4 से 3.1 अरब वर्ष पहले समुद्र में हुआ था। धरती पर जीवन 40 करोड़ वर्ष पहले आया। सौरमंडल में केवल पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है, जिस पर जीवन है। आज पृथ्वी हमारे कारण कई समस्याओं से ग्रस्त है। यदि इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो धरती का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

- बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण साँस लेना भी दुष्कर हो गया है।
- वायु प्रदूषण के कारण धरती की सुरक्षा परत ओजोन खतरे में पड़ चुकी है। 1980 में ओजोन में बना छेद 32.7 लाख वर्ग किलोमीटर था जो 2007 में बढ़कर 2.5 करोड़ वर्ग किलोमीटर हो गया है। ओजोन छेद इसी गति से बढ़ता रहा तो सन् 2054 तक पृथ्वी का सुरक्षा कवच ओजोन खत्म हो जायेगा।
- जल प्रदूषण के कारण जलीय जीव समाप्त होते जा रहे हैं।
- धरती का बढ़ता तापमान जीवन के लिए खतरा बन चुका है। पृथ्वी जल रही है।
- जंगलों के कटने और जंगली जानवरों के शिकार के कारण कई प्रजातियाँ खत्म होने के कगार पर हैं।
- जंगलों और पहाड़ों के कटने से वर्षा का औसत कम होता जा रहा है।
- शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं हो रहा है।

बढ़ रहे प्रदूषण, औद्योगिकरण, शहरीकरण और विलासिता युक्त जीवन से पृथ्वी पर खतरा मंडरा रहा है। पृथ्वी को बचाने के लिए हमें पर्यावरण संतुलन की दिशा में तुरंत प्रभाव से आपसी सहयोग और संयम बरतते हुए सकारात्मक पहल करनी होगी। पर्यावरण हमारे अस्तित्व एवं भविष्य से जुड़ा अहम बिन्दु है जिसे बचाने के लिए आम आदमी को ऊर्जा, पानी, पेड़, जंगल, पहाड़, नदी के संरक्षण की आदत डालनी होगी। पृथ्वी को बचाने की दिशा में हम संकल्प करें

- वायु, जल, मृदा को प्रदूषित नहीं करें।
- जंगलों, पहाड़ों, हरे-भरे पेड़ों को नहीं काटें। जलचर, जंगली जानवरों का शिकार नहीं करें।
- कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस उत्सर्जन को कम कर ओजोन सुरक्षा कवच को बचाएँ।
- प्रकृति प्रदत्त सम्पदाओं (जल-खनिज व जंगल आदि) का अत्यधिक दोहन नहीं करें।
- कूड़ा करकट, प्लास्टिक, अपशिष्ट पदार्थ निर्धारित स्थान पर ही फेंकें।

• डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अस्पृश्यता

आचार्य तुलसी

जातीयता का गर्व जितना बुरा है, हीन भावना भी उससे कम बुरी नहीं है। अपने आपको हीन, दीन और अस्तित्वहीन मानने वाले लोग अनचाहे ही जातीयता की भावना को प्रोत्साहन देते हैं। ऐसे लोगों को विश्वास में लेकर समझाने से ही उन्हें अपने अस्तित्व का बोध हो सकेगा। भारत के इतिहास में वह दिन सर्वाधिक स्मरणीय होगा, जब यहाँ की जनता अस्पृश्यता जैसी बेबुनियादी भित्ति को हटा कर भ्रातृत्व-भाव के आकाश में मुक्त विहार करेगी।

सदियों पार से चलकर आने वाला धर्म, कला, संस्कृति, साहित्य और संगीत व्यक्ति एवं समाज में संक्रान्त होता है, वैसे ही कुछ अवांछित संस्कार भी आगे से आगे पनपते रहते हैं। अस्पृश्यता की भावना भी एक ऐसा ही संस्कार है, जो चाहे अनचाहे विकसित और पल्लवित हुआ है। मनुष्य 'मनुष्य' को अस्पृश्य माने, यह किस विकृत दिमाग की उपज है? शोध का विषय है।

बुराई अस्पृश्य हो सकती है, गंदगी अस्पृश्य हो सकती है, बीमारी अस्पृश्य हो सकती है, पर मनुष्य भी अस्पृश्य होता है, यह बात समझ में नहीं आती। वह मनुष्य, जो बुरा नहीं, गंदा नहीं, बीमार नहीं, फिर भी वह अस्पृश्य है, क्योंकि वह अमुक कुल में जन्मा है, क्योंकि उसका संबंध अमुक जाति से है! क्या कुल और जाति में पैदा होना भी किसी के हाथ की बात है?

महाभारत का कर्ण जब जाति और कुल के नाम से प्रताड़ित हुआ तो उसके भीतर सोया हुआ पुरुषार्थ जाग उठा। जातिवाद के पक्षधरों को ललकारते हुए उसने कहा

''सूतो वा सूत्रपुत्रो वा, यो वा को वा भवाम्यहम्।

देवायत्तं कुले जन्म, मयायत्तं तु पौरुषम्।।

''मैं सारथी हूँ, सारथी का बेटा हूँ या और कुछ हूँ, इससे क्या होना है? किसी कुल में जन्म लेना भाग्य के अधीन है। मेरे अधीन है मेरा अपना पुरुषार्थ। कुल और जाति के आधार पर मुझे अपमानित करने वाले मेरा पुरुषार्थ तो देखें।''

जाति और कुल के आधार पर किसी व्यक्ति को हीन या अस्पृश्य मानने की बीमारी इस युग की देन नहीं है। इसका सम्बन्ध उस समय से है, जब वर्ण-व्यवस्था का युग था, जातिवाद को अपनाने का युग था। इसका मूल खोजना बहुत कठिन है। यह फैलते-फैलते इस युग तक पहुँच गई , इसे हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। इससे भी बुरी बात यह हुई कि यह बीमारी हर मजहब में संक्रान्त हो गई। अछूत की बीमारी छूत बनकर सबको लग गई। और तो क्या, जैन और बौद्ध भी, जो सदा से जातिवाद के खिलाफ थे, इसकी गिरफ्त में आ गए।

भगवान् महावीर ने जातिवाद के विरोध में मानवीय सत्य को उजागर करते हुए कहा था

''सक्खं खु दीसई तवो विसेसो।

न दीसई जाइविसेस कोई।''

''जाति का कोई वैशिष्ट्य नहीं है। तप ही विशिष्ट है। इस बात को सब प्रत्यक्ष देख रहे हैं।''

इसके बावजूद काल का प्रभाव बलवान हुआ और जैन धर्म के कुछ सम्प्रदायों के रोम-रोम में छुआछूत का भूत घुस गया।

कोई व्यक्ति किसी वर्ग में शादी-विवाह का संबंध करे या नहीं, साथ बैठ कर भोजन करे या नहीं, इस विषय में वह स्वतंत्र है किन्तु किसी व्यक्ति या वर्ग के प्रति घृणा प्रदर्शित करे, उसका तिरस्कार करे, क्या यह दुश्मनी की बुनियाद का पहला पत्थर नहीं है? क्या यह मानवीय मूल्यों की अवहेलना नहीं है?

इस युग में अस्पृश्यता के विरोध में सबसे पहली आवाज उठाई महात्मा गाँधी ने। अंतिम पंक्ति में खड़े वर्ग को आगे लाने के लिए उन्होंने खुले आम जो उद्घोषणा की, वह उनकी अहिंसा और अभय की ही परिणति थी। उनके बाद कई लोगों ने उस आवाज को दोहराया पर पीड़ा के साथ कहना पड़ता है कि वह आवाज ''आवाज'' तक ही सीमित रह गई, उसका क्रियात्मक रूप सामने नहीं आ सका।

आज भी कुछ जातियों के साथ बड़े अत्याचार हो रहे हैं। उनका स्पर्श नहीं करना, उनके साथ नहीं बैठना, उन्हें कुएँ से पानी नहीं भरने देना, उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं देना, और तो क्या, उनको जिन्दा जला देना, क्या यह मानवता का क्रूर मजाक नहीं है?

जातीय गर्व में अपने कर्त्तव्य को

भूल कर उस तथाकथित दलित वर्ग के साथ जो अत्याचार किए गए, क्या वे इन्सानियत के काबिल थे? जब धर्म के संदर्भ में भी अस्पृश्यता को उछाला गया तो उन लोगों ने बगावत कर दी। वे उस धर्म को जो उन्हें अन्य लोगों की तरह जीने का अधिकार भी नहीं देता, छोड़ कर दूसरे धर्म में चले गए। जब सामूहिक धर्म-परिवर्तन का क्रम शुरू हो गया, तब कहीं उन धर्माधिकारियों की आँखें खुली। पर यह सही तरीका नहीं है। भय और प्रतिक्रिया से मुक्त रह कर केवल मानवीय दृष्टि से अस्पृश्यता निवारण का प्रयत्न होना चाहिए।

अणुव्रत आंदोलन ने प्रारंभ से ही इस बात को उठाया। उठाया ही नहीं, उसे सक्रिय रूप में आगे बढ़ाया। हमारे साधु-साध्वियाँ उनके मोहल्ले में गए। उनके साथ सम्पर्क बढ़ाया। उनके बीच जाकर उपदेश दिया। उनके सम्मेलन बुलाए, शिविर लगाए और जैसे-तैसे उन्हें दुर्व्यसनों और बुराइयों की गिरफ्त से मुक्त करने और उनके प्रति फैली हुई घृणा मिटाने का प्रयत्न किया। भारतीय संस्कार-निर्माण-समिति का प्रारंभ भी इसी उद्देश्य से हुआ। यहाँ तक कि प्रसंग आने पर उनके घरों से भिक्षा भी ली। इन सब बिन्दुओं को सामने रख कर कहा जा सकता है कि हमने केवल अस्पृश्यता-निवारण की बात ही नहीं की, रचनात्मक काम करके भी दिखाया। अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से हमने दो काम किए

- सवर्ण लोगों की अहम् भावना मिटाने का प्रयत्न।
- दलित वर्ग के लोगों की हीन भावना को दूर करने का प्रयत्न।

मेरे अभिमत से जातीयता का गर्व जितना बुरा है, हीन भावना भी उससे कम बुरी नहीं है। अपने आपको हीन, दीन और अस्तित्वहीन मानने वाले लोग अनचाहे ही जातीयता की भावना को प्रोत्साहन देते हैं। ऐसे लोगों को विश्वास में लेकर समझाने से ही उन्हें अपने अस्तित्व का बोध हो सकेगा। भारत के इतिहास में वह दिन सर्वाधिक स्मरणीय होगा, जब यहाँ की जनता अस्पृश्यता जैसी बेबुनियादी भित्ति को हटा कर भ्रातृत्व-भाव के आकाश में मुक्त विहार करेगी ■

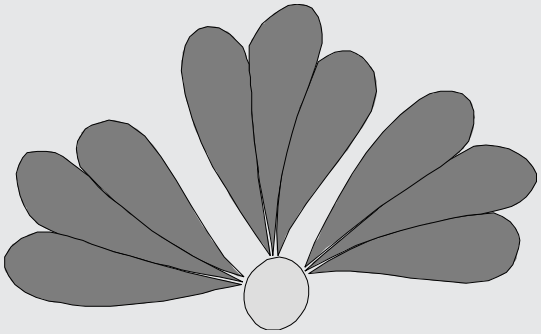

मानवता के फूल खिलाएं

ऐसी कविता रचें, देश में-
मानवता के फूल खिलाएं,
गंध, सुगंध और गरिमा से-
अपना यह उपवन भर जाए।

हमें संभलकर करनी होगी-
इस बगिया की देखा-भाली।
वह मधुबन वीरान हुआ है-
सोया रहता जिसका माली।

शब्द, शब्द में मानस घोलें।
सूर, कबीर, जायसी डोलें।
बहे काव्य की निर्मल गंगा,
द्वेष, दम्भ की गांठें खोलें।

कवि जीवन का कुशल चितेरा।
उजले-मैले रूप जिया है-
जगती को अमृत-रस बांटा,
विष का प्याला स्वयं पिया है।

बिना त्याग के कोई जीवन।
कब बनता अनमोल कहानी?
सूखे चाहे सौ, सौ सरिता।
अजर-अमर सुरसरि का पानी।

यदि मानवता जाग न पाई।
तो लिखने का अर्थ न होगा।
तिल, तिल राह दिखाने का श्रम,
कभी हमारा व्यर्थ न होगा।
पत्थर पर हम दूब उगाएं-
मानवता के फूल खिलाएं।

● **शंकर सुल्तानपुरी**
साहित्य वाटिका, 13/362, इंदिरा नगर, लखनऊ (उ.प्र.)

सेवा और नैतिकता

आचार्य महाप्रज्ञ

एक गोष्ठी का आयोजन था। अनेक व्यक्ति एकत्रित हुए। वहाँ यह प्रश्न उभरा कि दुनिया में सबसे अधिक मीठा क्या है? जितने व्यक्ति थे, सबने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। एक ने कहा, 'दही मधुर होता है।' दूसरे ने कहा, 'दही से भी मधुर मधु होता है।' तीसरे ने कहा, 'दाख मीठी होती है' और चौथे ने कहा, 'सबसे मीठी होती है चीनी।' अनेक विचार आए, किन्तु किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सका। अन्त में एक व्यक्ति ने कहा, 'पदार्थ की मधुरता के विषय में मतैक्य नहीं हो सकता। यह सर्वविदित तथ्य है कि जिसका मन जहाँ संलग्न हो जाता है, उसके लिए वही मधुर है, वही सबसे ज्यादा मीठा है।'

'दधि मधुरं मधु मधुरं, द्राक्षा मधुरा च शर्करा मधुरा।

तस्य तदेव हि मधुरं, यस्य मनो यत्र संलग्नम्।।

जो कहना था, वह सब कुछ इस समझदार व्यक्ति ने एक वाक्य में कह दिया कि जिसका मन जहाँ संलग्न है उसके लिए वही मधुर है।

विश्व का यह सर्वमान्य सिद्धांत है कि जिसका मन जहाँ संलग्न है उसके लिए वही मधुर है, अच्छा है। जिसका मन सेवा में संलग्न हो गया, उसके लिए सेवा से बढ़कर और कुछ भी नहीं है। जिसका मन और कहीं लग गया, उसके लिए वही सब कुछ है। मन का नियोजन, मन का व्यवस्थापन, मानसिक-शरीर का निर्माण जिस रूप में कर दिया, उसके लिए वह तन्मय और तदाकार बन जाता है।

सेवा के अनेक पहलू हैं। स्यादवाद की दृष्टि से कहा जा सकता है कि प्रत्येक पदार्थ के अनन्त पर्याय हैं। एक अक्षर, एक मात्रिका का वर्ण 'अ' इसके भी अनन्त पर्याय हैं। एक परमाणु के भी अनन्त पर्याय हैं। विश्व की बड़ी-से-बड़ी या छोटी-से-छोटी इकाई के भी अनन्त पर्याय हैं। सेवा और नैतिकता के भी अनन्त पहलू हैं, अनन्त पर्याय हैं। कुछेक पर्यायों की चर्चा ही सीमित समय में संभव हो सकती है। सारे आवरणों को हटाकर उन्हें अनावृत करना समय-सापेक्ष होता है।

अज्ञात का संसार बहुत बड़ा है। वह इतना बड़ा है कि उसका कभी भी अन्त नहीं आ सकता। किन्तु मनुष्य का यह सतत प्रयत्न रहा है कि वह अज्ञात को ज्ञात करे, जो नहीं जाना गया है, उसे जाने। जब अज्ञात ज्ञात होता है, तब अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। वैसा आनन्द किसी भी पदार्थ से नहीं होता।

सेवा एक कर्म है। मैं इसे अस्वाभाविक या बहुत ऊंचा नहीं मानता, क्योंकि जिसे ऊंचा सिद्धांत कहा जाए, वह काल्पनिक होता है। उसके लिए यथार्थ से हटकर कल्पना करनी पड़ती है। किन्तु जो नैसर्गिक है, स्वाभाविक है, उसके लिए बहुत बड़ी कल्पना की आवश्यकता नहीं होती। सेवा सहज और स्वाभाविक कर्म है। आचार्य उमास्वाति ने प्रत्येक पदार्थ के उपकार की चर्चा की है। चेतन और अचेतन सभी पदार्थों के उपकार की चर्चा की है समीक्षा प्रस्तुत की है। उन्होंने लिखा है परस्परोपग्रहो जीवानाम् जीवों का परस्पर उपग्रह सहयोग होता है। सेवा जहाँ होती है वहाँ दो होते हैं एक सेवा देने वाला और एक सेवा लेने वाला। द्वैध बना रहता है। वास्तव में वह सेवा सेवा नहीं होती, जहाँ द्वैध होता है। वहाँ और भी कुछ घटित होता है। जहाँ द्वैध रहेगा, वहाँ एक कर्त्ता और एक कर्म रहेगा, वहाँ सेवा की यथार्थता घटित नहीं होती। जब तक कर्म रहेगा, प्रतिफल की भावना बनी रहेगी, तब तक सेवा नहीं होगी।

पूछा गया दाता और याचक को कैसे पहचाना जाए? कवि ने कहा, 'दातृ-याचकयोर्भेदः कराभ्यामेव सूचितः' दाता और याचक की पहचान हाथ के विन्यास से ही समझ ली जाती है। दाता का हाथ ऊंचा और याचक का हाथ नीचा रहेगा। हाथ बताते हैं कि यह दाता है और यह याचक।

देने वाला और लेने वाला जहाँ यह होता है वहाँ सेवा की मूल भावना खण्डित हो जाती है। एक सहयोग लेने वाला और एक सहयोग देने वाला, जहाँ यह भावना होती है, वहाँ सेवा की प्रतिष्ठा कम हो जाती है। उसका रूप धुंधला हो जाता है। सेवा है परस्परता, जहाँ एक कर्त्ता और एक कर्म नहीं बनता, किन्तु दोनों समान धरातल पर खड़े होते हैं। वह उसका उपकार और वह उसका उपकारी, सहयोग देने वाला भी उपकृत होता है और सहयोग लेने

वाला भी उपकृत होता है। देने वाले में अहं नहीं होता और लेने वाले में हीनता की अनुभूति नहीं होती, वह है सेवा। वह है सेवा की प्रतिष्ठा। जहाँ अहं की अनुभूति और हीनता की अनुभूति दोनों का विलय हो जाता है वहाँ सेवा शब्द का प्रयोग उपयुक्त कहा जा सकता है।

इस विषय में बहुत बड़ी भ्रांति पलती जा रही है। जितनी भी 'समाज-सेवी' संस्थाएं हैं, वे जो कार्य कर रही हैं, उनके प्रति मेरे मन में कोई विरक्ति का भाव नहीं है, उनके प्रति विरोध की भावना भी नहीं है, किन्तु मैं यह बताना चाहता हूँ कि कहाँ एक जागतिक भ्रांति हो रही है, सामूहिक चेतना कहाँ भटक रही है।

सेवा के लिए दो साधन अपेक्षित होते हैं एक श्रम और दूसरा धन। श्रम तो व्यक्ति अपना दे सकता है, किन्तु धन कुछ लोगों से ही प्राप्त होता है। जिन लोगों ने धन का विशिष्ट अर्जन किया है, उनसे धन आता है। इसमें एक बात जान लेनी चाहिए कि जो धन सेवा के लिए आता है, वह आता है परस्परता को खण्डित कर। सेवा का पहला सूत्र है दूसरों के अधिकारों का अहनन। किन्तु जो लोग विशेष धन अर्जन करते हैं, वे अर्जन करते समय दोनों बातों का ध्यान नहीं रखते। मिल-मालिक करोड़ों रुपये कमाता है। फिर सेवा के लिए लाखों का दान भी करता है। किन्तु यह स्पष्ट है, यदि वह मिल-मजदूरों को उनका देय देता तो वह करोड़ों की आय नहीं कर सकता, लाखों का दान दे नहीं पाता। जिन मजदूरों ने अपना सारा श्रम उसमें नियोजित किया, पूंजी का उत्पादन किया, जिनके आधार पर मालिक को करोड़ों का अनुदान मिला, उनके प्रति अन्याय कर उसने करोड़ों की आय कर ली। मिल-मालिक ने अपने बुद्धि-बल से उन लोगों के हिस्सों को समेटकर बड़ा हिस्सा स्वयं ले लिया। अब वह उसमें से कुछेक हिस्सा सेवा और लोक-कल्याण कार्य में लगाता है। यह यथार्थ है। जब तक इस भ्रांति को नहीं मिटाया जाएगा तब तक सेवा की छोटी-छोटी प्रवृत्तियां चलती रहेंगी, पर मूलभूत समस्या हल नहीं होंगी, दुःखों का अंत नहीं होगा। आज समाज-सेवी संस्थाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे केवल पत्तों और फूलों पर ही ध्यान न दें, जड़ को भी देखें। पत्ते आते हैं और चले जाते हैं। बसंत आता है और पतझड़ भी आता है। बसंत और पतझड़ सदा आता रहेगा, पर समस्या का समाधान नहीं होगा। समस्या के समाधान के लिए हमें प्रयत्न करना होगा।

दो प्रकार की वृत्तियां होती हैं सिंहवृत्ति और श्वानवृत्ति। एक है सिंह की वृत्ति और एक है कुत्ते की वृत्ति।

जब आंतरिक दुनिया उपस्थित होती है, जब मन निर्मल होता है, तब निर्मल मन के द्वारा कुछ भी होता है, वह सचमुच सेवा ही होती है और कुछ भी नहीं होता। निर्मल मन के द्वारा असेवा कभी नहीं होती है। बड़ा चमत्कार है अपने आप को पा लेना, चेतना के आकाश में उड़ना और आत्म-चैतन्य के अथाह समुद्र को तैरना।' यदि सेवा के साथ तीन सूत्र 1. दूसरों के अधिकारों का अहनन, 2. मन की निर्मलता एवं 3. परस्परता ये तीन सूत्र जुड़े हुए हों तो सेवा दुनिया का सबसे बड़ा चमत्कार है।

बहुत पुराना रूपक है। कुत्ते की ओर ढेला फेंको वह मार खाकर भी ढेले को चाटने लग जाएगा। वह यह नहीं देखेगा कि ढेला कहाँ से आया है, किसने फेंका है। सिंह के प्रति गोली दागो, वह मार की परवाह नहीं करेगा। किन्तु यह देखेगा कि गोली कहाँ से आई है? किसने दागी है? वह उसी ओर लपकेगा। वह आक्रामक बनकर झपटेगा। कुत्ता वर्तमान को देखता है, आगे-पीछे नहीं देखता। सिंह आगे-पीछे देखता है, वर्तमान पर अधिक ध्यान नहीं देता।

इसी प्रकार हमारी भी दो वृत्तियां हैं। एक वह वृत्ति है, जो परिणाम में उलझ जाती है और एक वह वृत्ति है, जो प्रवृत्ति के मूल को पकड़ती है। समझदार व्यक्ति सिंह की वृत्ति को मानकर चलता है, मूल को खोजता है। साधारण व्यक्ति श्वान की वृत्ति को अपनाकर चलता है, मूल को नहीं खोजता। सेवा का मूल है हम सब सेवा में दिए जाने वाले सहयोग को दूसरी बात मानें और पहली बात यह मानें कि किसी के मानवीय अधिकारों का हनन न हो। इससे सेवा का महान् सूत्र हाथ लग जाता है और तब सेवा की सही प्रतिष्ठा हो जाती है।

वर्तमान का उपचार कोई स्थायी समाधान नहीं है। एक घाव को भरने का प्रयत्न करें और साथ-साथ हजारों घाव उत्पन्न करते चले जाएं यह सेवा का विकृत रूप है। नैतिकता के दो रूप हैं 1. मानवीय-संबंधों की व्यवस्था ठीक करने वाला। 2. चरित्र का विकास करने वाला।

ये दोनों बातें नैतिकता के साथ जुड़ी हुई हैं। सेवा करने वाला नैतिक होगा ही, होना ही चाहिए। अपने तथा दूसरों के विकास का प्रयत्न न हो और केवल बाढ़ के समय, अकाल के समय या ऐसे ही किसी उत्पीड़न के समय

सहयोग दें, उपकार करें, यह एक बात है। इसका मैं खंडन नहीं करता। इसे मैं बुरा भी नहीं मानता। किन्तु सहयोग के साथ कितनी बातें जुड़ी होती हैं। उनकी उपेक्षा नहीं करें। सहयोग के साथ एक महत्त्वपूर्ण बात जुड़ी होती है कि सहयोग करने वाला स्वयं का चरित्र ऊंचा रखे और सहयोग लेने वाले के चरित्र को ऊंचा उठाने का सद् प्रयत्न करे।

तीसरी बात यह है कि सेवा करने का अधिकार उस व्यक्ति को होता है जिसका मन निर्मल हो। जिसका मन कलुषित है वह सेवा कर नहीं सकता। यदि वह सेवा के क्षेत्र में पदार्पण करेगा तो मिथ्या धारणाओं का पोषण करेगा और अहं को विकसित करेगा। वह पूजा, प्रतिष्ठा आदि को मिथ्या धारणाओं का पोषण करेगा और अहं को विकसित करेगा। वह पूजा, प्रतिष्ठा आदि को उसके साथ जोड़ देगा। जिस सेवाभावी में मन की निर्मलता होगी, वह जो भी करेगा वह सेवा होगी।

हमें द्विजन्मा होना चाहिए। हमारा एक जन्म होता है माता के गर्भ से, तब बाहरी दुनिया सामने आती है। दूसरा जन्म होना चाहिए भीतर में, तब भीतरी दुनिया सामने आती है। हमें द्विज होना चाहिए। मुनि द्विजन्मा होता है। ब्राह्मण भी द्विजन्मा होता है। प्रत्येक व्यक्ति को द्विजन्मा होना चाहिए एक जन्म माता के गर्भ से और एक जन्म अपने आप में, अपने भीतर में। जो अपने आप में जन्म लेता है उसके सामने दूसरी दुनिया उपस्थित होती है। जब आंतरिक दुनिया उपस्थित होती है, जब मन निर्मल होता है, तब निर्मल मन के द्वारा कुछ भी होता है, वह सचमुच सेवा ही होती है और कुछ भी नहीं होता। निर्मल मन के द्वारा असेवा कभी नहीं होती है।

सेवा और नैतिकता के संबंध में मैंने जो कुछ कहा है, वह मेरी स्वतंत्र धारणा है। सेवा को चमत्कार माना जाता है। इस चमत्कार को हम स्वाभाविक मानें, अस्वाभाविक न मानें। कुछ साधक परस्पर बातें कर रहे थे। एक ने कहा, 'मैं आकाश में उड़ सकता हूँ।' दूसरे ने कहा, 'मैं पानी पर चल सकता हूँ।' तीसरे साधक ने कहा, 'इन दोनों क्रियाओं में कोई चमत्कार नहीं है। पक्षी भी आकाश में उड़ते हैं और मछली भी पानी में तैरती है। आकाश में उड़ना और पानी पर चलना चमत्कार नहीं है। बड़ा चमत्कार है अपने आप को पा लेना, चेतना के आकाश में उड़ना और आत्म-चैतन्य के अथाह समुद्र को तैरना।'

यदि सेवा के साथ तीन सूत्र 1. दूसरों के अधिकारों का अहनन, 2. मन की निर्मलता एवं 3. परस्परता ये तीन सूत्र जुड़े हुए हों तो सेवा दुनिया का सबसे बड़ा चमत्कार है ■

राष्ट्र चिन्तन

◆ भारी राजकोषीय घाटे और लाखों करोड़ों की उधारी के बोझ तले दबे प्रणव मुखर्जी ने लोकसभा को बताया कि आने वाले दिनों में जल्द ही सब कुछ चुस्त-दुरुस्त होकर रहेगा। मानसून सामान्य रहने से कृषि जिंसों की पैदावार बढ़ेगी, लिहाजा खाद्य उत्पादों की महंगाई दर कम हो जाएगी। इसका सकारात्मक प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा और वह चालू वित्त वर्ष के दौरान 8.5 फीसदी के आंकड़े को छू लेगी। भावी परिदृश्य और सुधर गया है। इसकी वजह सामान्य मानसून की भविष्यवाणी है।

प्रणव मुखर्जी,
केन्द्रीय वित्तमंत्री

◆ भारत सरकार के एक महत्वपूर्ण फ्लैगशिप कार्यक्रम की तरह की एक विशेष योजना बननी चाहिए। दूरदराज के इलाकों में रहने वाले करोड़ों लोगों तक भारतीय रेल को पहुंचाने के लिए ''प्रधानमंत्री ग्राम रेल योजना'' जैसी कोई महत्वपूर्ण केन्द्रीय योजना बननी चाहिए, रेलवे विभाग में धन का कोई संकट न आने पाए। बहुत जल्द प्रधानमंत्री से इस संबंध में अनुरोध किया जायेगा। रेलवे निजीकरण के रास्ते पर नहीं है। रेलवे की जमीन को बेचे जाने का कोई सवाल ही नहीं उठता लेकिन रेलवे से जुड़े इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए निजी क्षेत्र के साथ मिलकर संसाधन जुटाने होंगे। पिछले रेल बजट में जो रेल-विजन 2020 दस्तावेज पेश किया था उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए 2020 तक लगभग 14 लाख करोड़ रुपये की भारी भरकम रकम की जरूरत है।

ममता बनर्जी,
केन्द्रीय रेल मंत्री

◆ अगले तीन वर्षों तक देश में बिजली संकट दूर हो जाएगा। जल्द ही केन्द्र ऊर्जा क्षेत्र में विकास की रणनीति तैयार कर इसके क्रियान्वयन पर जोर देगा। इस हेतु सभी राज्यों के ऊर्जा मंत्रियों और ऊर्जा सचिवों तथा विभाग से जुड़े सभी व्यक्तियों को इस संबंध में अवगत करवा दिया गया है।

सुशील कुमार शिंदे
केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री

संस्कृति

आखिरकार क्या सीख रहे हैं हमारे बच्चे

आशीष वशिष्ठ

आखिरकार क्या सीख रहे हैं हमारे बच्चे? यह प्रश्न पूरे समाज के सामने मुँह बाये खड़ा है। बच्चे हमारा भविष्य हैं इन्हीं के नाजुक कंधों पर भविष्य की जिम्मेदारी व भार आने वाला है। ऐसे में हमारी भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि हम यह जरूर जानें, देखें व समझें कि आखिरकार हमारे बच्चे क्या सीख रहे हैं।

उपभोगवादी संस्कृति की मार झेल रहा हमारा देश दिनों-दिन अपनी संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, रहन-सहन को भूलता जा रहा है। जिसका सबसे अधिक असर बच्चों पर पड़ रहा है। महानगरों व नगरों की बढ़ती भीड़ व मूलभूत सुविधाओं की कमी के कारण बच्चे अपने बचपन का आनंद भी नहीं उठा पा रहे हैं। देश में बच्चों की एक बहुत बड़ी जमात मनोरंजन के नाम पर टी.वी. देख कर अपनी शाम गुजारती है। जिनके पास साधन हैं वहाँ बच्चे टी.वी. के साथ साथ मोबाइल-गेम्स, वीडियो-गेम्स या सीडी, डीवीडी के माध्यम से कार्टून फिल्में देख कर अपना वक्त गुजारते हैं। टी.वी. सिनेमा के माध्यम से बच्चों का कोई ज्ञानवर्धन तो होता नहीं है। टी.वी. पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम विशेषकर डब की हुई कार्टून फिल्मों का बच्चों के मनोमस्तिष्क पर इतना गहरा असर पड़ता है कि बच्चे उन्हीं कार्टून चरित्रों की नकल करने लगे हैं और उन्हीं की भाषा भी बोलने लगे हैं। डब की गयी इन कार्टून फिल्मों की भाषा इतनी अशिष्ट व अमर्यादित है कि वह बच्चों को बदतमीज बना रही है। वहीं टी.वी. पर प्रसारित होने वाले अन्य कार्यक्रमों में बच्चों को हिंसा, उत्तेजना, यौन उन्मुक्तता, भोंडी व घटिया भाषा के संवाद ही सीखने को मिलते हैं। पिज्जा, बर्गर व कोल्ड ड्रिंक की खुराक खा रही यह नस्ल शरीर से तो हिन्दुस्तानी है लेकिन इनकी सोच, विचारधारा एवं हाव-भाव सब विदेशी होते जा रहे हैं।

दस वर्ष का आर्यन स्कूल से आते ही टी.वी. के सामने बैठ जाता था। मम्मी-पापा देर शाम को ऑफिस से घर लौटते थे। उन्हें पता ही नहीं चल पाता था कि स्कूल से आने के बाद आर्यन आखिरकार घर में अकेला क्या करता है? घर में काम करने वाली नौकरानी भी अपने कामों में मस्त रहती थी। एक दिन अचानक आर्यन के पाप को उसके कमरे में जाना पड़ा और पुस्तक अलमारी से कोई किताब ढूंढते हुए उन्हें कुछ सीडी एवं डीवीडी हाथ लगी। उन्हें कुछ शक हुआ वास्तव में वे फिल्मों की सीडी थी। कॉलेज के कुछ दोस्तों के जरिए या किसी और जरिए से आर्यन के पास ये सीडी पहुँची थी। अब आप ही सोचिए जब दस साल की कच्ची उम्र में बच्चे ब्लू फिल्म देखने लगेगा तो उसका क्या विकास होगा। ऐसे बच्चे में किसी महिला की इज्जत नहीं रह जाएगी, उनकी नजर में महिला से केवल एक ही रिश्ता रह जाएगा। बच्चों को ऐसे संस्कार मिलेंगे तो भविष्य के समाज की तस्वीर कैसी होगी? इसका अनुमान लगाया जा सकता है। आर्यन की ऐसी हरकतों से उसके अभिभावकों को काफी धक्का लगा। इस घटना ने उन्हें कुछ सोचने को मजबूर कर दिया कि आखिरकार उसकी परवरिश में कहाँ कमी रह गई है जो आज आर्यन इस रास्ते पर चल पड़ा है।

कमल की गली के लड़कों से किक्रेट खेलते समय कुछ कहा सुनी हो गई थी तो कमल ने उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया। अगले दिन कमल ने अपने कॉलेज के दस बारह दोस्तों को बुलाकर दोनों लड़कों की खूब पिटाई करवा दी उन्हें काफी चोटें आई। बात आगे बढ़ी तो बड़े बूढ़ों को बीच-बचाव के लिए आगे आना पड़ा। मामले की तह में जाने पर यह पता चला कि आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले कमल की कक्षा में साथ पढ़ने वाली एक लड़की से मित्रता थी। जिसे खेलने के दौरान हुई लड़ाई का रूप दे दिया गया था और बात बिगड़ने पर कॉलेज के दस-बारह दोस्तों को बुलाकर पिटाई करवाई थी। कमल ने उनको एक हजार रुपये दिये थे यह सब करने के लिए। पूरी घटना सुनने के बाद बड़े बूढ़ों के पैरों तले से जमीन खिसक गई थी।

ग्यारह वर्ष के मानव को दोस्तों के

साथ सिगरेट पीते देखकर उसके चाचा के पैरों तले से जमीन खिसक गई। चाचा ने भतीजे की हरकत के बारे में भैया भाभी को बताया तो मानो घर में भूचाल ही आ गया। माता-पिता के पूछने पर मानव ने सब कुछ बयां कर दिया। दोस्तों के बहकावे में आकर मानव को धूम्रपान की लत लग गई थी। मम्मी पापा व घर के अन्य सदस्यों के समझाने पर मानव को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने दुबारा ऐसी गलती न करने की तौबा कर ली।

बच्चे के चारों ओर जो भी घटित होता है और जो कुछ बच्चा अपने आस-पास के वातावरण से सीखता है कालांतर में वही संस्कार कहलाते हैं। समाज में धीरे-धीरे संयुक्त परिवार प्रणाली खत्म होती जा रही है। एकाकी परिवार का बढ़ता चलन समस्याओं को बढ़ा रहा है। जिसका सीधा असर बच्चों पर पड़ रहा है। मम्मी-पापा के नौकरीपेशा होने की सूरत में तो स्थिति और भी विकट हो जाती है। पिछले दो दशकों में एकाकी परिवार का चलन बड़ी तेजी से बढ़ा है। समाज में जीने के कानून कायदे बदल रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि हमारे सामाजिक ढांचे में तेजी से परिवर्तन आ रहा है, जिसका असर मासूम बच्चों पर पड़ रहा है। बर्गर-पिज्जा खाते, कोल्ड ड्रिंक पीते और मॉल्स में शापिंग करती नयी पीढ़ी के पास इतना समय नहीं है कि वे अपनी संस्कृति व इतिहास को पहचान सके। वो तो तेजी से बदलती दुनिया के साथ कदम से कदम व कंधे से कंधा मिलाकर चलने की होड़ में व्यस्त हैं उसे इस बात की परवाह कतई नहीं है कि इसके लिए क्या कीमत चुकानी पड़ रही है। वहीं माता-पिता व अभिभावाकों की भागदौड़ भरी जिंदगी व अतिव्यस्त जीवन शैली भी आग में घी का काम कर रही है। होना तो ये चाहिए कि माता-पिता व अभिभावक बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा वक्त गुजारें और बच्चों के जीवन में मूल्यों, आदर्शों व सिद्धांतों का संचार करें। लेकिन कड़वी सच्चाई यह है कि सब कुछ इसके विपरित हो रहा है।

बदलती सामाजिक स्थितियों का प्रभाव बच्चों के कच्चे परिपक्व मनोमस्तिष्क पर अधिक होता है। आज बच्चों के आदर्श बदल चुके हैं। उन्हें क्या पता कि इस राष्ट्र की नींव कैसे पड़ी। इसको स्वतंत्र कराने के लिए बुजुर्गों ने कितनी कुर्बानियां दी हैं। उन्हें तो आजाद आसमान व धरती मिली है उनकी दुनिया टी.वी. सिनेमा व मॉल्स के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी के चलते इन नन्हे-मुन्नों की भाषा, शैली, आचार व्यवहार, खान-पान, रहन-सहन, मान मर्यादा, संस्कार सब कुछ लगभग बदल ही चुका है। आदर्श पुरुष पाठ्य पुस्तकों का हिस्सा भर बन कर रह गए हैं। बच्चों के पास तो सोच का अभाव है और जिनकी यह जिम्मेदारी है कि वो बच्चों में संस्कारों के बीज बोएं वो अपने काम-धंधों में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें इतना होश भी नहीं है कि आने वाला कल कैसा होने वाला है। आज बच्चे हर वह काम सीख रहे हैं जिसे किसी जमाने में बुजुर्ग गलत कहा करते थे। लेकिन ये बदले जमाने का दस्तूर ही है कि आज सारी दुनिया उसी को सही भी मान रही है। जो कुछ इर्द-गिर्द हो रहा है बच्चे वही तो सीख रहे हैं। जब युवा व बड़े ही गलत रास्ते पर चल पड़े हैं तो बच्चे क्या सीखेंगे, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

अनुसंधानों में यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अधिक टी.वी. देखने वाले बच्चों का व्यवहार सामान्य नहीं रहता है। अधिक टी.वी. देखने की आदत बच्चों को हिंसक तो बनाती ही है। साथ ही उनके सोचने-समझने की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। लेकिन टी.वी. आज के बच्चों की वह जरूरत बन चुका है कि जिसके बिना उनका काम ही नहीं चलता है। माता-पिता व अभिभावक भी बच्चों को बहलाने के लिए टी.वी. का ही सहारा लेते हैं। आज बच्चों की सारी दुनिया टी.वी. के आगे-पीछे ही घूमती है। टी.वी. ने बच्चों को समय से पूर्व ही बड़ा कर दिया है और उनके जीवन पर टी.वी. पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की गहरी छाप पड़ रही है। विशेषकर कार्टून चैनल व रिएलटी शो बच्चों को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। टी.वी. के साथ-साथ बदलता सामाजिक ढांचा व सामाजिक तौर-तरीके बच्चों को प्रभावित कर रहे हैं। समय रहते हमें इस समस्या के बारे में सोचना होगा, क्योंकि इन्हीं नन्हे-मुन्नों पर हमारा भविष्य टिका है। बच्चे को एक जिम्मेदार व सभ्य नागरिक बनाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी तो है।

बी–96, इंदिरा नगर, लखनऊ–226016

आज बच्चों की सारी दुनिया टी.वी. के आगे पीछे ही घूमती है। टी.वी. ने बच्चों को समय से पूर्व ही बड़ा कर दिया है और उनके जीवन पर टी.वी. पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की गहरी छाप पड़ रही है। विशेषकर कार्टून चैनल व रिएलटी शो बच्चों को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। टी. वी. के साथ-साथ बदलता सामाजिक ढांचा व सामाजिक तौर-तरीके बच्चों को प्रभावित कर रहे हैं। समय रहते हमें इस समस्या के बारे में सोचना होगा, क्योंकि इन्हीं नन्हे-मुन्नों पर हमारा भविष्य टिका है। बच्चे को एक जिम्मेदार व सभ्य नागरिक बनाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी तो है।

विशिष्ट जनों की सुरक्षा

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

भारत को सामान्यतः गरीब और विकासशील देश के रूप में स्वीकार किया जाता है, लेकिन विशिष्टजनों की सुरक्षा पर किये जाने वाले व्यय की दृष्टि से भारत विश्वभर में अग्रगण्य है। जनप्रतिनिधि अपनी लोकप्रियता के आधार पर जनता से निर्वाचित होकर आते हैं और वे अपनी इस लोकप्रियता का बड़े गर्व और आत्मविश्वास के साथ वर्णन भी करते हैं। फिर भी न जाने क्यों और किन कारणों से वे अपने को हमेशा खतरे में महसूस करते हैं। इसी आधार पर वे अपने लिए विशेष सुरक्षा की मांग करते हैं। जनप्रतिनिधियों के लिए साधारण सुरक्षा स्वाभाविक और आवश्यक मानी जा सकती है, ताकि कोई असामाजिक तत्त्व अप्रत्याशित रूप में उन्हें हानि न पहुँचा सके। इस प्रकार की सुरक्षा प्रारंभ से ही उन्हें उपलब्ध भी थी। परन्तु 1984 में जब श्रीमती इन्दिरा गांधी की अपने ही घर में अपने ही सुरक्षाकर्मियों द्वारा हत्या कर दी गयी तब सभी जनप्रतिनिधि अकारण ही अपने को भी खतरे में महसूस करने लगे। सरकार भी इस दिशा में विचार करने के लिए विवश हुई। तब विशिष्ट जनों की सुरक्षा के लिए 1985 में आई.बी. के एक अंग के रूप में विशेष सुरक्षा ग्रुप का गठन किया गया, जिसमें उस समय केवल 200 सदस्य थे। सामान्यतः देश में इस संस्था के औचित्य को स्वीकार भी किया गया। उस समय विशेष सुरक्षा ग्रुप का मुख्य कार्यक्षेत्र केवल वर्तमान प्रधानमंत्री की सुरक्षा का था। 1991 में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या के बाद इसका दायरा बढ़ाकर सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों तक कर दिया गया। तब विशेष सुरक्षा ग्रुप के सदस्यों की संख्या भी बढ़कर तीन हजार तक हो गयी। 1991 में ही हुए संशोधन के अंतर्गत इस सुरक्षा के दायरे में वर्तमान तथा पूर्व प्रधानमंत्रियों के अतिरिक्त उनके परिजनों को भी सम्मिलित कर लिया गया। ये परिजन कहीं व्यक्तिगत कार्य से जाते हैं तो भी उनकी सुरक्षा का दायित्व विशेष सुरक्षा ग्रुप का ही रहता है।

1985 में गठित विशेष सुरक्षा ग्रुप के लिए विस्तृत कानून 1988 में बना था। उस समय इसका बजट केवल 8 करोड़ 58 लाख रुपए निर्धारित किया था। बाद में 1998 में यह बढ़कर लगभग 95 करोड़ रुपए हो गया। विशिष्ट जनों की सूची भी शनैः-शनैः लम्बी होती चली गयी, जिससे इन विशिष्ट जनों का सुरक्षा-व्यय भी अरबों-खरबों से भी बढ़कर इतना अधिक हो गया कि उसकी निश्चित गणना भी कठिन है। कारण यह है कि अब विशिष्ट जनों की सुरक्षा का दायित्व उनके कार्यक्षेत्र के अनुरूप कई विभागों में बंट गया। तदनुसार सुरक्षा का दायित्व भी अनेक संस्थाओं पर आ गया। विशिष्ट जनों के वर्ग के अनुरूप सुरक्षा के स्तर को भी चार भागों में बांट दिया गया। सबमें ऊपर जेड प्लस है, जिसमें 36 सुरक्षा अधिकारी, एक पायलट कार, एक एस्कॉर्ट कार, छह निजी सुरक्षा कर्मी, दो हैड कान्सटेबल तथा 12 कान्सटेबल होते हैं। इनमें वर्तमान तथा पूर्व प्रधानमंत्री और उनके परिजनों को दी जाने वाली विशेष सुरक्षा इससे अलग है। दूसरे क्रम पर जेड श्रेणी है, जिसमें 22 सुरक्षा अधिकारी, एक एस्कॉर्ट कार, तीन निजी सुरक्षा कर्मी, दो हैड कान्सटेबल तथा आठ कान्सटेबल होते हैं। तीसरे क्रम पर वाय श्रेणी में 11 सुरक्षा अधिकारी, दो निजी सुरक्षा अधिकारी, एक हैड कान्सटेबल तथा चार कान्सटेबल होते हैं। अंतिम एक्स श्रेणी है, जिसमें दो सुरक्षा अधिकारी तथा एक निजी सुरक्षा अधिकारी होते हैं। ये विशिष्टजन जब किसी राज्य में राजकीय या व्यक्तिगत कार्यों के लिए जाते हैं, तब उन पर की जाने वाली व्यवस्था में जो अधिकारी और पुलिसकर्मी उस राज्य सरकार द्वारा लगाये जाते हैं, वह इनसे अलग हैं। इस समय जेड प्लस में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, लालकृष्ण आडवाणी, नरेन्द्र मोदी, मुरली मनोहर जोशी, मुलायम सिंह यादव, फारूख अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला, जयललिता, मायावती, गुलाम नबी आजाद (सभी को अतिरिक्त विशेष सुरक्षा) लालू प्रसाद यादव, मुफ्ती मोहम्मद सईद, शिवराज पाटिल, रामविलास पासवान तथा चन्द्रबाबू नायडू सम्मिलित हैं। जेड श्रेणी में नटवर सिंह, सुरेश पचौरी, अरुण जेटली तथा नजमा हेपतुल्ला हैं। वाय श्रेणी में मुख्तार अब्बास नकवी तथा वरुण गांधी सम्मिलित हैं। विशिष्ट जन के दायरे में पूर्व गृहसचिव, पूर्व सी.बी.आई., प्रमुख पूर्व बी.एस.एफ. प्रमुख दिल्ली के पूर्व पुलिस कमिश्नर, विहिप नेता प्रवीण तोगडिया और आचार्य गिरिराज किशोर, उद्योगपति नारायण मूर्ति, रतन टाटा, अनिल अम्बानी और अजीज प्रेम सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त अनेक खिलाड़ियों और फिल्मी सितारों को भी समय-समय पर विशेष सुरक्षा प्रदान की जाती है। राजस्थान में इस प्रकार के लगभग 300 और छत्तीसगढ़ में 125 विशिष्टजन हैं। कुल मिलाकर देश में लगभग 13 हजार से भी अधिक विशिष्टजन हैं, जिनकी सेवा में लगभग 45 हजार जवान तैनात किये हुए हैं। हर वर्ष इस संख्या में वृद्धि ही होती है, कमी नहीं। देश में कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं, जिन्होंने उच्च पद पर रहते हुए भी अपने लिए किसी विशेष सुरक्षा व्यवस्था की मांग नहीं की, लेकिन ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम है। अधिकांश तो अपने लिए बड़ी से बड़ी श्रेणी की सुरक्षा व्यवस्था की कामना करते हैं। इस कामना के पीछे खतरे की आशंका कम और 'स्टेटस सिंबल' की भावना अधिक होती है। नवगठित लोकसभा के तो लगभग 300 सदस्यों ने अपने लिए

विशेष सुरक्षा की मांग की है। कोई नक्सलवादियों से आतंकित हैं, कोई माओवादियों से और कोई अपने ही राजनीतिक विरोधियों से। आश्चर्य तो तब होता है जब ऐसे जनप्रतिनिधि भी सुरक्षा की मांग करते हैं, जिनके विरुद्ध देश की अदालतों में अनेक अपराधिक मुकदमें दर्ज हैं, और जिनसे स्वयं देशवासी आतंकित रहते हैं।

4 फरवरी 1916 को जब भारत के तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड हार्डिंग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिलान्यास समारोह में आये थे तब उनकी सुरक्षा पर किये गए लम्बे-चौड़े व्यय पर प्रहार करते हुए महात्मा गांधी ने वाइसराय से कहा था कि 'विशेष सुरक्षा-कवच की मृतक समान जिन्दगी से बेहतर रास्ता यह है कि वे मर जाएं।' बाद में जब महात्मा गांधी ने 1930 में सम्पूर्ण स्वराज्य की मांग लेकर आंदोलन छेड़ा तो उन्होंने आंदोलन के अन्य कारणों के साथ ही एक कारण यह भी बतलाया कि 'ब्रिटिश हुकूमत विश्व की सबसे अधिक खर्चीली हुकूमत है।' अब विशेष सुरक्षा की मांग करने वाले हमारे जनप्रतिनिधि महात्मा गांधी की इन टिप्पणियों पर क्या कहेंगे, यह तो वही जानें। परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि विशेष सुरक्षा की मांग करने वालों में अधिकांश महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया या जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी और जनहित को सर्वोपरि मानने वाले नेताओं के समर्थक अैर भक्त हैं।'

जनप्रतिनिधियों की सुरक्षा-व्यवस्था से संबंधित नियमों में यह प्रावधान है कि समय-समय पर व्यवस्था का पुनर्निरीक्षण किया जाए और यह देखा जाए कि क्या उसमें किसी प्रकार के रद्दोबदल की आवश्यकता है? इसी प्रावधान के अंतर्गत पिछले दिनों जब केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने आवश्यक जांच पड़ताल की तो यह महसूस किया कि 200 से भी अधिक अति महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को अब अधिक खतरा नहीं रह गया है, इसलिए उनकी सुरक्षा की श्रेणी बदल कर उनके सुरक्षा-व्यय को कम किया जा सकता है? ज्यों ही यह जानकारी सम्बन्धित सांसदों तक पहुँची, उन्होंने संसद में हंगामा कर दिया। हंगामा करने वाले तथा सुरक्षा व्यवस्था को कम करने के विरोध में आवाज उठाने वाले सबसे अधिक वे लोग थे, जिन पर पिछले अनेक वर्षों से किसी प्रकार के खतरे की जानकारी नहीं मिली। फिर यह सुरक्षा-व्यवस्था समाप्त भी नहीं की जा रही थी, केवल सुरक्षा की श्रेणी बदल कर कम की जा रही थी। सदस्यों के इस दबाव से केन्द्र सरकार ने सुरक्षा-व्यवस्था को यथावत रखने की घोषणा कर दी। इस सुरक्षा व्यवस्था में उन एन.एस.जी. कमांडों की ऊर्जा भी व्यर्थ होती है, जिनकी आवश्यकता देश और आमजन के हित की सुरक्षा से निपटने में अधिक है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, न्यायाधीश या विशेष प्रकार के कठोर निर्णय लेने वाले नरेन्द्र मोदी जैसे व्यक्तियों को विशेष सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता समझ में आ सकती है, लेकिन मुलायम सिंह यादव, रामविलास पासवान, उमर अब्दुल्ला, चन्द्र बाबू नायडू, नटवर सिंह, जय ललिता, मुफ्ती मोहम्मद सईद अथवा लालू यादव जैसे व्यक्तियों के लिए तथा अन्य अविवादास्पद सामान्य जनप्रतिनिधियों के लिए विशेष सुरक्षा-व्यवस्था समझ में नहीं आती। यह भी उल्लेखनीय है कि इस समय देश में पुलिस बलों के जवानों की स्वीकृत संख्या 12 लाख 9904 है। जिसमें से एक लाख 91899 पद रिक्त हैं। शेष रहे लगभग 10 लाख 8 हजार जवानों में से 45 हजार स्थायी रूप से विशिष्ट जन की सेवा में लगा दिये जाते हैं तथा इससे लगभग दो गुना उनके आये दिन के दौरों की व्यवस्था में लगे रहते हैं। तब उस आम जनता की सुरक्षा का क्या होगा, जिसने उन जनप्रतिनिधियों को अपनी सुरक्षा के लिए चुनकर भेजा है। लगता है हमारे जन प्रतिनिधियों को उसकी सुरक्षा की कोई चिन्ता नहीं। संभवतः इसीलिए आये दिन आतंकवादी देश में निर्भीकता से आकर बम फोड़ देते हैं या अव्यवस्था फैलाने का अन्य कोई कांड करके आराम से चले जाते हैं। देश भर में अपराधों के बढ़ते ग्राफ के लिए भी एक सीमा तक यही व्यवस्था जिम्मेदार है, जिसके अंतर्गत तथाकथित विशिष्टजन की सुरक्षा सबसे अधिक आवश्यक समझी जाती है और आम जनता की सुरक्षा महत्त्वहीन हो जाती है। हमारे अधिकांश जनप्रतिनिधि अपने को जनता में अत्यधिक लोकप्रिय मानते हैं। फिर उन्हें अपनी सुरक्षा की इतनी चिंता क्यों है? जनता स्वयं उनकी रक्षा करने में सक्षम है। उनकी अपनी पार्टी और कार्यकर्ता भी यह कार्य करने में समर्थ हैं। अगर वे अपने किसी अवैधानिक और अनुचित कार्यों की वजह से अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं तो उसके लिए उन्हें स्वयं को सुधारना चाहिए। उसके लिए आम जनता की सुरक्षा खतरे में क्यों डाली जाए। यदि किसी कारणवश कोई राजनेता अपने राजनीतिक और कानून द्वारा निर्धारित कार्यों की वजह से खतरे में हैं तो निश्चित ही राज्य को उसकी सुरक्षा पर ध्यान देना होगा, लेकिन उसके परिजनों को भी सुरक्षा के इस दायरे में समेटना अनुचित होगा। भूतपूर्व विशिष्टजनों के लिए तो सेवानिवृति के उपरांत यह सुरक्षा-व्यवस्था दो से पाँच वर्ष से अधिक के लिए होनी ही नहीं चाहिए।

देशवासियों की सुरक्षा और उसके लिए उपलब्ध करवाये जाने वाले साधनों की दृष्टि से यह विषय गंभीर है और इसलिए हमें गंभीरता से ही इस विषय पर सोचना होगा। प्रत्येक विशिष्ट जन को यह बात भली भांति समझनी होगी कि सुरक्षा-व्यवस्था केवल सुरक्षा के लिए ही है, 'स्टेटस सिम्बल' के लिए नहीं। इसके लिए वे निजी संस्थाओं से निजी व्यय पर व्यवस्था कर सकते हैं। अधिकारियों द्वारा एकत्रित की गयी जानकारी के आधार पर अगर किसी व्यक्ति को विशेष सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है और फिर भी वह अपने लिए सुरक्षा की मांग करता है तो उसका संपूर्ण व्यय उस व्यक्ति से ही वसूल किया जाना चाहिए। इस कार्य के लिए अलग से व्यावसायिक आधार पर स्वतंत्र संगठन भी स्थापित किया जा सकता है।

10/611, मानसरोवर
जयपुर 302020 (राजस्थान)

क्या देश प्रगति कर रहा है?

सत्यनारायण भटनागर

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के पास एक दिव्य दृष्टि थी। उन्होंने भारत के स्वतंत्र होने के साथ जान लिया था कि आजादी के बाद सम्पन्नता-समृद्धि बढ़ेगी और इसके साथ ही नैतिक प्रश्नों के उठ खड़े होने का अवसर आयेगा। यदि सम्पन्नता और समृद्धि का आधार नैतिकता हो फिर अराजकता आ ही नहीं सकती। इसलिए 'अणुव्रत' आंदोलन का उन्होंने आह्वान किया। इसके लिए उन्होंने सारे देश में पदयात्रा कर अलख जगायी और अणुव्रत को आने वाले खतरों से पूर्व चेतावनी के रूप में प्रस्तुत किया। किन्तु हमारे राजनेताओं ने अपने स्वार्थवश इस ओर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने भ्रष्टाचार को विश्वव्यापी रोग बताते हुए इसे सत्ता का अनिवार्य आवश्यक तत्त्व तक घोषित कर दिया। फल यह हुआ कि आज सम्पूर्ण गणतंत्र आपराधिक राजनीति के कोढ़ से ग्रस्त है और राजनेताओं के स्वार्थ के कारण ही कोई समाधान नहीं मिल रहा।

जैसा हमने पहले कहा आजादी आने से सम्पन्नता समृद्धि बढ़ी है। देश ने प्रगति की है। आज उपभोक्तावादी समाज रचना कर हम विश्व के अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़े हैं। आज भारतीय डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति विश्व भर में छाए हुए हैं। हमारी आवाज दुनिया सुन रही है। समृद्धि की हालत यह है कि आज देश में 1.15 लाख अरबपति हैं। जिनकी गिनती 11 फीसदी की दर से बढ़ रही है। करोड़पति और लखपतियों की तो संख्या असंख्य है। यह सारी गणना मुट्ठीभर मात्र है। इसके बाद भी करोड़ों लोग गरीबी के दलदल में फंसे हुए हैं। न्याय मिल नहीं रहा है और अपराध दिन-दूने, रात-चौगने गति से बढ़ रहे हैं। नैतिक आधार न होने से यह स्थिति है। भारत में अपराध की गति क्या है? यह जानने के लिए कुछ शासकीय आंकड़े उपलब्ध हैं। ये वे आंकड़े हैं जो पुलिस स्टेशनों में दर्ज हैं। जो अपराध हुए और दर्ज न हुए उनका तो अनुमान ही किया जा सकता है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े कहते हैं कि भारत में

- **29 मिनट में एक बलात्कार होता है।**
- **19 मिनट में एक हत्या।**
- **23 मिनट में एक अपहरण।**
- **77 मिनट में एक दहेज हत्या।**
- **15 मिनट में बाल यौन शोषण।**
- **03 मिनट में कानून भंग।**
- **10 मिनट में धोखाधड़ी।**
- **प्रत्येक 2 घंटे में एक डकैती।**
- **09 मिनट में दंगें-फसाद**
- **02 मिनट में चोरी।**
- **05 मिनट में सम्पत्ति अपराध।**
- **35 मिनट में एक बच्चा अपराध का शिकार।**

उपरोक्त अपराधों को साधारण दृष्टि से भी अवलोकन करेंगे तो हम पाएंगे कि ये अपराध दो तरह के हैं। एक महिलाओं और बच्चों के प्रति जो देश के भविष्य हैं। बलात्कार, दहेज हत्या, बाल यौन शोषण, बच्चे अपराध के शिकार इसी श्रेणी में आएंगे, दूसरे धन-अर्जन के लिए इसमें धोखाधड़ी, डकैती, चौरी, प्रॉपर्टी अपराध, अपहरण सम्मिलित किए जा सकते हैं।

आर्थिक अपराध यह घोषित करते हैं कि हम अभी भी गरीब हैं और गरीबी हटाने की योजनाएं जमीनी स्तर पर असफल रही हैं। बेरोजगारी प्रतिवर्ष बढ़ रही है। इन दोनों तथ्यों से सरकार भी इन्कार नहीं कर सकती। दूसरे यह अपराध यह भी घोषणा करते हैं कि आर्थिक सम्पन्नता और जीवन यापन की समस्याओं के हल के लिए अपराधों के अतिरिक्त अन्य कोई सुगम मार्ग शेष नहीं बचा है। एक बात ध्यान देने की है कि नेशनल क्राइम ब्यूरो ने इन अपराधों में रिश्वत, आर्थिक घोटालों का कहीं उल्लेख नहीं किया है जिसका सम्बन्ध राजनेताओं और अफसरों से है। ये लाखों प्रकरण भी हमारी आर्थिक प्रगति की पोल खोलते हैं। अमीरी का सम्बन्ध केवल नगद धन और सम्पत्ति से ही नहीं है। हमारी मानसिकता से भी है। वास्तविक अमीर में संयम, संतुलन और विनम्रता के साथ परोपकार की वृद्धि का विकास होना चाहिए। किन्तु भारत के नवधनाढ्यों में यह प्रवृत्ति धन की बढ़ोत्तरी के साथ दिखाई नहीं दे रही। भारत में परोपकार के कामों में खर्च होने वाला धन सकल उत्पाद का मात्र 0.6 फीसदी है। अमेरिका में यह 2.2 और ब्रिटेन में 1.3 फीसदी है जबकि हमारी संस्कृति में दान और परोपकार का बड़ा भारी यशोगान है। इससे भी स्पष्ट है कि धन और सम्पत्ति वाले मुट्ठी भर अरबपति भी वास्तव में अमीर नहीं है।

हमारे देश के अमीर कार-बंगला, विवाह, फैशन आदि कामों में दिखावा कर अपनी अमीरी का अहंकार पालते हैं। उनमें मानवीय गुणों और परम्परागत संस्कारों का अभाव स्पष्ट दिखाई देता

है। यह वास्तव में प्रगति है ही नहीं। यह एक दिखावा है।

अपराधों की दूसरी श्रेणी में महिलाओं और बच्चों पर होने वाले अपराध हैं जो यह घोषित करते हैं कि हमारा देश अपनी मूल नैतिकता को छोड़ सैक्स प्रवृत्तियों की ओर आगे कदम बढ़ा रहा है। हमारे दूरदर्शन, सिनेमा विज्ञापन, महिलाओं की पत्रिकाओं में महिला के अंग-प्रत्यंग का प्रदर्शन समस्त शिष्टाचारों की ताक में रखकर किया जा रहा है और सब स्वीकार कर रहे हैं कि यह गलत हो रहा है, किन्तु हम मौन हैं और यह सब हो रहा है नारी स्वतंत्र व महिला सशक्तिकरण के नाम पर इसे उपभोक्ता संस्कृति कहा जा रहा है। सभी प्रमुख पदों पर महिलाएं विराजमान है फिर भी यह नग्न प्रदर्शन जारी है, जिसके कारण महिलाओं पर अत्याचार और अपराध बढ़ रहे हैं। ऐसा लगता है कि हम इसे मान्यता दे रहे हैं। ब्रिटेन की किंग्स्टन यूनिवर्सिटी में समाज शास्त्र के प्रोफेसर रान रॉबर्ट्स के अनुसार ''सैक्स से जुड़ी बातें हर जगह है। मध्यमवर्गीय लोग देह व्यापार के प्रति उदार हो रहे हैं। और इसे 'केरियर' बनाने के लिए एक अच्छा जरिया मानते हैं। आचरण सम्बन्धी सारी बातें बदल गई हैं'' विचार कीजिए कि भारत के लिए भी यही सच नहीं दिखाई दे रहा।

इस सत्यता पर ध्यान देना हो तो समाचार पत्रों को देखिए हमारे राजनेता, उच्च अधिकारी, डॉक्टर, शिक्षक इन अपराधों में उलझे दिखाई देंगे। गेरुए वस्त्र-धारी धर्म गुरु भी इन अपराधों में उलझे हैं। हमें शर्म आती है जब हम आन्ध्र प्रदेश के राजभवन के अत्यन्त वृद्ध राजनेता पर ऐसे ही संगीन आरोप सुनते हैं।

यह सब हमारे देश के शक्तिशाली बनकर उभरने की कहानी का एक पक्ष है। हमारे न्यायालयों में हजारों-लाखों नहीं करोड़ों प्रकरण न्याय का लम्बे समय से इन्तजार कर रहे हैं। कोई मार्ग नहीं दिखाई देता कि विधि के रास्ते कोई बदलाव आएगा। विधि के भरोसे न हम दहेज हत्या रोक पाए और न बाल विवाह। राज्यों का शासन सदा से ही भ्रष्टाचार, अपराध और षडयंत्रों से भरा रहा है। उस पर विश्वास कर सुधार की आशा व्यर्थ है।

एक मात्र मार्ग है हम संकल्प लें, व्रत धारण करें और नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन को रोकें। परिवारों में संस्कारों की शिक्षा दें और सामाजिक दबाव ऐसा बनाएं कि भ्रष्टाचारी, अपराधी मुँह छिपाए। केवल धन और सत्ता के कारण कोई आदर न पाए। त्याग और परोपकार के कारण ही, नैतिक मूल्यों के कारण ही सम्मान और श्रद्धा मिले तो ही देश की, प्रगति और विकास की यात्रा पूरी होगी। 'अणुव्रत' छोटे व्रत हैं पर वे 'अणु' की शक्ति, ऊर्जा रखते हैं। अभी भी समय है कि हम जागें, चेतें और घोषणा करें कि भारत अपने परम्परागत मूल्यों को त्यागेगा नहीं, तभी भारत शक्तिशाली बनकर उभरेगा।

2 एम.आई.जी. देवरा देवनारायण नगर, रतलाम (म.प्र.) 457001

भीख मांगने का हुनर उस्तादों से सीख!

भगवान दास ऐजाज़

फैला पूरे गांव में या रब कैसा रोग?
बग़लों में बैसाखियां, नाच रहे हैं लोग।।
रात-रात भर तू किसे ढूंढे लिये चिराग।
यहाँ कौन दूधों धुला कौन यहाँ बेदाग़?
बापूजी तस्वीर की ढीली हो गयी कील।
जज को अंधा कर रहा धोखेबाज़ वकील।।
पेश करो अंतिम गवाह दी जज ने आवाज।
अंधे ने पहचान ली कातिल की आवाज़।।
चोर भी मांगे मुआवज़ा ऐसा वक्त खराब।
कौआ बैठा डाल पे चोंच खिलौना दाब।।
बाल सुअर का आँख में सबके मुंह हराम।
दो-दो पैसे में बिकें भरी कचहरी राम।।
बहुत बचे हो राम जी बात लगेगी हेच।
तिनके गये कुटीर के दिये भक्त ने बेच।।
पल-पल पलता देखिये झूट, कपट, छल पाप।
थाने में सच बोल के फंस जाएंगे आप।।
दफतर थाना कोर्ट हो या कोई फुटपाथ।
तुम देखोगे हर जगह भीख मांगते हाथ।।
हमने देखी है मियां आँख में उगती ईख।
अफ्सर कैसे मांगता आँख दिखा कर भीख।।
उनको थानेदार ने समझाया है ठीक।
भीख मांगने का हुनर उस्तादों से सीख।।

टी–451, बलजीत नगर, नई दिल्ली–110008

नया मोड़ का अर्थ है जीवन दिशा का परिवर्तन। आडम्बर और कुरुढ़ियों के चक्रव्यूह को भेदकर संयम और सादगी की ओर अग्रसर होना। विषमता और शोषण के पंजे से समाज को मुक्त करना। *आचार्य तुलसी*

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए 'नया मोड़' आचार संहिता को पुनः प्रतिष्ठापित करें

आचार संहिता के संभावित प्रमुख बिन्दु

- **वैवाहिक एवं सामाजिक अवसरों पर आयोजित भोज में 21 तथा अल्पाहार में 11 से अधिक व्यंजन नहीं हों।**
- **वैवाहिक समारोह घर-आंगन अथवा सामाजिक स्थलों पर दिन में ही आयोजित हों।**
- **दहेज की मांग अथवा ठहराव नहीं हो।**
- **आडम्बर एवं प्रदर्शन पर प्रतिबंध हो।**
- **समारोह में उत्तेजक-मादक-नशीले पदार्थों का उपयोग वर्जित हो।**
- **पृथ्वी को बचाने के क्रम में आतिशबाजी पर प्रतिबंध रहे।**
- **उत्तेजक एवं भौंडे नाच-गानों का आयोजन नहीं हो।**
- **धार्मिक आयोजनों में भी सादगी बरती जाए।**

समाज की जर्जर व्यवस्थाओं को बदलकर ही स्वस्थ व्यक्ति और समाज का निर्माण संभव है। वैवाहिक अवसरों पर आडम्बर एवं फिजूलखर्ची नहीं हो, इसका ध्यान रखना होगा। *आचार्य महाप्रज्ञ*

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा

मिलावट के दरिन्दे

डॉ. विनोद गुप्ता

मिलावट करने वाले समाज और इंसानियत के दुश्मन हैं। जिन्हें केवल अपने मुनाफे की चिंता है, उपभोक्ता जाए भाड़ में। मिलावट के दरिन्दे धन कमाने की अंधी दौड़ में देश और समाज के साथ गद्दारी कर रहे हैं जिसे शासन, प्रशासन और नेता सभी देख रहे हैं, लेकिन सबकी आँखों पर पट्टी तथा मुंह पर ताले लगे हुए हैं।

मिलावट के इस युग में कोई भी चीज असली या शुद्ध मिलना मुश्किल है। या तो असली की आड़ में पूरा माल ही नकली होता है या फिर उसमें मिलावट की जाती है। बात चाहे डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की हो या खुली खाद्य सामग्री की। हर स्तर पर मिलावट है। दूध, घी, मावा, तेल, शक्कर, दाल, चावल, आटा, बेसन, हल्दी, मिर्च, काली मिर्च, धनिया, नमक, गरम मसाला, चाय-पत्ती, आदि खाद्य सामग्री हो या फिर जीवन रक्षक दवाएं सब कुछ नकली और मिलावटी। यहाँ तक कि खून में भी मिलावट हो रही है। कहीं नहीं है मिलावट का अंत।

खाद्य पदार्थों के अलावा जीवन रक्षक दवाइयां भी नकली आ रही हैं जो कि रोगी को ठीक करने की बजाय उसे मौत के मुंह में धकेल रही हैं। नकली दवाएं बनाने में हमारे यहाँ के लोग माहिर हैं। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन का अनुमान है कि 20 प्रतिशत दवाएं नकली बेची जा रही हैं।

इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है कि बाजार में खून भी नकली बिकने लगा है। कुछ समय पूर्व पुलिस ने एक लेबोरेटरी पर छापा मारकर नकली खून के पैकेट बरामद किए थे। जांच से यह बात भी पता चली है कि जानवरों के खून को भी इंसानों का खून बनाकर बेचा जाता है।

खाद्य निरीक्षण परीक्षण लेने की औपचारिकता मात्र करते हैं लेकिन कितनों में मिलावट साबित कर पाते हैं? कई खाद्य निरीक्षण और अधिकारी तो इतने भ्रष्ट हैं कि उनकी नाक के नीचे मिलावट का खेल खेला जा रहा है और वे तमाशा देखते रहते हैं। उन्हें तो हफ्ता वसूली से मतलब है। अधिकांश मामले रफादफा हो जाते हैं या अधिकारियों की मिलीभगत से छूट जाते हैं।

ऐसी बात भी नहीं है कि मिलावट खोर कभी पकड़े नहीं जाते हैं लेकिन ले-देकर छूट जाते हैं। इसलिए उन्हें पकड़े जाने का खौफ नहीं होता और फिर उन्हें किसी बड़े राजनेता या दल का सपोर्ट या संरक्षण मिला होता है।

मिलावट के विरुद्ध अनेक नियम हैं, लेकिन वे प्रभावी नहीं हैं। यही कारण है कि इन नियमों का किसी निर्माता या व्यापारी को खौफ नहीं है और न ही इससे बचने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेते हैं।

सिर्फ उपभोक्ता संरक्षण कानून बना देने मात्र से कुछ नहीं होता अधिकांश उपभोक्ताओं को तो इसकी जानकारी तक नहीं है और जिन्हें है, वे भी उदासीन हैं।

प्रायः देखा गया है कि मिलावट के प्रकरण में नागरिक अपनी जिम्मेदारी से छिटक जाते हैं और पूरा दोष प्रशासन पर मढ़ देते हैं। मिलावट का दंश तब तक दूर नहीं होगा जब तक कि देश का हर नागरिक अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करें।

मिलावटी वस्तुओं के सेवन के लिए उपभोक्ता स्वयं भी किसी हद तक जिम्मेदार हैं, क्योंकि वह अपने अधिकारों के प्रति उदासीन है। कोई भी वस्तु खरीदने से पहले हम यह विचार नहीं करते कि वह मिलावटी तो नहीं है कुछ उपभोक्ता तो यह मानकर चलते हैं कि आज के युग में शुद्ध वस्तु मिलती ही कहाँ है, इसलिए तो मिलती हैं उसी से काम चला लेते हैं यहाँ तक कि वे इसके विरुद्ध एकजुट होकर कभी आवाज नहीं उठाते। जिस तरह निर्माता, व्यापारी या विक्रेताओं के संघ या यूनियन होती है वैसे उपभोक्ताओं का कोई संगठन नहीं होता। एक अकेला उपभोक्ता मिलावट-खोरों के विरुद्ध जंग नहीं जीत सकता है।

जो भी व्यक्ति निर्माता या विक्रेता मिलावट करने का दोषी पाया जाए उसका लाइसेंस हमेशा के लिए निरस्त कर देना चाहिए। साथ ही इस बात की निगरानी भी रखनी जरूरी है कि कहीं वह किसी अन्य नाम से लाइसेंस तो नहीं ले रहा?

मिलावट-खोरों को आर्थिक दंड तो मिलना ही चाहिए, पर हर हाल में उन्हें कठोर कारावास की सजा भी मिलनी चाहिए। आर्थिक दंड की मिलावट-खोरों पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है इसलिए उन्हें अनिर्वाचित जेल भेजा जाए ताकि दूसरे मिलावटखोरों को भी सबक मिले। इसी प्रकार यदि वह अगली बार मिलावट करते हुए पकड़ा जाता है तो उसे आजन्म कारावास की सजा का प्रावधान होना चाहिए।

उपभोक्ताओं को जागरूक बनाने के लिए जन-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। विद्युत एवं मुद्रित संचार इस संबंध में जनता को जागरूक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सरकार को जागृत करें। समाज सेवी और स्वयं सेवी संगठनों को भी जन साधारण के हित में आगे आना चाहिए।

मिलावटखोर चाहे वह जिस धर्म, समाज वर्ग या संप्रदाय का हो उसका सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति या परिवार के साथ वैवाहिक रिश्ते न जोड़ें। प्रत्येक वस्तु चाहे वह खाद्य पदार्थ हो या दवाएं खरीदते समय उनका बिल अवश्य लेना चाहिए। इससे विक्रेता नकली या मिलावटी वस्तु बेचने के पहले दस बार सोचेगा।

43/2, सुदामा नगर, रामटेकरी
मंदसौर (म.प्र.) 458001

धन की बौछार करतीं गंदी बस्तियां

अंकुर पालीवाल

राजीव आवास योजना ऐसी पहली गृहयोजना है जो बस्ती निवासियों को संपत्ति के अधिकार प्रदान करती है। यह 2017 तक देश को झुग्गी मुक्त कर देने की योजना है और इसमें 10 लाख करोड़ रुपए के निवेश की संभावना है। वहीं मीडिया रिपोर्ट इशारा कर रही है कि इस योजना को धन कौन उपलब्ध कराएगा इसे लेकर मंत्रालयों में मतभेद है। राजीव आवास योजना अथवा 'रे' कहलाने वाली इस योजना के लिए केन्दीय आवास एवं शहरी-गरीबी निवारण मंत्रालय व योजना आयोग चाहते हैं कि इस हेतु निजी नियोजकों को आमंत्रित किया जाए या निजी सार्वजनिक भागीदारी (पीपीपी) मॉडल को अपनाया जाए। वित्त मंत्रालय चाहता है कि परियोजना लागत केन्द्र व राज्य सरकार वहन करें। वहीं सामाजिक कार्यकर्ता कम आय वर्ग के मकानों के निर्माण में निजी निवेशकों की भागीदारी का उनकी पूर्ववर्ती करतूतों के मद्देनजर विरोध कर रहे हैं।

बैंगलुरु के शोधार्थी विनय बेंडुर 90 के दशक में मुंबई में प्रचलित पीपीपी मॉडल का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि 'पीपीपी मॉडल न तो लोकतांत्रिक हैं और न ही जवाबदेह।' तत्कालीन झुग्गी पुनर्वास योजना की शुरुआत पाँच वर्षों में 40 लाख परिवारों को घर उपलब्ध करवाने हेतु की गयी थी। तब मुंबई में झुग्गी बस्तियों की आबादी 12 लाख थी। अब तक मात्र 85,000 परिवारों को घर उपलब्ध हो पाए हैं और इस दौरान आबादी पाँच गुना बढ़ गई है।

मुंबई की शहरी योजना और आवास के सलाहकार वी.के. पाठक का कहना है कि 'पीपीपी मॉडल का प्रयोग निम्न आय वर्ग समूह के लिए हर्गिज नहीं किया जाना चाहिए। निजी निवेशक इस क्षेत्र में तभी उतरते हैं कि जब इसमें प्रयुक्त होने वाली भूमि मूल्यवान हो और लाभ की सुनिश्चितता भी हो। मुंबई के ही 'घर बचाओ, घर बनाओ आंदोलन' के सिमप्रीत सिंह का कहना है 'धारावी के अनुभव से हमने यह सीखा कि गरीबों के पुनर्वास के नाम पर मूल्यवान भूमि को छीनकर निजी बिल्डरों की बजाय झुग्गीवासियों के लिए घर बनाने के, व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए हस्तांतरित कर दिया गया। निजी बिल्डर झुग्गीवासियों के लिए घर बनाने के बजाय उनका वर्तमान रहवास भी हड़प लेंगे।'

केन्द्रीय आवास मंत्रालय के निदेशक डी.पी.एस. नेगी के अनुसार निजी निवेशकों को शामिल किए जाने के संबंध में केन्द्र सरकार को स्पष्टता है। केन्द्र परियोजना की कुल लागत का अधिकतम 50 प्रतिशत योगदान देगा। बाकी का राज्य सरकार को पीपीपी के माध्यम से इकट्ठा करना होगा। मुंबई जैसे शहरों में तो केन्द्र का हिस्सा 40 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा। बाकी का भूमि को संसाधन के रूप में मानकर इकट्ठा किया जाए। मंत्रालय के अनुसार सन् 2012 में 2 करोड़ 65 लाख घरों की कमी होगी। इसमें 99 प्रतिशत कम आय वर्ग के लिए हैं। यह तब है जबकि जे.एन.एन.आर.यू.एम. एवं अन्य योजनाओं के माध्यम से कम लागत के 20 लाख से अधिक घरों का निर्माण हो चुका है। इसी के साथ 10 लाख अतिरिक्त मकान जे.एन.एन.आर.यू.एम. एवं अन्य योजनाओं के माध्यम से कम लागत के 20 लाख से अधिक घरों का निर्माण हो चुका है। इसी के साथ 10 लाख अतिरिक्त मकान जे.एन.एन.आर.यू.एम. एवं अन्य योजनाओं के माध्यम से कम लागत के 20 लाख से अधिक घरों का निर्माण हो चुका है। इसी के साथ 10 लाख अतिरिक्त मकान जे.एन.एन.आर.यू.एम. की लागत वहन कर सकने वाली गृह भागीदारी योजना के अंतर्गत पी.पी.पी. के अंतर्गत बनाए गए हैं।

'रे' किसलिए?

विशेषज्ञों की जिज्ञासा है कि जब इतनी सारी योजनाएं प्रचलन में हैं तो किसी नई योजना की आवश्यकता ही क्यों है? क्योंकि इन योजनाओं में भी 'रे' की ही तरह शहरी गरीबों को घर उपलब्ध कराने का प्रावधान है। इस पर नेगी का कहना है कि हमने वर्तमान में विद्यमान सभी गृह निर्माण योजनाओं को मिलाकर 'रे' को प्रारंभ किया है। केवल उन शहरों में जहाँ पूर्ववर्ती योजनाएं अभी भी कार्यशील हैं वहाँ वे पूर्ण होने तक चलती रहेंगी। वहीं दूसरी ओर दिल्ली स्थित स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर के विभागाध्यक्ष पी. एस.एन. राव का कहना है 'अनेक शहरों में शहरी गरीबों को मूलभूत सुविधाएं (बीयूएसपी) और अन्य गृह निर्माण परियोजनाओं के माध्यम से धन इकट्ठा कर कार्य किया जा रहा है। ऐसे में इन सबका 'रे' में समाहित करना

www.terapanthionfo.com

समझ से परे है। बीयूएसपी की अवधि 2012 में पूर्ण हो रही है और 'रे' 2017 तक चलेगा। वैसे मंत्रालय ने इसकी समय सीमा को लेकर कोई वायदा नहीं किया है। अगर समयबद्धता ही पैमाना है तो बीयूएसपी की सीमा बढ़ाई जा सकती थी या सरकार इसकी समाप्ति का इंतजार करती और उसके बाद नई योजना प्रारंभ करती।'

अमेरिका के पापुलेशन रेफरेंस ब्यूरो द्वारा 2006 में भारतीय शहरों में गंदी बस्तियों में रह रहे नागरिकों के आंकड़े जारी किए थे। इसके अनुसार मुंबई में 65 लाख, दिल्ली में 19 लाख, कोलकाता में 15 लाख, चैन्नई में 8 लाख और नागपुर में 7 लाख लोग गंदी बस्तियों में रह रहे हैं। वहीं मंत्रालय का कहना है कि बीयूएसपी के अंतर्गत किए गए वायदे पहले ही पूरे किए जा चुके हैं, अब तो सिर्फ उनकी निगरानी ही करना है। नेगी का कहना है कि बीयूएसपी 'रे' की शाखा के रूप में कार्य करती रहेगी, परंतु नई परियोजनाएं 'रे' के अंतर्गत ही स्वीकृत होगी। बीयूएसपी के अंतर्गत प्राप्त आंकड़े राज्य सरकारों द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं। 'रे' के अंतर्गत भी हम बायोमीट्रिक सर्वेक्षण करवाते रहेंगे और प्रत्येक लक्षित हितग्राही को परिचय पत्र भी जारी करेंगे।

क्या भारत गंदी बस्ती मुक्त हो पाएगा?

राव का कहना है कि वैचारिक दृष्टि से यह सोचना ही बेहूदा है कि भारतीय शहर गंदी बस्ती मुक्त हो पाएंगे। गंदी बस्ती निर्माण एक सतत प्रक्रिया है क्योंकि लोग तो शहरों में आते ही रहेंगे। परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम शहरी गरीबों के लिए रहने की बेहतर व्यवस्था ही न करें। एक अन्य विशेषज्ञ फाटक का कहना है कि आज की आवश्यकता झुग्गी मुक्त भारत नहीं बल्कि इन गंदी बस्तियों को पानी, सेनीटेशन व प्रभावकारी ठोस अपशिष्ट निवारण जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाकर रहने योग्य बनाने की है।

विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार गंदी बस्ती में रहने वालों को स्वयं गृह निर्माण के लिए मूलभूत सुविधाओं से युक्त भूमि उपलब्ध कराए। कम लागत के सामूहिक गृह निर्माण क्षेत्र में गंदी बस्ती निवासियों की भागीदारी अनिवार्य है। सिमप्रीत सिंह का कहना है कि 'बजाय मुफ्त घर देने के सरकार ऐसे घर बनाए जिनकी लागत कम आय वर्ग वाले दे सकें। इस प्रक्रिया में बस्ती के रहवासियों को शामिल करना चाहिए और उनसे श्रम के साथ आर्थिक योगदान देने को भी कहना चाहिए।

सप्रेस

दोहे

सत्य-न्याय की सीख

बिन प्रयत्न के क्या कभी, हो सकता उत्थान?
भाग्य-भरोसे जो रहे, पाता कष्ट महान।

पाप दुष्टता से भरे, मन में कितनी खोट!
कौन क्षमा तुमको करे? ईश्वर मारे चोट।

नर नारी अर्धांग हैं, दोनों एक समान;
दोनों उन्नति संग करें, यह है सच्चा ज्ञान।

बेसुध-से होकर पड़े, नशा घोर है पाप;
कलाकार या कवि रहे, नशा सदा ही शाप।

चेली चेला मूँडते, ये हैं गुरुघंटाल;
दुनिया को मूरख बना, उड़ा रहे हैं माल।

टाल रहे हैं मृत्यु को, खा-पी मन बहलाय;
किन्तु मृत्यु टलती नहीं, केवल मोक्ष उपाय।

पैसा सिर पर चढ़ गया, अब मानव है दास;
जिसके लक्ष्मी पास है, बन बैठा है खास।

चौकस रहना आपको, वरना बंटाधार;
लोग ताक में हैं यहाँ, जो कर देंगे वार।

थोड़े में कहना बहुत, यह कविता का काम;
गीत और संगीत से, जीवन है अभिराम।

● **मोहन उपाध्याय**
26/117, क्रिश्चियनगंज, विकासपुरी
अजमेर 305001 (राजस्थान)

कहानी

मन का बोझ

डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'

आज वह फिर कहीं से बच्चा उठा लाई थी। पहले भी कई बार ऐसे ही कभी सड़कों पर छोड़े गए, कभी कुंवारियों के दलालों से और कभी अस्पतालों से वह बच्चे उठा लाई थी। उसकी इस आदत से सभी परिचित थे। घर की औरतें गुपचुप बातें किया करतीं, किंतु खुलकर विरोध करने जैसा साहस कोई नहीं जुटा पाई थीं। सबको ताई सास का डर बना रहता था। पुरुषों में कोई भी नहीं चाहता था कि बच्चे उठा लाने जैसे घृणित कार्य की पुनरावृत्ति हो, किन्तु घर में धृतराष्ट्री शासन होने के कारण सबके अधरों पर मौन के ताले जड़े थे। बातें उठतीं और बिरानी हो जातीं।

जब कुन्ती फिर एक बच्चे को घर में लाई तो आंगन में ताई रोती हुई फैलने लगी ''कलमुही कहीं की, कितनी बार समझाया है कि ऐसा मत किया कर, किंतु हर बार न जाने कहाँ से बच्चा उठा लाती है। आँखों में शर्म नहीं। सारे घर की नाक कटवा दी।'' वह बनावटी ढंग से बकने लगी, ''हाय में जिऊं कि मर जाऊं, कहीं तो मुंह दिखाने लायक नहीं रखा इस डायन ने। सब तरफ आँखों में कांटे उगे हैं, किंतु यह है कि अपनी आदत से बाज ही नहीं आती। ऐसी बहू से तो अच्छा था मैं अपने बेटे को कुंवारा ही रख लेती।''

बाद में कमरे में आकर ताई ने ही कुन्ती के रूआँसे मन को देखकर कहा था ''इसमें दुखी होने की कौन बात है? बच्चा ही तो लायी है, किसी का घर तो नहीं उठा लाई, किसी का खून तो नहीं किया?'' कुन्ती और रूंआसी होने लगी तो धीरे से कहने लगी ''चिंता की कोई बात नहीं। तूने जो किया अपने लिए तो किया नहीं, सारे परिवार के लिए किया है। फिर डर कैसा? मैं जो तेरे साथ हूँ।''

मैं ताई की दोतरफा बातें सुन रहा था और इस नाटकीयता को बखूबी जानता-समझता था। वह कुन्ती भाभी को और भी सांत्वना देती, किन्तु मुझे देखकर वह सकपका गई और बात बदलते हुए कहने लगी, ''अब मैं क्या कर सकती? जिसका बच्चा है, उसे वापिस देकर आ और जरा भी लाज-शर्म है तो कुएं-बावड़ी में डूब मर ऐसे जीने से तो।'' और कुन्ती भाभी मन ही मन अपनी विजय पर छाती फुलाने लगी। मैं सोच रहा था, आखिर कुन्ती भाभी यह सब क्यों करती है? बांझ है तो घर के किसी भी बच्चे को गोद क्यों नहीं ले लेती? और बच्चे तो सभी के होते हैं, रख ले किसी भी बच्चे को अपने पास। कौन है जो बच्चे को मिल रहे प्यार और ममता के लिए मना करेगा? किन्तु वह ऐसा नहीं चाहेगी? उसे बच्चे की आवश्यकता नहीं, वह तो बच्चे को अपनी कोख से जन्मा घोषित करने की उत्कंठा लिए जी रही है और इसीलिए वह नौ माह तक पेट पर पट्टी बांधे रखती है और अचानक घोषणा करवा देती है कि उसने बच्चे को जन्म दिया है। वह अपनी कोख को पुजाना चाहती है भले ही इसके लिए उसे कुछ भी करना पड़े। पुण्य-पाप वह भी समझती है, किन्तु विवश है।

एक दिन वह भगवान से कह रही थी ''देव यदि संतान नहीं दे सकते, मत दो। किंतु एक प्रश्न है उसका समाधान तो दो। मेरे मन का बोझ कभी क्या हल्का होगा? मेरे हल्के पांव कभी क्या भारी होंगे?'' प्रश्न अनुत्तरित रहा तो वह असत्य को सत्य कर दिखाने के लिए छटपटाती रही।

कुन्ती मेरे चचेरे भाई की पत्नी और मेरी भाभी थी। वह मुझे यदा-कदा अपनी बातें बताती थी, किंतु मैं कुछ पूछने का साहस बटोर पाऊं, ऐसा अवसर कभी नहीं देती। एक बार किसी पड़ौसी ने कानों-कान बात पुलिस तक पहुँचा दी, किंतु बड़े घराने के कारण पुलिस दरवाजे से ही लौट गयी।

दो दिन पहले कुन्ती के अस्वस्थ होने की बात उभरी तो मैंने सहज जिज्ञासा से पूछा, क्या हुआ उसे? सुबह तो वह बिल्कुल ठीक थी।''

''बात यह है बेटा अब वह दोजीवा है'', ताई बोली ''तुझे पता नहीं तू चाचा बनने वाला है।'' मुझे याद आया मौसी मिलने आई तो माँ से कह रही थी, ''देख बहन तेरी कुन्ती बहू के लक्षण अच्छे नहीं हैं। ये सारे परिवार को खा जाएगी। जिसे पति की इज्जत का ध्यान नहीं, वह परिवार की कब सोचने लगी? वह अस्पतालों से नाजायज बच्चे खरीद लाती है और उन्हें ही अपना जाया बता देती है। आजकल तो

कुँवारियां और विधवाएं भी बच्चे जनती हैं। वे ही तो पैदा होते हैं तेरी कुन्ती की कोख से।''

माँ सुनकर सुन्न रह गई। न जाने कहाँ से घृणा की आड़ी-तिरछी रेखाएं खिंच गई मां के चेहरे पर, किन्तु निरूपाए रह गई। मौसी ने फिर कहा ''मुझे तो कुन्ती से कोई सरोकार नहीं। मेरी बला से वह कुछ भी करे। दुख तो यह है कि वह पाँच शिशुओं को मार चुकी है। ऐसे बच्चे मां के दूध के बिना जी नहीं पाते। दूसरा दुख यह है कि तेरे भी चार लड़कियां हैं और सभी के हाथ पीले करने हैं। क्या कुन्ती की बदनामी का असर नहीं पड़ेगा विवाहों पर? कौन लेगा बदनाम घर की बेटियां? और किसको अपने मुख पर कालिख पुतवानी है?''

मौसी चली गई। कुन्ती के पुत्र होने की सूचना से घर में हर्ष की लहर छा गई। औरतें जच्चा-बच्चा और शकुन के गीत गाने लगीं।

सभी परिजन आमेर की देवी के दर्शन के लिए गए हुए थे। घर में कुन्ती भाभी थी और मैं। नाटकीयता शुरू हुई। पहली आवाज मर्दाना थी ''अब जल्दी करो। बच्चा संभालो, हम चलें।''

दूसरी आवाज जनानी थी ''चलते हैं, लेन-देन तो हो जाए।'' भाभी नोट गिन रही थी। उसने पूछा 'क्या देना है? पाँच सौ दे दूँ?''

''पाँच सौ में तो बच्चा लगता नहीं। यह तो भरा-पूरा बच्चा है। देना है तो हजार दे दो। देखा नहीं कितनी दिक्कतों से मिला है यह बच्चा?'' और तभी मैंने दरवाजा खोल दिया। कई चेहरे मेरे दृष्टि पंथ में आ गए। घर की नोकरानी, भाभी का ममेरा भाई, मुहल्ले का दर्जी और सीता के हाथ में बच्चा था किसी वस्त्र में लिपटा हुआ। मैंने कुछ नहीं पूछा और सब बाहर निकल गए। कमरे में रह गए कुन्ती भाभी, बच्चा और मैं। भाभी भी लाज से दुखी और मौन थी, अकेली-सी।

कुछ देर की नीरवता के बाद भाभी कहने लगी ''मैं जानती हूँ बच्चे उठाना एक जघन्य अपराध है, किंतु मन को कैसे समझाऊं यह मानता ही नहीं? और फिर कुछ सोचते हुए उसने अपना निर्णय सुनाया ''अब मैंने सोच लिया है, मैं इसी शिशु को पालूंगी और वही मेरी संतान होगी।''

भाभी की बदलती मनःस्थिति की सोचते हुए मैंने भी उन्हें कुछ कहना उचित नहीं समझा और कमरे से बाहर निकल आया।

सोचता हूँ ईश्वर ने बांझ के मन के बोझ को दूना तो कर दिया, उसके हल्के पांवों को भारी क्यों नहीं किया? वह कभी तो मन को हल्का महसूस करती।

254, पदमावती कॉलोनी 'ए'
अजमेर रोड जयपुर 302019 (राज.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- अनपढ़ों के गांव में हर बच्चे के मन में शिक्षा की अलख जगाना अलग तरीके के जज्बे का नमूना है। बहरिया (इलाहाबाद) निवासी रामलखन यादव, राजेन्द्र सिंह राना या बाबा आम्टे की तरह प्रसिद्ध भले ही न हो, उनके अभियान का दायरा सीमित हो सकता है लेकिन असर कम नहीं है।

  पूर्व माध्यमिक विद्यालय सराय सुल्तानपुर में शिक्षक रामलखन ने 55 साल की उम्र में 55 विषयों से हाईस्कूल, इंटरमीडिएट की डिग्री हासिल की है। इस वर्ष दो विषयों से इंटर परीक्षा में शामिल हुए हैं। एक नजर में यह उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि भर लगती है लेकिन हकीकत यह है कि 55 विषयों की डिग्री के सहारे उन्होंने एक लाख से अधिक युवाओं में पढ़ाई के प्रति ललक जगाई, उन्हें शिक्षित होने का मकसद समझाया। ऐसा गांव जहाँ किसी समय पढ़ाई सबसे निम्न स्तर का काम था, वहाँ हर घर से बच्चे पढ़ने जाते हैं और वही बच्चे आसपास गांवों में जाकर बड़े-बुजुर्गों को शाम को अक्षर बोध कराते हैं। बेसिक शिक्षा विभाग की फाइलों में रामलखन यादव ऐसे विद्यालय के शिक्षक हैं, जहाँ हमेशा बच्चों की उपस्थिति 95 फीसदी से अधिक रहती है। वह हर विषय के विशेष जानकार हैं, अतः बच्चे उन्हीं से पढ़ना चाहते हैं।

- आधुनिकता की लकदक से कोसो दूर जौनपुर के सिंगटी गांव में आज तक बिजली नहीं पहुंची है। आजादी मिले 63 वर्ष हो रहे हैं। समस्याओं से जूझते तमाम गांव बदलाव के गवाह बने। लेकिन नहीं बदली तो सिंगटी गांव की तकदीर। सिकरारा विकास खंड के शाहपुर ग्राम सभा के सिंगटी गांव में रोशनी के लिए जद्दोजहद कायम है। करीब पांच सौ की आबादी वाला यह गांव अंधेरे की जद से दूर नहीं जा सका। आसपास के गांवों में चमचमाते बल्ब से आती रोशनी को देखते-देखते बच्चे बड़े हो गए और कई पीढ़ियां बुजुर्ग। लेकिन अंधेरा मलाल का सबब बना हुआ है। गांव वाले जितना कर सकते थे भाग-दौड़ की लेकिन नेताओं से लेकर विभाग के अधिकारियों ने बिजली समस्या के हल पर ध्यान नहीं दिया। गांव के सूर्य नाथ कहते हैं कि शिकायत तो कई साल से की जा रही है लेकिन आश्वासन ही मिलता है। जयराम कहते हैं कि हमारी तो किसी तरह गुजर हो गई अब बच्चों को बहुत तकलीफ होती है। बिजली न होने से बच्चों को पढ़ाई-लिखाई में असुविधा होती है। गर्मी में रात पंखा झलते ही गुजर जाती है।

सिलीगुड़ी-दार्जिलिंग यात्रा :1:

डॉ. महेन्द्र कर्णावट

25 फरवरी 2010। आज सुप्रज्ञ का जन्म दिवस है। समय तेजी से आगे बढ़ा और आज सुप्रज्ञ 31वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। शिलौंग की कड़कड़ाती ठंड में सुप्रज्ञ को याद कर उसके बचपन में खो जाता हूँ। रात्रि 10.30 पर गुवाहाटी से न्यू जलपाईगुड़ी के लिए मैं, निर्मल, बाबा एवं सम्पत सामसुखा रवाना होते हैं। बाबूभाई से हमारा साथ छूट रहा है। वे लगभग पन्द्रह दिनों बाद दिल्ली पहुँचेंगे। बचपन की यादों को बाबूभाई पुनः शिलौंग में रह सहेजना चाहते हैं। थकान होने से गहरी नींद आई और सुबह उठे तो देखा न्यू जलपाईगुड़ी आने वाला ही है। 26 फरवरी की प्रातः वेला में ठीक समय पर रेल न्यू जलपाईगुड़ी पहुँची। सिलीगुड़ी के पदाधिकारियों का पूरा दल भाई मदन मालू, सुरेन्द्र घोड़ावत, हनुमानमल मालू, अशोक जैन सहित हमारे स्वागत में स्टेशन पर मौजूद थे। गर्मजोशी से हम एक दूसरे से मिले और तेजी से सम्पतजी के अनुज कमल सामसुखा के घर की तरफ बढ़े। सुख सागर भवन पहुँच चाय के साथ ही अणुव्रत यात्रा के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी के अध्यक्ष हनुमानमल जैन को अणुव्रत साहित्य एवं प्रचारात्मक सामग्री भेंट की। प्रातः दस बजे हम सुखसागर से विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल दार्जिलिंग के लिए कार से रवाना हुए। कमल सामसुखा एवं उनकी धर्मपत्नी लीलादेवी ने हमें यह आभास ही नहीं होने दिया कि हम अपने घरों से इतनी दूरी पर हैं। उनका आत्मीयता भरा व्यवहार एवं विविध राजस्थानी-बंगाली व्यंजनों से युक्त अल्पाहार, भोजन का रस लेते हुए निर्मलभाई घर की याद में खो जाते और कहते-मित्रों का कितना आदर-सत्कार-प्रेम मिलता है महेन्द्र भाई यात्राओं में। आप तो यह बहुत देख चुके हैं अब मैं भी देख रहा हूँ। कमलजी की बिटिया प्रियंका को मैं बताता हूँ कि बाबा पांडेयजी, नेताजी सुभाषचंद बोस के सैनिक हैं, बर्मा सीमा पर अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी है और आज 86 वर्ष की अवस्था में हमारे साथ पूरे भारत में घूम रहे हैं अणुव्रत का झंडा हाथों में थामे। बिटिया प्रियंका ने तीन दिनों तक हमारी सार-सँभाल की।

26 फरवरी को प्रातः दस बजे कार से दार्जिलिंग के लिए प्रस्थान किया। सड़क के किनारे ही दार्जिलिंग जाने वाली छोटी रेल की पटरियाँ हैं। बीस

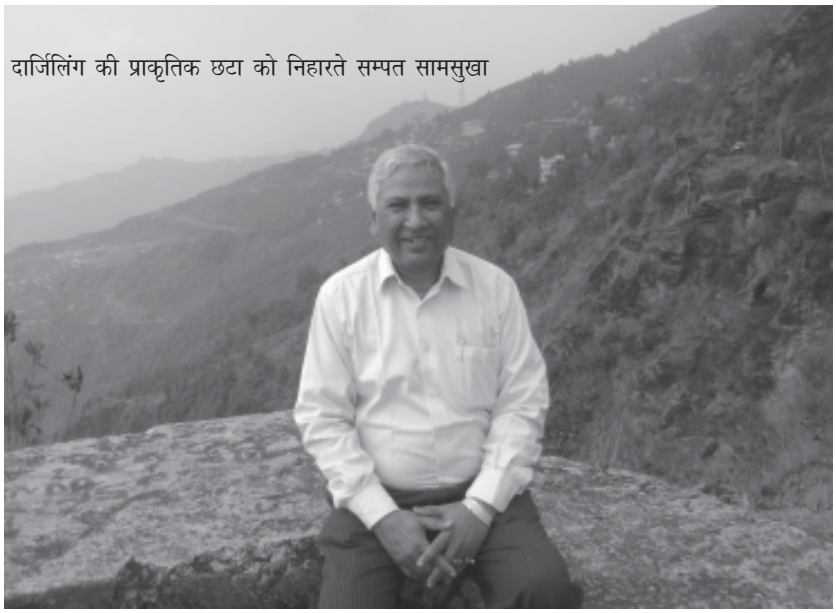
दार्जिलिंग की प्राकृतिक छटा को निहारते सम्पत सामसुखा

किलोमीटर बाद ही हिमालय पर्वत की चढ़ाई शुरु हो जाती है। दार्जिलिंग हिमालय रेल की स्थापना सन् 1883 में अंग्रेजी शासन ने की थी। पर्वतराज हिमालय पर जिस तरह से सड़क एवं रेल बिछाई गई है उसे देख डर भी लगता है पर दार्जिलिंग देखने का उत्साह बार-बार गहराते डर को दूर भी करता है। पूरा पहाड़ वन सम्पदा से आच्छादित है। छोटी-छोटी बस्तियाँ हैं। इन्हीं बस्तियों में निवास करती है गोरखा जाति जिन्होंने अपनी वीरता से भारतीय इतिहास को समृद्ध किया है। लगभग 110 किलोमीटर मार्ग के चारों तरफ गोरखालैण्ड के नारे लगे हुए हैं 'अहिंसा गणतंत्र गांधीवाद है आंदोलन का मूलमंत्र। भारत माँ के लिए मर मिटेंगे पर बंगाल में नहीं रहेंगे।' राष्ट्रीय राजमार्ग 55 पर हमारी कार निर्बाध गति से चढ़ाई चढ़ती हुई आगे बढ़ती है। आड़ा-टेढ़ा सर्पाकार दुर्गम मार्ग। कृशांक स्टेशन पर रुक चाय एवं मोमो का स्वाद लेते हैं। सामने से छोटी रेल गुजरती है। मात्र दो-तीन डिब्बे। अत्यंत धीमी गति से रेल आती-जाती है। चाय लेते ही बाबा एवं निर्मल भाई तरोताजा हो उठते हैं। लगभग 7500 फीट ऊँचाई पर 'घूम' है जो दुनिया का सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित रेलवे स्टेशन है। दार्जिलिंग, 'घूम' से भी आगे है पर उसकी ऊँचाई 7000 फीट ही है। हिमालय की इन वादियों पर चढ़ते हुए मैं कभी-कभी आँखें भी बंद कर लेता हूँ और याद आता है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह वाक्य तुम्हें कोई नहीं डरा सकता। जब तक कि तुम खुद डरना ना चाहो।

सम्पतजी कहते हैं इसी रास्ते से साधु-साध्वी-समणियाँ दार्जिलिंग पहुँचते हैं। मैं चौंक जाता हूँ इतना विकट मार्ग, भयंकर चढ़ाई और साधु-साध्वियों की पदयात्रा। मेरा प्रश्न होता है मार्ग में ठहरते कहाँ हैं? यहाँ तो चारों तरफ शराब का साम्राज्य है। सम्पतजी कहते हैं सिलीगुड़ी से पूरा दल साथ चलता है। मार्ग में रात्रि गुजारने के लिए स्थान नियत है। लोग कमरे खाली कर देते हैं और साधु-साध्वियों को पूरा आदर देते है। दार्जिलिंग में हमारी आस्था के लगभग पन्द्रह मकान हैं।

पूरे मार्ग पर मैं गोरखालैण्ड के नक्शे देखता हूँ, उन्हीं के साथ अंकित है गोरखालैण्ड हमारा अधिकार है। गोरखालैण्ड की आवाज को देख कर लगता है पश्चिम बंगाल की सरकार ने इस क्षेत्र के विकास की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया इसीलिये जनजाति बहुल अलग राज्य बनाने की आवाज बुलंद हो रही है। उत्साह, डर, आमोद-प्रमोद के घेरे में हम दोपहर दो बजे पहुँचते हैं विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल दार्जिलिंग। स्थानीय समाज ने होटल अम्बा पैलेस में हमारे आवास की व्यवस्था कर रखी थी। एन.सी.गोन्का रोड स्थित होटल अम्बा पैलेस पहुँच सम्पतजी अपने मामाभाई मोतीलाल गधैया को दूरभाष पर पहुँचने की सूचना देते हैं। मोतीभाई तत्काल आते हैं और राजस्थानी अंदाज में मिलते-बोलते हैं। अत्यंत सहज स्वभावी हैं मोतीभाई गधैया। दो घंटे से हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। गधैयाजी के घर उनकी बिटिया कोमल के हाथों दोपहर का भोजन लें हम दार्जिलिंग की मनोहरी प्राकृतिक छटा को आँखों में उतारने को निकल पड़ते हैं। जीव-जन्तुआलय, हिमालय पर्वतारोहण संस्थान, चौरास्ता चाय बाग, तेनजिंग नोरगे रॉक, राष्ट्रीय संग्रहालय, बतासिया लूप आदि स्थल सैलानियों के आकर्षक दर्शनीय स्थल है। अँधेरा गहरा जाने से हम सभी दर्शनीय स्थलों का अवलोकन नहीं कर सके। चौरास्ता पर खड़े होकर ठंडी बर्फीली हवा के साथ दार्जिलिंग का प्रकृति प्रदत्त नयनाभिराम दृश्य देखा। यहीं पर नेपाली लोककवि भानुप्रताप की प्रतिमा है जिन्होंने लोकभाषा में

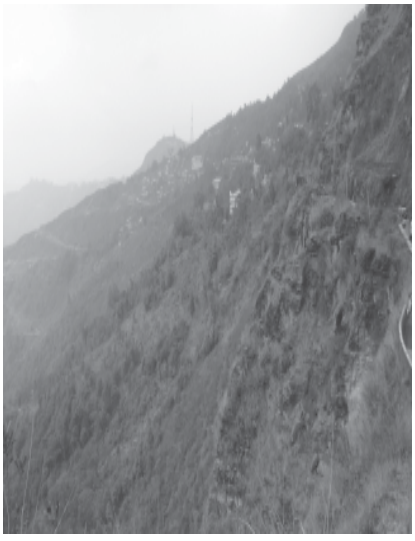

लोकजीवन को चित्रित किया था। सम्पत सामसुखा दार्जिलिंग के जन-जीवन से परिचित हैं। वे मुझे यहाँ के इतिहास और संस्कृति से अवगत कराते हैं।

देखते-देखते कोहरे की चादर में लिपट जाता है पूरा दार्जिलिंग। कुछ देर बाद कोहरा हटता है। दिखाई देता है खुला आकाश, हिमालय पर्वत की चोटियाँ और उसकी गोद में बसा हुआ दार्जिलिंग। चारों तरफ लड़कियों के झुंड। लड़कों के दल कम ही दिखाई देते है। यहाँ महिलाओं का प्रतिशत ज्यादा है। शराब, सिगरेट एवं अन्य मादक-नशीले पदार्थों का प्रचलन आम है। बालपीढ़ी भी इससे अछूती नहीं है। दार्जिलिंग की चाय पीने का मन करता है। महँगी चाय की विभिन्न किस्मे यहाँ दिखाई देती हैं। उबली हुई हरी चाय लेते हैं जिसमें न शक्कर और न ही दूध। इस चाय का अपना ही लुफ्त है। अँधेरा धीरे-धीरे गहराने लगता है।

रात्रि सात बजे मोतीलाल गधैया के व्यापारिक प्रतिष्ठान मूलचंद शुभकरण के यहाँ पहुँचे। चौक बाजार में स्थित यह दूकान 'ढुलो आईना' के नाम से दार्जिलिंग में प्रसिद्ध है। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष कमल भंसाली के घर पर रात्रि बैठक होती है। चौदह परिवारों में से पाँच परिवार उपस्थित थे। संघीय गतिविधियों की गति-अवगति ली गई। व्यसनमुक्ति की दिशा में समाज कार्य करें यह अनुरोध किया गया। अंतरंग समस्याओं पर भी चर्चा हुई। निर्मल भाई ने कहा दार्जिलिंग के प्रत्येक राजकीय कार्यालय एवं विद्यालयों में अणुव्रत पाक्षिक कैसे पहुँचे इस दिशा में स्थानीय समाज चिन्तन करें। मोती भाई एवं कमलभाई ने कहा दार्जिलिंग में हिन्दी का प्रचलन कम है अतः सभी जगह पत्रिकाएँ भेजने में लाभ नहीं है। बैठक में महावीर गर्ग एवं बाबूलाल जैन ने भी विचार रखे। मोतीभाई का विचार

मकानों से सटा छोटा रेल मार्ग

रहा कि केन्द्रीय पदाधिकारियों का मार्ग दर्शन निरंतर मिलना चाहिये। स्थानीय समाज की ओर से हमें दार्जिलिंग चाय के पैकेट भेंट किये गये। समाज के विचार मंथन में रात्रि के नौ बज चले। अल्पाहार के साथ बैठक सम्पन्न हुई। मोतीभाई हमें होटल तक छोड़ने आये और बोले अब रात्रि में बाहर मत जाइये। पर्यटकों के लिए देर रात तक घूमना ठीक नहीं है। हिमालय की वादियों में घूमते हुए बाबू भाई की कमी बहुत खली। पर उनकी भी अपनी मजबूरी थी।

निर्मल भाई ने कहा अब कुछ खाने की इच्छा हो रही है। मैंने कहा पूरा दार्जिलिंग बंद हो चुका है। अब तो कल ही कुछ मिलेगा। निर्मल भाई ने होटल अम्बा पेलेस के प्रबंधक से बात की। उसने बताया कि शायद पास वाले जैन भोजनालय में कुछ मिल जाए। निर्मल भोजनालय से चावल एवं दाल लाते है। दूध, दाल के साथ थोड़े-थोड़े चावल लें सभी सोने की तैयारी करते है। रात में बाबा की तबियत ऑक्सीजन कम होने से हल्की सी गड़बड़ाती है।

सवेरे पाँच बजे उठ एक-एक कर सभी को उठाता हूँ। नहाते समय लगा कि मैं बर्फ में नहा रहा हूँ। इतने ठंडे पानी में संभवतः मैंने पहली बार स्नान किया है। सात बजे मोती भाई अल्पाहार का टिफिन लेकर आये। उपमा-पराठे-मिठाई खा हमने पुनः सिलीगुड़ी की राह ली। मार्ग में बतासिया लूप में रुक 'युद्ध स्मारक' को देखा। छोटे रेल मार्ग के समीप ही युद्ध स्मारक बना है जहाँ हाथों में रायफल लिए गोरखा सैनिक की पूरी प्रतिमा है। युद्ध स्मारक पर खड़े हो मैं भारतीय सैनिकों को प्रणाम करता हूँ जिन्होंने देश की रक्षा के लिए स्वयं को होम कर दिया। बतासिया लूप से धीरे-धीरे नीचे उतरते है। हिमालय की दुर्गम बर्फीली पहाड़ियों पर स्थित दार्जिलिंग की सुंदरता एवं प्राकृतिक छटा अनुपम है। कलकत्ता से 668 किलोमीटर उत्तर में समुद्र की सतह से 7000 फुट की ऊँचाई पर अवस्थित है दार्जिलिंग। सदियों पहले यहाँ बौद्ध भिक्षुओं ने एक मठ की स्थापना की थी। मठ में रहने वाले लामाओं ने इस स्थान को दार्जिलिंग कहा जिसका शाब्दिक अर्थ है तूफानों की धरती। वर्षा की अधिकता होने से शस्य श्यामला पर्वतमालाएँ हमारे मन को आकर्षित करती हैं। दार्जिलिंग के प्रकृति प्रदत्त वरदान को आँखों से निहारते हुए हमारी कार तेजी से सिलीगुड़ी की ओर बढ़ती है। विकट सड़क मार्ग से गुजरते हुए भय बराबर बना रहा लेकिन ठंडी बयार और प्राकृतिक सम्पदा के दृश्य सभी आशंकाओं को दूर करते हुए हमें आगे बढ़ते रहो, लगे रहो का संदेश दे रही थी। ***क्रमशः***

युवा शक्ति मिटा सकती है भय और भूख

रामस्वरूप रावतसरे

भारत की 110 करोड़ की आबादी में 55 करोड़ युवा हैं और आने वाले समय में यानि 2015 तक यह संख्या बढ़कर 65 करोड़ से भी अधिक हो जायेगी ऐसा माना जा रहा है। हमारे देश में इतनी बड़ी ताकत होते हुए भी हम पिछड़े हैं, हमारे युवाओं की इस ताकत को खपाने और उसका प्रतिफल लेने के लिए संसाधन नहीं है। इतनी बड़ी ताकत सड़कों पर आवारगी करती फिर रही है या वह चोरी-डकैती, व्यभिचार में लिप्त है या शराब माफिया के इशारों पर नाच रही है। इस ताकत को संभाल कर सकारात्मक कार्यों में लगाने की जहमत कोई भी नहीं उठा रहा है। जिन हाथों में इस युवा ताकत को सहेज कर राष्ट्रहित में लगाने की अपेक्षा की जाती है, वे युवाओं को जात-पात और क्षेत्रवाद के आधार पर बांट कर उसे संघटनात्मक कार्यों में संलग्न नहीं कर विघटनात्मक कार्यों की ओर मोड़ रहे हैं ताकि उनके स्वार्थ पूर्ण होते रहें। जब भी चुनाव आते हैं राजनेता और राजनैतिक पार्टियां युवाओं को सुख-सुविधाओं का सब्ज बाग दिखाकर झण्डा लगा डण्डा पकड़ा देते हैं और उसे कहा जाता है कि सब कुछ उसका ही है, उसमें ही वह ताकत है जो इस झण्डे को ऊंचा रख सकती है। वे जो कुछ कर रहे हैं उसके लिये ही कर रहे हैं। युवा रात-दिन एक कर, भूखा-प्यासा रहकर इनके लिये काम करता है लेकिन जब माला पहनने का समय आता है, तो ये थुलथुल शरीर एवं जर्जर होती काया के नेता या शातिर अगुवा इन युवाओं को मदहोशी का प्याला पकड़ा कर खुद हिलती गर्दन को आगे कर देते हैं और विजयी माला पहन कर इन युवाओं के कंधों पर अंगड़ाइयां लेते सारा सुख भोगते हैं। आजादी के बाद से यही सब कुछ चलता आ रहा है।

इस बार के लोकसभा चुनावों में 82 युवा सांसद चुनकर आये, जिनमें 50 सांसदों का ताल्लुक राजनैतिक परिवारों से है। इनका राजनीति में पदार्पण युवराजों की तरह हुआ है। इन्हें राजनीति में लाने के पीछे इनके बुजुर्गों का खास मकसद है कि इन्हें प्राप्त सत्ता सुख इनके घर की दहलीज को लांघकर निकल नहीं जाय। आज हमारे यहाँ हालात इस प्रकार के हैं कि शैतान उपदेश दे रहे हैं अपराधी समाजशास्त्र की शान में कसीदे पढ़ रहे हैं। जब बहुमत अपराधी एवं शैतान प्रवृत्ति के लोगों का हो और राजनीति उनकी चेरी बन जाय तो सज्जन लोग अपराधियों की श्रेणी में आ ही जाते हैं और उन पर समाज व देश को तोड़ने के आरोप सरेआम होने लगते हैं शैतानों की पाण्डित्य के रूप में पूजा की जाने लगती है। इनके सान्निध्य में आये युवा क्या कर सकते हैं यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

बढ़ते उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद में युवाओं की भी भूख बढ़ी है युवा पल भर में सब कुछ पा लेना चाहता है। क्योंकि उसे सब्ज-बाग व जीवन की डगर ही इसी प्रकार की दिखायी गयी है। जब सब कुछ खुला-खुला सा हो तो युवा भी उसमें अटकता है, भटकता है और कभी लुटता है तो कभी लुटाता है। यही उम्र होती है जब युवा स्वाभिमान की तलाश में जल्दी आक्रोशित होने लगता है। इस आक्रोश के चलते युवा सारी व्यवस्था को ही दोष देने लगता है। वह अपने आक्रोश को विघटनकारी गतिविधियों का साक्षी बनते उसमें भागीदार बन जाता है। युवा के इस अटकाव व भटकाव का लाभ चतुर एवं शैतान लोग उठाते हैं। कई बार युवा अपनी ही नादानी के कारण अपनी ही गलतियों के कारण और यौवन के उन्माद में क्षणिक सुख पाने के लिए सब कुछ खो बैठता है और जिन्दगी भर दुख भोगने को मजबूर हो जाता है।

एक समय था जब युवा संयुक्त परिवार में रहते हुए शादी एवं बच्चे होने के बाद भी परिवार के बुजुर्गों के निर्देशन में चलते थे। अब संयुक्त परिवारों का विघटन सा होता जा रहा है। सभी 'मैं बीबी एवं बच्चों' तक की सोच में आकर अटक गये हैं सभी की सोच भौतिकवाद पर आकर अटक गई हैं और उनकी समाज शास्त्र की अवधारणा व्यवसायिकता का लबादा ओढ़े रैम्प पर कदम ताल करती नजर आती है। युवा प्रेरणा या अनुभवों से नसीहत लेना नहीं चाहता क्योंकि उसकी सोच भौतिकवाद का चश्मा धारण किये होती है और बुजुर्गों के पास युवाओं को नसीहत देने का समय नहीं है। या यों कहें कि दोनों की विचारण अलग-अलग होने के कारण एक नहीं हो पाती हैं। जिनके पास युवाओं को लेकर समय है उनका गणित उनके स्वार्थ तक ही जाता है। उसके बाद वह चाह कर भी उनके चंगुल से नहीं निकल सकता। जिन्दगी भर उनके लिये ही काम करते रहते हैं।

युवाओं ने जहाँ भी अपनी ताकत का उपयोग किया है वहाँ कोई भी काम नहीं रुका है। आज जो विश्वभर में प्रसिद्ध लोगों का नाम आ रहा है, उन्होंने किसी सहयोग के लिये कभी समय नहीं बरबाद किया, ना ही किसी राजनैतिक सहयोग की अपेक्षा की। बस दृढ़ निश्चय से शुरू हो गये जो आज तक नहीं रुके। उन्होंने स्वयं चल कर अपना रास्ता तय किया है। यही कुछ आज के युवाओं को करना होगा, उन्हें खुद ही चलना होगा, खाली सपनों को छोड़कर वास्तविकता की पृष्ठभूमि पर आना होगा। युवाओं का उठना ही भारत से भूख और बेरोजगारी का खातमा होना है पाश्चात्य संस्कृति और मौज-मस्ती, ऐशो-आराम को अपना कर उसमें संलिप्त हो जाना युवाओं की भूल है। यह समय ऐशो-आराम का नहीं है। इस समय शरीर से जितना पसीना निकाला जाय उतना कम है। युवाओं की कड़ी मेहनत ही भारत का नया सूर्य उदय करेगी जो अंधेरे घरों में उजाला बनकर फैलेगा और युवाओं की ताकत भय और भूख का नाश कर सुदृढ़ समाज का निर्माण करेगी। यह तभी संभव है जब वे स्वयं उठकर चल पड़ेंगे।

अग्रवाल हॉस्पिटल
मनोहरपुर दरवाजे के पास
शाहपुरा, जयपुर – 303103

परोपकार ही है धर्म का मूल

अशोक सहजानन्द

पिछले दिनों चित्रकूट की यात्रा पर जाने का अवसर मिला। दो प्रदेशों उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के मध्य बसा चित्रकूट अब शहर होता जा रहा है। मंदाकिनी की जलधारा जैसे अपनी सांसों को रोके हुए है। प्रदूषण, अतिक्रमण, वृक्षों की जगह इमारतें, जाने किस दिन उसकी रही-सही प्राकृतिक सुषमा को न लील जाएं।

चित्रकूट के साथ राम और तुलसीदास का नाम अभिन्न रूप से जुड़ा है। मंदाकिनी के रामघाट पर ही चंदन घिसते हुए तुलसीदास को रघुबीर ने दर्शन दिये थे। यद्यपि चित्रकूट शहर बनता जा रहा है तथापि रामघाट से कुछ किलोमीटर दूर कामदगिरि और उससे भी आगे गुप्त गोदावरी में प्राकृतिक सुषमा आज भी मुग्ध कर देती है।

चित्रकूट में ही है जानकी कुंड जिसके संबंध में जनश्रुति है कि सीताजी वहीं स्नान किया करती थी। जानकी कुंड का एक महत्त्व और है। जानकी कुंड चिकित्सालय, जहाँ प्रतिवर्ष पचास हजार से अधिक ग्रामीणजन आधुनिक चिकित्सा से लाभान्वित होते हैं।

इस चिकित्सालय का संचालन श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट करता है, जिसकी स्थापना संत श्री रणछोड़दासजी ने की थी। इसके पूर्व वर्ष 1950 में संत रणछोड़दास ने चित्रकूट में 'तारा नेत्र यज्ञ' का आयोजन किया था, जिसका उद्देश्य इस अभावग्रस्त साधनहीन क्षेत्र के मोतियाबिंद से ग्रस्त ग्रामीण लोगों को इस बीमारी के कारण हो जाने वाले अंधत्व से मुक्ति दिलवाना था। आज संपूर्ण देश के अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं इस तरह की सेवाओं द्वारा मोतियाबिंद ग्रस्त लोगों को संभावित अंधत्व से बचाने के लिए प्रयासरत हैं। इसका बीजारोपण संत रणछोड़दासजी के इसी 'तारा नेत्र यज्ञ' से प्रारंभ माना जाता है।

जानकी कुंड चिकित्सालय निस्संदेह एक प्रेरणा स्थल भी है, साथ ही हमारे तीर्थस्थलों के उन महंतों, संतों, मठाधीशों के लिए एक सबक भी जो आध्यात्मिकता का मुखौटा ओढ़कर भौतिक सुख-समृद्धि, विलास और यश का पूरा पूरा दोहन कर रहे हैं।

बहुत चाहकर भी श्री रणछोड़दास जी के अतीत का कोई विवरण नहीं मिल सका। जो पता लग सका वह यह कि वे गुजरात के थे, यहां आये और यहीं की ग्रामीण जनता के सुख और स्वास्थ्य के लिए समर्पित हो गये। आज उनके द्वारा स्थापित इस्ट नेत्र ज्योति लाभ, वस्त्र, अन्न, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य सुविधायें प्रदान कर जन साधारण की आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति में सहायक हो रहा है।

संत रणछोड़दास का मानना था कि परोपकार ही धर्म का मूल है। जो धन, मान, कीर्ति, बड़ाई की इच्छा रखता है वह भिखारी है। सच्चे साधु और योगी मांगते नहीं। वे सदैव देते हैं। साधुता मन से होती है, वेश से नहीं।

लेकिन आज कितने संतों-महंतों के मन में साधुता है? आज ऐसे अनेक हैं जिन पर हत्याओं के आरोप हैं। आपराधिक गतिविधियों में लिप्त हैं। करोड़ों की सम्पत्ति से सम्बन्धित अनेकों मुकदमे चल रहे हैं।

संत समाज के लिए यह गहन चिंता का विषय बनना चाहिए कि दागदार छवि वाला कोई व्यक्ति खुद को संत कहलाने में क्यों समर्थ है? वास्तव में संत समाज को ही नहीं, आम नागरिक को भी इस पर विचार करना होगा कि संत को वेशभूष्ज्ञा धारण करने या प्रभावशाली उपदेश देने मात्र से कोई व्यक्ति संत नहीं हो जाता।

एक ओर स्वर्गीय संत रणछोड़दासजी जैसे परोपकारी निस्पृह और त्यागी संत जिनका पुण्य स्मरण आज भी लोगों को प्रेरणा दे रहा है और दूसरी ओर संपत्ति के मोह से ग्रस्त अपराधिक अतीत रखने वाले संत। जन साधारण को ही तय करना है कि उनके लिए कौन वरेण्य है।

संपादक : सहज–आनन्द (त्रैमासिक)
मेघ प्रकाशन, 239, दरीबाकलां, चांदनी चौक, दिल्ली–110006

मनुष्यों में निवेश करो

जनार्दन शर्मा

फरिश्ते से बेहतर है, इन्सान बनना,
मगर इसमें लगती है, मेहनत ज्यादा।

''एक सुभाषित के अनुसार यदि आप एक साल की खुशी चाहते हैं, तो धान उगाइये और यदि जीवन भर की खुशी चाहते हैं, तो मनुष्य उगाइये।''

कहने का तात्पर्य है कि यदि हमें समाज में सफल होना है तो हमें अपने अच्छे मित्रों की, सहयोगी मनुष्यों की संख्या बढ़ानी चाहिए, मनुष्यों में निवेश इसी को कहते हैं। मित्र ही आपका स्थायी धन है।

एक कहावत है ''आप अपना दिन मुस्कान से मापिये, आंसु से नहीं। यदि आपके मित्रों व परिचय का क्षेत्र अच्छा है तो यह आपका अच्छा निवेश है। ऐसे में लोग एक-दूसरे को कह सकते हैं यदि वह चीज जिसकी तुम्हें जरूरत है, मेरे पास होती, तो वह तुम्हारी व तुम्हारे लिये होती।'' इसीलिए कहते हैं आपत्ति के समय सहयोगी ही सच्चा मित्र है।

और यही बात गोस्वामी तुलसीदासजी ने यों कही है

धीरज धरम मित्र अरू नारि।
आपत्त काल परखिये चारि।।

तथा सुग्रीव एवं श्रीराम की मित्रता में बताया कि किस प्रकार श्रीराम ने सुग्रीव का छिना हुआ राज्य व रुची को बाली का वध करके सुग्रीव को लौटाया तो सुग्रीव ने भी अपनी समस्त वानर सेना को समर्पित कर श्रीरामजी को लंका विजय में सहायता की।

देत लेत मन संक न धरहि,
बल अनुमान सदा हित करहि।

आप किसी का मित्र व सच्चे सहयोगी बनकर एक-दूसरे की तन-मन-धन से सहायता करते हैं। मित्र एक-दूसरे की कमियों को पूरा करते हैं, उसके आत्म विश्वास को ऊंचा उठाते हैं तथा उसे जीवन में आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं। द्वारिका के राजा श्रीकृष्ण एवं पोरबंदर निवासी गरीब ब्राह्मण सुदामा की मित्रता के कारण ही सुदामा गरीब से समृद्ध बना

देख सुदामा की दीन दशा,
करुणा करके करुणा निधि रोये।
पानी परात को हाथ लिये नहीं,
नैनन के जल से पग धोये।।

महाभारत जैसे युद्ध में अर्जुन की सहायता उनके मित्र व सखा श्रीकृष्ण ने ही की थी।

कहते हैं, एक अच्छे मित्र को अच्छा श्रोता होना चाहिए। आपका मित्र व्यस्त है तो उससे हफ्ते में एक बार बात अवश्य करें। उसकी सुनें, इससे उसका मनोबल एवं उत्साह बढ़ेगा। उसे निराश न होने दें।

दूसरों से सीखें

जीवन में आगे बढ़ने के लिये हमें दूसरे मनुष्यों से उनके जीवन में कठिनाइयों से पार पाने की कला सीखनी चाहिए। इस पथ पर गये बड़े लोगों के अनुभवों से भी सीखना चाहिये

तर्कोप्रतिष्ठः श्रुतियो विभिन्ना
नैकोमुनिर्यस्य वचन प्रमाणः।
धर्मस्य तत्वं महतो गुहायो
महाजनो येन गताः स पन्थाः।।

यानी तर्क भिन्न-भिन्न हैं, पुराण भी भिन्न हैं, सन्त मुनि कई हुए हैं, जिनके वचन प्रमाण हैं, धर्म के तत्त्व भी गहन हैं, किन्तु महान पुरुष जिस मार्ग पर गये हैं, वही पथ श्रेष्ठ और अनुकरणीय है। बड़े लोगों ने अनुभव के गलियारे में चलकर खट्टे-मीठे अनुभव किये हैं, अतः हमें उनके जीवन, उनकी सीख का चिंतन और विश्लेषण करके अपने बारे में उचित व सही निर्णय करना चाहिए।

अपने लक्ष्य पर केन्द्रित रहें

जीवन में हमारा एक 'दर्शन' आदर्श तथा मूल्य व मानदंड होता है, हमें उसी पर केन्द्रित रहकर अपना कार्य सतत रूप से करते रहना चाहिए। कहते हैं जो भी आज काम करते हैं, उसे निष्ठापूर्वक करते जाइये, हिम्मत मत हारिये, सफलता अवश्य मिलेगी

कदम चूम लेगी मंजिल आकर एक दिन
मुसाफिर अगर अपनी हिम्मत न हारे।

महान वैज्ञानिक थॉमस एडिसन से पूछा गया क्या आपके आविष्कार किसी उच्च प्रेरणा के परिणाम हैं, क्या आप सोते समय इन्हीं पर विचार करते रहते हैं? उन्होंने कहा मेरे सब आविष्कार मेरे निरंतर प्रयत्न के परिणाम हैं। जिस चीज को मैं शुरू करता हूँ, वह सदा मेरे मस्तिष्क में रहती हैं और जब तक वह सफल नहीं हो जाती मुझे शान्ति नहीं मिलती।

इसीलिए महान विद्वान एमर्सन ने कहा है

आप जो भी काम करना या सपना लेना चाहते हैं, उसे आरंभ कीजिए।
आपके साहस में प्रतिभा, बल व जादू है,
कार्य आरंभ कीजिये, वह पूरा हो जायेगा।

यही बात भारतीय मनीषी कहते हैं

चरैवेति, चरैवेति।

चलते रहिये, चलते रहिये।

सत्य सदन, पुष्कर – 305022

अब आदमी नहीं मिलेगा....?

ब्र.ना. कौशिक

दो दशक (1990) के बाद जहाँ भी गया 'सर' और 'पद' ही मिले। कतिपय प्रतिष्ठित सज्जनों से मिलना अब सीधे मिलना दुर्लभ है उनसे पहले निजी सचिव से मिलिए नाम पता परिचय और मिलने का 'प्रकरण' बताइए? एक कागज की पर्ची जाएगी जाते-जाते कह देती है प्रतीक्षा कर कहाँ? यह उत्तर नहीं मिलेगा? 'सुधीर' से मिलना है? निजी सचिव ने आक्रोश में कहा 'सर' नहीं लगा सकते? जिनसे मिलना है उनका 'पद' जानते हो? और इन्हीं से मिलना तब हुआ जब से सेवा निवृत्त हो गए कहने लगे इधर आएं तो मिल लिया करें?

दूसरे स्थान पर भी यही स्थिति थी पहले वाली गलती नहीं की 'सर' और 'पद' दोनों लगाए चार घण्टे प्रतीक्षा 'मीटिंग में है।'.... और एक जगह मिलना हुआ 'जितने भी हैं सभी को भेज दो'? दरवाजा खुला नमस्कार नमस्कार और निजी सचिव ने कहा जिसकी जो समस्या है 'जल्दी बता दें सचिवालय मंत्रीजी ने बुलाया है साहब फ्रैश होने चले गए - सबके सामने। सम्मानीय आयुक्त का उद्घाटन भाषण स्थानीय चैनल पर देखा - 'मैं विद्वानों की कद्र करता हूँ - आज भी अपने गुरुओं के चरण स्पर्श करता हूँ।' कहीं स्वयं को अध्येता माने बैठा मैं जो - 'जन और अधिकारी सम्बन्धों पर काफी लिख चुका था - सायं जा पहुँचा - एक घंटे की प्रतीक्षा के पश्चात् उत्तर आया किस प्रकरण में मिलना है? वाहक ने कहा 'शिष्टाचार' केवल पाँच मिनट - एक पुस्तक भेंट देनी है। वह पुनः आया कल दो से तीन के बीच ऑफिस में मिलने को कहा है? ठीक है यह पुस्तक दे देना 'प्रातः बाहर जाना है।' वह किताब ले गया और पुस्तक मिली यह स्वीकारो कि आज तक नहीं आई। प्राध्यापक से भारतीय प्रशासनिक सेवा में आए अधिकारी ने निजी सचिव से कह रखा था 'केवल काम से मिलें'। सम्बन्धों का यह कैसा प्रबंधन है? सुरक्षा सेवा के एक अधिकारी ने अपने माता-पिता को कह रखा था सिफारशी फोन करके परेशान मत करना और ये माता-पिता अपने बेटे बहू से कभी नहीं मिले?

आखिर ऐसा क्या है जो शीर्ष पदों पर है वे सुखी गृहस्थ। पारिवारिक जीवन से दूर क्यों भागते हैं। यह विग्रह अकारण है। जो अपने ज्ञान के बल पर इस स्तर पर पहुँचा है वह रूखा क्यों हो गया? सम्बन्धों की शक्ति को प्रयुकत किए बिना सफलता नहीं है। स्थानीय स्तर पर निष्ठावान जागरूक विद्वान कौन हैं उन्हें जानना इसलिए आवश्यक नहीं रहा कि उनकी मारक क्षमता नहीं है तो उपयोगिता भी नहीं है। धनबली और बाहुबली दोनों अवस्थाओं में लाभकारी हैं? आदमी एक विधि (सिस्टम) में कार्य करता है जिस आसन पर बैठता है उसे वैधानिक शक्ति प्राप्त है। अहम् ही पद बनकर रह जाता है। सामने वाला दूध की भांति फट जाता है।

मेरा आज भी प्रयत्न है जीवन सम्बन्धों की शृंखला है। यह बनी रहे। प्रभाव प्रबंधन के लिए मैंने सूत्र रूप में कहा 'आने वाले को धैर्यपूर्वक सुनें' आधी समस्या हल हो जाएंगी? शिष्टाचार वह सहज अवस्था है जो दुख बांट लेती है सुख बढ़ा देती हैं? पद आदमी को आदमी से दूर कर देता है।

सूर्य साक्षात् की बात मेरा लक्ष्य है यह वह अवस्था है जो प्राणी को प्राण प्रकृति से ऊर्जायित करती है। जीवन जिनके बिना नहीं है 'वायु और जल' इनसे भी हमारा कहाँ सम्बन्ध है? परिणाम बढ़ते चिकित्सालय, मिलावटी एवं अमानक औषधियां और मूल्य? हवा को जहरीली कौन बना रहा है पानी को जहरीला कौन बना रहा है? एक का अभाव पैदा करो दाम मिलेंगे 'रुपया', 'रुपया' फैक्ट्रियां अंधाधुंध विष उगलें नदियों का जल गन्दगी से दूषित हो कौन नहीं जानता सर्वत्र लोभ है सम्बन्ध नहीं-जब सम्बन्ध बने स्तवन गाए 'गंगा लहरी' सुनने जल ठहर जाए। साधक सिद्ध गृहस्थ इतना सम्बन्ध स्थापित करके कि मृत्यु हो तो अवशेष पवित्र गंगा में प्रवाहित हों? सम्बन्धों की उपेक्षा ने मनुष्य को दीनहीन बना दिया और जब वह पद, पैसा, प्रतिष्ठा पा जाता है स्वयं को भाग्य विधाता मान लेता है।

बंधन है बन्धुआ होने के - स्वलाभ पर खड़े बंधन और जटिल हो गए कुछ तो मोल बिकने लगे हैं। भगवान के दर्शन! सौ रुपए दो अभी करा देते हैं? शिक्षा केन्द्र न पढ़ने का शुल्क लेने लगे हैं विश्वविद्यालय डिग्रियां बेचें, नौकर समय पर कार्यालय न पहुँचें कोई भी कार्य देश में बिना धन या प्रभाव के न हो तो यह कौन लोग हैं हमारे अपने ही घरों से निकलकर परिवार से परे दोहन में जीवित हैं?

संस्कृति और सभ्यता से इतना ही सम्बन्ध रह गया है कि अनुचित को सराहें और क्षणों की प्रतीक्षा में बैठे रहें। अपने कार्यक्रम कहाँ हैं? दूसरों के कार्यक्रमों में सदारत और व्यर्थ की प्रशंसा, आज तक ऐसी प्रस्तुतियां नहीं देखी। पता नहीं कैसे एक देश के मंत्री का ज़मीर जागा और उसे छात्राओं ने बाहर का रास्ता दिखा दिया? यह कैसे सम्बन्ध हैं जिनमें पंच विकारों का ही

घालमेल है। कर्मचारी कुछ भी कर्म करे पर अपना कर्म नहीं करेगा? सर्वाधिक आदमी का सम्बन्ध आदमी से ही है और वहाँ बाजार है, वहाँ भी 'सेलर्स' स्याही की दवात, कीमत दो सौ रुपए? देखें - बेचनी नहीं है - अग्रिम में मंगाई है?

अस्पताल में बीमार का विशेषज्ञ से सम्बन्ध देखकर कभी-कभी लगता है सभी सम्बन्धों की कड़ी प्रेम सद्भाव सेवा को धकेल कर 'पैसा' मध्यस्थ बन बैठा है। एक शवगृह से शव प्राप्त करने में रुपया ही सहायक बना और बदले में एहसान इतना जल्दी काम हो गया 'कृपा है आपकी कहना पड़ा'' और शवगृह आलम स्वयं परमात्मा भी न देख सकेंगे 'देख लो कौन-सा है जल्दी करो' इतना बेपर्द तो पशु भी नहीं होता?..... 'वो पड़ा है' - निकाल लो शवगृह बंद करना है?

समाज का वह कौन-सा क्षेत्र है जो एक दूसरे पर आश्रित न हो - और एक दूसरे का सहयोगी न हो। इसमें कोई प्रचलन से बाहर है तो वह है सही, निष्ठावान, विचारक चिंतक - एक समय में दो ही तो मिलेंगे - एक निमंत्रण मिला - स्वश्री की पौत्री/स्वश्री का पुत्र.... वर-वधु को आशीर्वाद दें और रात के एक बजे तक वर का अता-पता तक नहीं था बारात चलने वाली है और प्रियजन लिफाफा देते देखे गए - भोजन खाया और ये गए - कैसा सम्बन्ध है। वहीं - मोबाइल - 'कहाँ हो' - जब अग्न का समय हो मिस काल मार देना। ये मृतक के गहरे मित्र थे - इनके आने की प्रतीक्षा खत्म होते देख चिता अग्नि लगी। ये पहुँचे दहाड़ मार कर रोने लगे। 'एक बार मुंह देखना सी'। इसके बाद इन्हें किसी ने नहीं देखा? आपसी सम्बन्ध देहों में सिमट गए? जो बात मुंह से नहीं कह सकते एसएमएस बता रहे हैं? मैंने सूरज को देखा वह कहने लगा.....'अब आदमी नहीं मिलेगा'?

मकान नं. 51, सेक्टर–9, उपनगर परिषद् के सामने, हनुमानगढ़ जंक्शन – 335512

पाठकों के स्वर

• 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-31 मार्च 2010 का संयुक्तांक भ्रष्टाचार के विविध प्रसंगों को लिए है। विद्वान लेखकों ने इस विषय पर शोधपरक विचार प्रकट किए हैं। यह एक प्रकार से चिंतनीय अंक है। मेरे विचार से देश में प्रचलित राजनीति भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। फिर व्यवसायिक लोकतंत्र ने आग में घी का काम किया। राजनेताओं के प्रश्रय से, भ्रष्टाचार 'सुरसा का वदन' बन गया है। यह सच है कि : 'खूंटें बल बछिया नीसे' कवि रहीम ने इसे यों व्यक्त किया है

अनुचित उचित रहीम लघु करहिं बेड़न के जोर।
ज्यों शशि के संयोग ते पचवत आगे चकोर।।

फिर भोगवादी संस्कृति ने खाज में कोढ़ का काम किया है।

मनमाने ढंग से राजनेता अपनी सुख-सुविधा व वेतन बढ़ाते रहे हैं, वह भी एक प्रकार से सुनियोजित भ्रष्टाचार ही है। मरने के बाद व्यक्ति का क्या होगा। इस रहस्य को तो अब तक कोई जान न पाया है, परंतु यह निर्विवाद सच है कि मरने पर आदमी अपने साथ कुछ भी नहीं ले जाता। फिर क्यों हम परलोक को बिगाड़ रहे हैं। अंक में अनेक सुंदर विचार हैं। विचार वह प्रकाश है, जो हमें अंधकार में भटकने से बचाता है।

- गोवर्धनलाल पुरोहित (जयपुर-राजस्थान)

• 'अणुव्रत' पाक्षिक 1-31 मार्च 2010 के संयुक्तांक भ्रष्टाचार-शिष्टाचार अंक में मैंने आचार्य महाप्रज्ञजी के दो लेख पढ़े। हम सब जानते हैं और मानते भी हैं कि पूरे संसार में ईमानदार और अच्छी सोच-विचार के और नीति से जीवन जीने वालों की संख्या अन्य लोगों से कहीं ज्यादा मात्रा में हैं। कमी सिर्फ इतनी ही है कि अच्छे लोग जगह-जगह पर बिखरे हुए हैं। जैसा संगठन चंद बुरे लोगों का मजबूत दिखाई पड़ता है उससे कई गुना ज्यादा बड़ा संगठन पूज्य महाप्रज्ञजी जैसे ऊंची सोच-विचार और समझ के अन्य कई विद्वानों को साथ मिलकर तैयार करने का समय अब आ चुका है।

अगर इस प्रयास में मैं जो कुछ भी अपनी ओर से योगदान दे सकूंगा तो अपने आपको भाग्यशाली समझूंगा और जीवन सफल हुआ समझूंगा, क्योंकि मैं हार मानने में नहीं बल्कि जीत के प्रयास करने में भारी विश्वास रखता हूँ।

यतीश मेहता

शारीरिक दुर्बलता और प्रेक्षा चिकित्सा :2:

मुनि किशनलाल

प्रेक्षाध्यानः प्राण संचार का प्रयोग शरीर प्रेक्षा। शरीर प्रेक्षा में हमें शरीर के प्रत्येक अवयव पर चित्त को ले जाकर वहाँ पर होने वाले परिणमन, स्पन्दन, प्रकम्पन या संवेदन आदि को द्रष्टा भाव से देखना होता है। खुली आँखों से नहीं देख सकें तो बंद आँखों से, द्रष्टा भाव से देखने का प्रयास करें।

प्रत्येक अवयव पर 15 सेकण्ड तक प्रेक्षा करें और सुझाव दें ''प्रत्येक अवयव में प्राण का संचार हो रहा है''। फिर पैरों को सुझाव दें कि ''मेरे पैर सबल और प्राणवान बन रहें है।''

शरीर के मध्य भाग की यात्रा करें। पेडू के पूरे भाग में चित्त की यात्रा करें। दांये, बांये, आगे, पीछे, बाहर और भीतर प्रत्येक भाग में चित्त को केन्द्रित करें। वहाँ पर होने वाले प्राण के प्रकंपनों का अनुभव करें। सुझाव दें कि, ''मेरे शरीर में प्राण का संचार हो रहा है। रक्त में श्वेत कण बढ़ रहे हैं और शक्तिशाली बन रहे हैं''। अब पेट के प्रत्येक भीतरी अवयव की प्रेक्षा करें दोनों गुर्दे, बड़ी आँत, छोटी आँत, पेन्क्रियाज, पक्वाशय, आमाशय, तिल्ली, यकृत और तनुपट प्रत्येक अवयय पर 10 से 15 सैकण्ड रुकें। सभी अवयवों के शक्तिशाली और प्राणवान बनने की भावना करें।

अब शरीर के ऊपरी भाग की यात्रा प्रारंभ करें ठुड्डी, होठ, मुँह, मुँह के भीतर मसूड़े, जीभ.....तालू..... ...दाहिना कपोल.....बायां कपोल..... ..... नाक..... दाईं कनपटी.. .... बाईं कनपटी.....दोनों कान..... .दाईं आँख..... बाईं आँख..... ललाट और सिर। प्रत्येक भाग की प्रेक्षा कर..... शक्तिशाली होने का सुझाव दें। अनुभव करें कि, ''शरीर के ऊपरी भाग के सभी अवयव प्राणवान बन रहे हैं''।

लाभः इस प्रयोग से शरीर शक्तिशाली और प्राणवान बनता है।

अनुप्रेक्षा

शक्ति की अनुप्रेक्षाः ''मैं शक्तिशाली बन रहा हूँ। मेरे भीतर शक्ति का संचार हो रहा है''। इस शब्दावली का 15 बार उच्चारण करें और अपने अन्तर में शक्ति को स्थापित कर दें। इसके बाद इसी शब्दावली का 15 बार मानसिक जप करें। इसी शब्दावली को चमकते हुए अक्षरों में ललाट पर पढ़ें।

चिन्तन करें शक्तिशाली का सभी आदर करते हैं। कमजोर और दुर्बल को कोई इज्जत नहीं देता है। शक्तिशाली ही अपने उद्देश्य में सफल होता है। दुर्बल व्यक्ति में क्षमता रहते हुए भी असफल हो जाता है। इसलिये हीन भावना को दूर करना चाहिए, शक्ति के विकास की भावना करनी चाहिए।

जप

जप का जीवन में बहुत महत्त्व है। जिस जप को निरन्तर किया जाता है, वह चरित्र का अंग बन जाता है। शक्तिशाली बनने के लिये भावना करें कि मैं स्वस्थ, बुद्धिमान बना रहूँ ताकि मुझे उत्तम समाधि प्राप्त हो। इसके लिये मन्त्र हैं 'आरोग्ग-बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु' इस मंत्र का प्रतिदिन 10 मिनट तक जप करें।

लाभः शारीरिक दुर्बलता समाप्त होकर आत्मविश्वास जागृत होता है।

तप

जो व्यक्ति जीभ के स्वाद के लिये भोजन करता है, वह भोजन के लिये ही जीता है। इससे वह बार-बार बीमार होता रहता है। बीमारी से बचना है, स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करना है, स्वस्थ जीवन जीना है तो आहार-विवेक आवश्यक है। भोजन के तीन प्रकार हैं

1. *सात्त्विक भोजन :* सुपाच्य, शाकाहारी भोजन।

2. *राजसिक भोजन :* केवल स्वाद के लिये किया जाने वाला भोजन जैसे मिठाइयां, तली नमकीन चीजें एवं अन्य गरिष्ठ पदार्थ।

3. *तामसिक भोजन :* मांसाहार और उत्तेजक भोजन।

यदि शारीरिक दोर्बल्य मिटाना है, स्वस्थ और सबल बने रहना है तो सात्त्विक भोजन अपनाना होगा। आहार हित, मित, और सात्त्विक होने के साथ ही उसमें शरीर की आवश्यकतानुसार विटामिन, प्रोटीन, वसा, मिनरल, कार्बोज इत्यादि पोषक संतुलित मात्रा में होने चाहिए। भोजन के बाद कम से कम तीन घंटे का समय भोजन को पचने के लिये दिया जाना चाहिए। अगर समय का ध्यान न रख कर बार-बार आहार किया जाता है तो उससे भी अपच हो जाती है। भोजन से होने वाली बीमारी से बचने के लिये जहाँ भोजन में सावधानी जरुरी है वहीं उपवास भी बहुत स्वास्थ्यदायक बनते हैं। जो पूरी तरह उपवास न कर सकें उन्हें सप्ताह में एक दिन एक वक्त भोजन तथा एक वक्त फलाहार करना चाहिए। पूरे दिन भी फलाहार पर रहा जा सकता है। अगर सम्भव हो तो पूरा उपवास सिर्फ पानी (गर्म) के साथ किया जा सकता है।

मुद्रा

शारीरिक दोर्बल्य के उपचार के लिये अनुभवी प्रशिक्षक पृथ्वी मुद्रा और प्राण मुद्रा का सुझाव देते हैं। यह जानना भी जरूरी है कि मुद्रा होती क्या है? जब तक भाषा का विकास नहीं

हुआ था तब तक व्यक्ति अपनी भावनाएं विभिन्न भाव-भंगिमाओं और इशारों से ही प्रकट करता था। बाद में जब भाषा विकसित होकर मानव की सामाजिकता और सुदृढ़ हुई यही भाव प्रकट करने के तरीके मुद्राओं के रूप में विकसित हो गये। कुछ मुद्राएं संस्कारगत होती है। चाहे-अनचाहे परिस्थिति उत्पन्न होते ही व्यक्ति परिस्थिति अनुसार विशेष मुद्रा में आ जाता है। चिन्ता से घिरते ही व्यक्ति सहज ही चिन्ता मुद्रा में आ जाता है। उसके हाथ सहज ही सिर या ठुड्डी पर आ जाते हैं। तब हर कोई व्यक्ति उसे देखते ही समझ जाता है कि यह व्यक्ति चिन्ताग्रस्त है। किसी प्रश्न का उत्तर स्मृति पटल पर नहीं आ रहा हो तो व्यक्ति आकाश या छत की और निहारने लगता है। वह इस मुद्रा से स्मृति को वापस लौटाने की कोशिश करता है। इसी तरह नाखूनों को दाँतों से काटना, दाँत किटकिटाना आदि अनेक मुद्राएं स्वतः ही उभर आती हैं। इन मुद्राओं की कहीं कोई शिक्षा नहीं दी जाती। ये मुद्राएं संस्कारगत स्वतः ही उभर आती हैं। व्यक्ति उनका उपयोग कर लेता है। आदमी में जब विनय के भाव उभरते हैं तो वह दोनों हाथों को मिलाकर नमस्कार मुद्रा में आ जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपने दोनों हाथों की मुट्ठियां दोनों बगलों या काँख में रखता है तो समझना चाहिए कि उसमें अहम् का भाव उभरा है। इसीलिए कहा जाता है जैसी मुद्रा वैसा भाव, जैसा भाव वैसा स्राव, जैसा स्राव वैसा स्वभाव। जैसा स्वभाव वैसा व्यवहार, जैसा व्यवहार वैसा प्रभाव मुद्राएं भावों के अनुसार शरीर में बदलाव ला सकती हैं तथा बीमारियों को भी मिटा सकती हैं।

शारीरिक दोर्बल्य को मिटाने या कम करने में पृथ्वी, मुद्रा और प्राण मुद्रा सहायक हैं।

पृथ्वी मुद्रा

शरीर के निर्माण में एक भाग पृथ्वी तत्त्व का होता है। पृथ्वी हर परिस्थिति को सहन करती है। सर्दी, गर्मी, वर्षा कैसी भी परिस्थिति आने पर, पृथ्वी सब में सम रहती है।

विधिः अनामिका और अंगूठे के अगले पौर का स्पर्श करने से पृथ्वी मुद्रा बनती है। शेष अंगुलियां सीधी रहती हैं। चित्र के अनुसार मुद्रा बनाएं।

आसनः पृथ्वी मुद्रा के प्रयोग के लिये वज्रासन उत्तम है। सुखासन एवं अन्य ध्यानासनों में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

समयः शरीर को सन्तुलित और सुडौल बनाने के लिये पृथ्वी मुद्रा का प्रयोग 24 मिनट से 48 मिनट तक किया जा सकता है।

लाभ :

1. शरीर बलवान और पुष्ट बनता है।
2. प्रसन्नता, उदारता और विचार-शीलता बढ़ती है।
3. शरीर और मन में तनाव कम हो जाता है।
4. तामसिक गुणों का नाश और सात्विक गुणों का विकास होता है।
5. भोजन की पाचन क्रिया बढ़ती है।
6. कायगुप्ति का अभ्यास होता है।
7. रागद्वेष के भावों में कमी आती है।

सावधानियांः पृथ्वी तत्त्व शरीर में भार एवं शक्ति बढ़ाता है। अतः इसका प्रयोग आवश्यकता से अधिक नहीं करना चाहिए। वजन कम करना है तो अनामिका अंगुली को अंगूठे के मूल में लगायें।

प्राण मुद्रा

प्राण से ही यह शरीर उर्जावान बनता है। प्राण की कमी और अधिकता से असन्तुलन पैदा होता है। प्राण के सन्तुलन और शरीर को उर्जावान बनाए रखने के लिये प्राण मुद्रा का प्रयोग किया जाता है।

विधिः सबसे छोटी अंगुली (जल तत्त्व) और अनामिका के पौरों को अंगूठे से मिलाकर जो मुद्रा बनती है उसे प्राण मुद्रा कहते हैं। प्राण मुद्रा शक्तिशाली मुद्रा है।

आसनः पद्मासन या सिद्धासन से प्राण ऊर्जा तेजस्वी बनती है। मेरुदण्ड सीधा रखें। इससे प्राण उर्जा उर्ध्वमुखी बनती है।

समयः प्राण उर्जा को व्यवस्थित करने के लिये 48 मिनट का प्रयोग पूर्ण कहलाता है। अगर एक बार में प्रयोग पूर्ण रुप में न कर पाए तो प्रारंभ में 16 मिनट का प्रयोग करें। फिर दो बार और करके पूर्ण कर लेवे।

लाभ :

1. प्राण शक्ति की कमी को पूरा किया जा सकता हैं।
2. शरीर की दुर्बलता, मन की अशान्ति और नकारात्मक भाव दूर होते हैं।
3. आँखों के विकार दूर होते हैं।
4. एकाग्रता का विकास होता है।
5. लकवे से खोई शक्ति को लौटाने में सहायक बनती है।

सावधानीः प्राण मुद्रा से जो उर्जा और शक्ति शरीर को मिलती है उसका उपयोग सही दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। अगर दृष्टिकोण गलत होता है तो ऊर्जा शक्ति का उपयोग गलत होने से व्यक्ति अधःपतन की ओर जा सकता है ■

जाति और सम्प्रदाय के भेदों ने मनुष्य की एकता को विभक्त किया है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

बच्चों में मानव मूल्यों का विकास

रजनीकांत शुक्ल

बच्चे हमारा भविष्य हैं। वे आज जैसे पलेंगे-पुषेंगे-पढ़ेंगे हमारा कल का समाज देश विश्व वैसा ही बनेगा। यह हम सभी जानते और समझते हैं। जो लोग जागरूक हैं इस बारे में सोचते हैं व प्रयास करते हैं कि हमारा आज बेहतर हो ताकि कल के परिणाम सुखद आएं।

यह प्रयास व्यक्तिगत भी किए जा सकते हैं समष्टिगत भी यानि सामूहिक रूप से भी। निश्चित तौर पर दोनों की अपनी अहमियत है, महत्त्व है, अच्छाइयां हैं और कमियां भी। मैंने इस दिशा में प्रयास किए और पाया कि कोई भी सामाजिक संस्था पहले पहल किस मस्तिष्क में आकार लेती है फिर उसका मूर्तिमान रूप हमारे सामने आता है। जब तक वे लोग जीवित रहते हैं संस्था के विचारों, कार्यों व व्यवहारों में जीवंतता रहती है उसके बाद जब अपने कार्य व्यवहार से वह सामाजिक जीवन में अपनी पहचान बना पाती है तभी निहित स्वार्थी लोग उस पर अपना आधिपत्य जमाने लगते हैं। धीरे-धीरे होता यह है कि जिन मूल्यों, कार्यों, व्यवहारों के लिए संस्था का जन्म होता है वे ही उसमें सिरे से गायब होने लगते हैं। उर्दू के लोकप्रिय शायर साहिर लुधियानवी का शेर है

''वे फलसफे जो हर एक आस्तां के दुश्मन थे,
अमल में आए तो वे वक़्फे आस्तां निकले।।''
सितम के वक्त में हम अहले दिल ही काम आए,
जुबां पे नाज़ था जिनको वो बेजुबां निकले।।

मैंने भी कई राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित सामाजिक संगठनों में काम किया और पाया कि जिन उद्देश्यों के तहत उनका जन्म हुआ था जो मूल्य उनकी जड़ों में थे वे ही उनके कार्यकर्ताओं में नदारद थे। हो सकता है आपका अनुभव इससे अलग हो या मिला-जुला हो। परन्तु मेरा अपना अनुभव तो ऐसा ही है। अपवाद स्वरूप कुछ लोगों के दर्शन वहाँ हो जाते हैं शायद वे ही राख में बची हुई चिंगारियां हैं। इससे आभाषित होता है कि कभी यहाँ भी जीवन्त अग्निवत कार्य व्यवहारों का स्रोत रहा होगा।

मैं निराश नहीं हूँ परन्तु कुछ उदासीन-सा अवश्य हूँ। हाँ व्यक्तिगत प्रयासों की जहाँ तक बात है मैं पेशे से अध्यापक हूँ तो मेरा दायित्व भी है कि बच्चों को मानव मूल्यों के लिए प्रेरित करूं, उन्हें सही और गलत के बारे में जानकारी दूं। उनके व्यक्तिगत परिवार, पास पड़ोस, समाज, देश और विश्व की भलाई के लिए जो बेहतर है उस राह से परिचित कराऊँ उन्हें बुराइयों व अच्छाइयों के परिणामों के बारे में जागरूक करूँ ताकि वे सही गलत का निर्णय स्वयं कर सकें।

एक साहित्यकार होने के नाते मैं अपने साहित्य में उन बातों का समावेश करूँ जो उनके जीवन को सुखमय बनाएं। जिन्हें अपने जीवन में ढालकर अपनाकर वे स्वयं के लिए, परिवार के लिए, पड़ोस-देश-समाज-विश्व के लिए उपयोगी साबित हो सकें।

मैं ऐसा ही करता हूँ, मेरी जो पहली पुस्तक प्रकाशित हुई उसका नाम है ''जिन्दगी तुझी से है।'' पुस्तक देश की युवा पीढ़ी को संबोधित करके लिखी गई। मेरी कविताओं का संकलन है, जिसे हिन्दी अकादमी दिल्ली ने, उपयोगिता के आधार पर चयनित कर प्रकाशन सहयोग देकर छपवाया। इसमें इसी शीर्षक से लिखी गई कविता की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं

देख सुन समाज को, रस्म और रिवाज को,
कल की बात छोड़कर तू संवार आज को,
कल बनेगा खुद हसीन तू इंतजार कर,
जिंदगी तुझी से है, जिंदगी से प्यार कर,
रूप दे कुरूप को, छाँव या कि धूप हो, तू
बदल कसौटियां जो ये धरा अनूप हो,
जिस तरफ से भी गुजर रास्ता संवारकर,
जिन्दगी तुझी से है जिंदगी से प्यार कर।

इस और इसी तरह की लगभग 85 कविताओं का संकलन थी मेरी पहली पुस्तक। जिसे आलोचकों, बुद्धिजीवियों और समाज चिंतकों की सराहना तो मिली, परन्तु मैंने पाया कि मेरी कविताओं ने युवाओं के मन पर अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ा। कारण कई हो सकते हैं शायद मैं उचित माध्यम से उन तक न पहुँच पाया हूँ। शायद मैं उनकी भावनाओं को उचित अभिव्यक्ति देने में सफल न हो पाया हूँ। शायद चम-चम चूनर चोली पर मैंने नहीं लिखा जिसकी तरफ नीरज ने इशारा किया चम-चम चूनर चोली पर तो लाखों ही थे लिखने वाले, मेरी मगर ढिठाई मैंने फटी कमीजों के गुन गाए। कारण कोई भी रहे हों परन्तु मेरे गीतों के स्वर में युवा पीढ़ी ने अपना स्वर नहीं मिलाया।

इसी बीच अध्ययन के दौरान मैंने जाना कि मुझे समस्या की जड़ पर प्रहार करना चाहिए मैं तो डालियों में उलझ रहा था। मानव मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन का आधा सात वर्ष की आयु तक सीख चुका होता है, बाकी उसका व्यक्तित्व तो मात्र पल्लवन होता है उन मूल्यों और गुणों का जो वह उस छोटी आयु में सीख चुका होता है। उन भावों का प्रस्फुटन होता है जो बचपन में उसके मन में गहरे समाहित हो चुके होते हैं। जिस आयु में उसे मार्गदर्शन की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, दुर्योग से वही सर्वाधिक उपेक्षित है। मैंने इसी आयु वर्ग को केन्द्रित कर अपनी रचनाओं की विषय-वस्तु बनाया। संयोग से अपने पेशे में भी मैं इसी आयु वर्ग के बाल और किशोर बच्चों के संपर्क में रहता हूँ। उनके व्यवहार को नजदीक से समझने, जांचने,

परखने प्रयोग करने का मुझे अवसर मिलता रहता है। मैंने पाया कि इस समय में जब उनको सहारे की जरूरत होती है, वे सर्वथा अकेले होते हैं। संयुक्त परिवारों में तो फिर भी वे अपने सुख-दुख बांट लेते थे लेकिन आज की तथाकथित 'न्यूक्लियर फैमिली' में तो वे अपने माता-पिता तक से मिलने को तरस गए हैं।

मैंने अपनी रचनाओं को उनके अकेलेपन का मित्र बनाने की सोची। इस तरह से मेरी बाल कविताओं को पुस्तक 'अक्कड बक्कड' अस्तित्व में आई, जिसकी उपयोगिता और सार्थकता को देखते हुए एक बार पुनः हिन्दी अकादमी दिल्ली ने अपनी प्रकाशन सहयोग योजना के अंतर्गत प्रकाशित किया। इसमें मेरी चालीस बाल कविताएं हैं। प्रस्तुत है एक बानगी हम सभी को याद है बच्चों में मेलजोल और भाईचारे की भावना लाने के लिए हमारे पास एक किसान की कहानी है जिसके चार बच्चे थे जो आपस में मेलजोल से नहीं रहते थे। मरने से पहले उसने उन्हें बुलाकर एक लकड़ी तोड़ने को दी जिसे उन्होंने आसानी से तोड़ दिया, बाद में गट्ठर दिया जिसे तोड़ने में वे नाकाम रहे और इस तरह एकता और मेलजोल का संदेश उसने अपने पुत्रों को दिया। 'अक्कड़ बक्कड़' में विविध मानव मूल्य अनुस्यूत हैं।

बाद के वर्षों में कार्य को विस्तार देते हुए मैंने अपने रचना संसार को इसी आयु वर्ग पर केन्द्रित किया। इस तरह अस्तित्व में आयी ''बहादुर बच्चों की सच्ची कहानियां'' जिनमें राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार प्राप्त 5 से 18 वर्ष तक के भारतीय बच्चों की वे सच्ची कहानियां होती हैं, जिनमें उन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए दूसरों की जान बचाने का प्रयास किया होता है। घटना के समय उन्हें यह नहीं पता होता है कि इस घटना में वे बचेंगे भी या नहीं। देश के निपट वीरान निर्जन आदिवासी कबीलों से लेकर महानगरीय चकाचौंध तक कई स्तरों से इन बच्चों का चयन किया जाता है। हर स्तर के पाठक बच्चों के मन में इनको पढ़कर अपने जैसा जुड़ाव महसूस होता है। आधुनिक युग की परिस्थितियां जिनसे वे खुद भी दो चार होते हैं। उन्हें अपनी-सी लगती है। उनमें वे अपनी छवि देखते हैं। बाद में इनकी उपयोगिता को देखते हुए जब आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र ने इन्हें चुना तो ये कहानियां रेडियो नाटक के रूप में भी बाल श्रोताओं तक पहुँची, इसकी भी एक रोचक कहानी है। आकाशवाणी का बाल विभाग बच्चों के लिए नाटकों की शृंखला प्रसारित करना चाहता था परन्तु विषय वस्तु के रूप में जब नजर दौड़ाई तो सामने गिने-चुने नाम थे। प्रह्लाद, ध्रुव, एकलव्य, अभिमन्यु जैसे पौराणिक चरित्रों जैसे चार-पाँच नामों के बाद गिनती रुक गयी। एक तो ये पौराणिक चरित्र थे जिनकी सत्यता पर भी संदेह होता है, दूसरा आज की वर्तमान परिस्थितियों के बच्चे उनसे अपनापन नहीं जोड़ पाते। इसी दौरान ''किताब घर'' से प्रकाशित मेरी लिखी पुस्तक ''बहादुर बच्चों की सच्ची कहानियां'' पुस्तक में वह सब था जिसकी उन्हें तलाश थी। विषय की नवीनता, घटनाओं की विविधता, सच्चाई और साहस, रोमांच त्याग, हिम्मत की बेमिशाल दास्तानें थीं ये कहानियां। बस फिर क्या था इनमें से चयनित कर तेरह कहानियां ''एक बहादुर का जन्म'' के नाम से रेडियो नाटक के रूप में तैयार कर प्रसारित की गयी और प्रशंसित हुई।

एफ–380–एफ
सेक्टर–12, विजयनगर
गाजियाबाद (उ.प्र.)

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए
संकल्प करें
❐
मैं रिश्वत नहीं दूंगा।
मैं व्यवहार और व्यवसाय में प्रामाणिक रहूँगा।

आवाज़ उठाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ

अणुव्रत आन्दोलन

शाश्वत और सार्वभौमिक धर्म

डॉ. बी.एन. पांडेय

कुछ लोग यह प्रश्न करते हैं कि हजारों वर्षों से धर्म का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, पूजा-पाठ, कथा-कीर्तन, यज्ञ-हवन आदि का आयोजन किया जा रहा है फिर भी समाज से अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, हिसा-हत्या, दुष्कर्म आदि कम नहीं हो रहे हैं, बल्कि सर्वत्र इनकी वृद्धि ही होती दिखाई दे रही है। तब धर्म के प्रचार-प्रसार की क्या आवश्यकता है?

उक्त प्रश्न का उत्तर है यदि धर्म के प्रचार-प्रसार के बाद समाज की यह स्थिति है कि अनाचार-अत्याचार, अनैतिकता, हिंसा इत्यादि समाप्त नहीं हुए तब यदि धर्म का प्रचार-प्रसार न किया गया होता या आज न किया जाय तो समाज की स्थिति क्या होगी। क्या धर्म का प्रचार-प्रसार बंद कर देने पर समाज की स्थिति और भी बदतर हो जायेगी।

शिक्षा पर प्रतिवर्ष अरबों-खरबों रुपये व्यय किये जा रहे हैं, क्या अशिक्षा मिटी; अज्ञान, अंधविश्वास, कुरीतियां समाप्त हुए। शिक्षा का उद्देश्य है अशिक्षा-अज्ञान दूर कर लोगों के मन में वैज्ञानिक मानसिकता पैदा करना, जिससे भ्रम, अंधविश्वास, कुरीतियां समाप्त हों, परन्तु प्रत्यक्ष देखा जा रहा है कि आज का शिक्षित विद्वान व्यक्ति भी, यहाँ तक कि अध्यापक, प्राध्यापक, वकील, जज, कलेक्टर-कमिश्नर, नेता, मंत्री भी भ्रम, अंधविश्वास और कुरीतियों की गिरफ्त में बुरी तरह जकड़े हुए हैं। तब शिक्षा के प्रचार-प्रसार करने की क्या जरूरत! इसका तात्पर्य यह तो नहीं कि शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।

सरकार ने देश-समाज में सुशासन, सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए लाखों पुलिस तथा अफसरों की नियुक्ति की है और हजारों न्यायालय-जेलखाने बनाये गये हैं तो क्या देश-समाज से अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, बेईमानी, बदमाशी तथा आतंकवाद आदि समस्याएं समाप्त हुई हैं। समाज को सुशिक्षित और सुव्यवस्थित करने में शिक्षा, पुलिस-प्रशासन का कितना योगदान है, उससे कहीं ज्यादा योगदान धर्म का रहा है और रहेगा।

कुछ लोग कहते हैं कि हम धर्म को खूब मानते हैं, धर्म पर हमारा अटूट विश्वास है, नियम से धर्म के विधि-विधान का पालन करते हैं, पूजा-पाठ, नाम-जप आदि करते हैं, परन्तु हमें सदैव आर्थिक तंगी रहती है और अनेक समस्याओं से घिरे रहते हैं। इसका क्या कारण है? नाम-जप, पूजा-पाठ आदि धर्म नहीं, बाह्यचार्य है। इन सबके करने से थोड़ी मानसिक प्रसन्नता और संतोष मिलेगा, किन्तु इससे आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं होगा।

श्रम करने से आर्थिक समस्या दूर होगी, उचित आहार-विहार तथा संयम से शारीरिक समस्या दूर होगी और सबके साथ प्रेम, समता, एकता, क्षमा, सहनशीलतापूर्वक मधुर व्यवहार एवं सेवा करने से पारिवारिक, सामाजिक समस्याएं दूर होंगी। जो सच्चे धर्म का पालन और आचरण करता है उसका जीवन सुधरता है, मन निर्मल रहता है और उसको मानसिक शांति एवं प्रसन्नता मिलती है।

प्रारंभ में जो प्रश्न उठाया गया है कि धर्म के बहुत प्रचार-प्रसार के बाद भी समाज से बुराइयां-दुष्कर्म दूर नहीं हो रहे हैं, समाज की स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है, इसका एक प्रमुख कारण है धर्म के नाम पर कर्मकांड, पूजा-पाठ, दिखावा ज्यादा चल रहा है, किन्तु लोग धर्म का आचरण नहीं कर रहे हैं। यदि लोग सच्चे धर्म का आचरण करने लग जायें तो किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं रह जायेगी। आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, शारीरिक सारी समस्याओं का समाधान स्वयंमेव ही हो जायेगा।

धार्मिक क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोग धर्म को मानते हैं किन्तु धर्म को जीते नहीं हैं। इसलिए लोगों का दुःख दूर नहीं हो रहा है तथा समाज से बुराइयां दूर नहीं हो रही हैं धर्म को मानने का अर्थ है किसी प्रकार का पूजा-पाठ, कर्म-कांड कर लेना और धर्म को जीने का, आचरण करने का अर्थ है जीवन को नैतिकता, सदाचार, संयमपूर्ण बनाना तथा दूसरों के साथ शील, करुणा, अहिंसा का व्यवहार करना। अनैतिकता एवं बुराइयों का त्याग तथा नैतिकता-सदाचार का पालन और अपने पर संयम तथा दूसरों के साथ करुणा, सेवा, शील का व्यवहार ही धर्म है। यह धर्म जीवन में उतर जाये तो किसी प्रकार की समस्याएं कहाँ रह जायेंगी।

ज्यादातर लोग अपने लोभ-स्वार्थ-भोग-वासना-अहंकार पर संयम करना नहीं चाहते। अनैतिकता, मिलावटखोरी, घूसखोरी से हटना नहीं चाहते और दूसरी तरफ किसी प्रकार का कर्मकांड करके धर्म और कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं और शिकायत करते हैं कि धर्म करने पर भी भ्रष्टाचार-अनाचार दूर नहीं हो रहा है, बुराइयां मिट नहीं रही है; मन में, परिवार में शांति नहीं आ रही है। इस प्रकार के दोहरे चरित्र से काम नहीं बनने वाला है।

धर्म का पहला लक्षण है सहनशीलता और समता। जो अपने स्वयं के तथा अपने मत-पंथ, संप्रदाय-महापुरुष, मान्यता के प्रतिकूल बात सुनकर क्षुब्ध-उत्तेजित नहीं होना और हानि-लाभ, सुख-दुःख, मान-अपमान, निंदा-स्तुति, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति में सम-शीतल-शांत रहता है वही सच्चा धार्मिक है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं, जो इस प्रकार हैं धैर्य, क्षमा, दम (मनोनिग्रह), अस्तेय

(चोरी न करना), भीतर-बाहर की पवित्रता, इंद्रिय संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध। धर्म के इन लक्षणों का संबंध किसी मत-मजहब-संप्रदाय विशेष से नहीं है, किन्तु इसका सीधा संबंध मनुष्य जीवन-मनुष्य समाज से है। ये मानव मात्र के लिए परम हितकारी और आवश्यक हैं। जिस मनुष्य में सहनशीलता नहीं है वह न धीरज रख सकता है, न किसी को क्षमा कर सकता है, न ही मन-इन्द्रियों पर संयम रख सकता है, न सत्य के पथ पर चल सकता है। और न सत्य की रक्षा कर सकता है और न क्रोध को शांत कर सकता है। इसलिए धर्म का पहला लक्षण है सहनशील होना और समता भाव में जीना। चाहे व्यवहार का क्षेत्र हो चाहे परमार्थ का, चाहे व्यक्ति घर में रहे चाहे बाहर हर जगह सहनशीलता और समता भाव की महती आवश्यकता है। यदि धार्मिक व्यक्ति सहनशील-शांत न हो तो दूसरों से क्या आशा की जाये। जो व्यक्ति सहनशील है और समता भाव में जी रहा है वह दूसरों पर अनचार-अत्याचार कैसे कर सकता है। उससे किसी प्रकार का दुष्कर्म कैसे हो सकता है।

धर्म का दूसरा लक्षण है अपने आप पर, अपने मिथ्या-स्वार्थ और भोग-वासनाओं पर संयम नहीं रखता, किन्तु खूब पूजा-पाठ, नाम-जप आदि करता है और नियमपूर्वक बाह्यचार्य का कड़ाई से पालन करता है, धर्म से उसका दूर-दूर तक कहीं कोई संबंध नहीं हो सकता। वह केवल धार्मिक होने का दिखावा करता है किन्तु धर्म को जानता-समझता ही नहीं है। अपने मिथ्या-स्वार्थ और भोग-वासनाओं पर संयम न कर पाने के कारण ही आदमी मिलावटबाजी, कालाबाजारी, घूसखोरी, दुराचार-पापाचार करता है। मनुष्य का मिथ्या-स्वार्थ और भोग-वासनाएं जितने बढ़ते जायेंगे देश-दुनियां में उतनी ज्यादा समस्याएं बढ़ती जायेंगी। किंतु जो मिथ्या स्वार्थ और भोग-वासनाओं पर पूर्ण संयम कर लेता है उसके द्वारा कहीं कोई समस्या होगी ही नहीं। यदि देश-दुनियां से अनाचार-अत्याचार, हिंसा इत्यादि को दूर करना है तो इसका एक मात्र उपाय है धर्म की शरण में जाना। जो अपने मिथ्या स्वार्थ और भोगवासनाओं पर जितना संयम करेगा, उसका जीवन अहिंसा से उतना ही परिपूर्ण होगा। सारे पापाचार्य के मूल में है मिथ्या स्वार्थ-लोभ। इसीलिए लोभ को पाप का बाप कहा गया है। लोभ जितना बढ़ता जायेगा उतनी ही क्रूरता और हिंसा बढ़ती जायेगी।

धर्म तो करुणा-अहिंसा है। किसी का किसी प्रकार कोई अहित तो करना ही नहीं, अहित की बात भी नहीं सोचना, किंतु जो संभव हो सबके हित का काम करना और सबके लिए हितकामना करना अहिंसा का स्वरूप है और यही धर्म है। लोग इस धर्म का आचरण करने लग जायें तो, दुनियां में न कोई पापाचार, दुष्कर्म रह जायेगा और न कोई समस्या रह जायेगी। लेकिन यह तब तक संभव नहीं है जब तक आदमी अपने मिथ्या स्वार्थ और भोग-वासनाओं पर संयम नहीं करेगा।

यह निश्चित है कि जिसके जीवन में संयम होगा, अहिंसा और करुणा होगी वह निश्चिंत और निर्भय होगा। अहिंसा और निर्भयता दोनों साथ-साथ चलती हैं। अहिंसा कायरता नहीं है किंतु कायरता हिंसा है। जहाँ हिंसा है वहाँ भय है। इसलिए हिंसक आदमी और जानवर दोनों को छिपकर रहना होता है। इसके विपरीत अहिंसक आदमी और जानवर दोनों निर्भय होते हैं। इसलिए उन्हें छिपने की जरूरत ही नहीं होती। जितनी हिंसा बढ़ती है उतना भय बढ़ता है और जितना भय बढ़ता है उतनी हिंसा बढ़ती है। हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। हिंसा द्वारा किया गया समाधान बहुत अल्पकालिक होगा और उसके पीछे अनेक समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं। किसी भी समस्या का स्थायी समाधान तो अहिंसा से ही होता है।

कहा जाता है ''यतो धर्मस्ततो जयः'' अर्थात् जहाँ धर्म है वहाँ जय है। यह धर्म कुछ और नहीं किन्तु सत्य, न्याय, संयम और अहिंसा ही है। संयम और अहिंसा के बिना सत्य और न्याय कैसे टिक सकते हैं। इसीलिए सही धर्म को पहचानना होगा और उसका आचरण करना होगा। यह धर्म है संयम और अहिंसा। जिस देश-समाज के लोग इसका जितना आचरण करेंगे उस देश-समाज में उतनी ही समस्याएं कम होगी और लोग उतने ही सुखी, शांत, प्रसन्न रहेंगे।

यदि मनुष्य पूर्वाग्रह, पक्षपात, मिथ्या स्वार्थ को त्यागकर शांत-चित्त से विचार करे तो वह बड़ी आसानी से समझ सकता है कि सारी समस्याओं का समाधान स्वतः हो जायेगा। सही धर्म को समझना और उसका आचरण करना ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीने का एक मात्र रास्ता है। धर्म का तो जीवन में वही स्थान है, जो स्थान शरीर में चाम एवं सांस का है। शरीर से चाम को निकाल दिया जाये तो शरीर की रक्षा करना कठिन होगा; बल्कि चाम के बिना शरीर जीवित ही नहीं रह पायेगा। इसी प्रकार सांस रुकी और जीवन समाप्त हुआ। जब हम धर्म को शरीर के चाम एवं सांस को समान महत्त्व देने लग जायेंगे तब जीवन आनंदमय बन जायेगा।

मनुष्य धर्म की अपेक्षा धन को अधिक महत्त्व देता है तब अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा होती हैं। निश्चित ही जीवन में धन का महत्त्व है। धन की उपयोगिता और आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन जब धन को ही सबकुछ मानकर धर्म को गौण मान लिया जाता है, तब आदमी समस्याओं से बच नहीं सकता। यदि स्वयं सुख-शांति-आनन्दपूर्वक जीवन जीना है और संसार को भी समस्यामुक्त, पाप-ताप-मुक्त रखना है तो धन को गौण और धर्म को मुख्य समझना होगा। धन की अपेक्षा धर्म को श्रेय देना होगा और धर्म किसी प्रकार का कर्मकाण्ड नहीं किन्तु धर्म होगा अहिंसा, करुणा, संयम एवं शील। यही शाश्वत और सार्वभौमिक धर्म है।

बी–68 हरदेव नगर,
दिल्ली–110084

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

मोमासर में महिला सम्मेलन

विराट महिला सम्मेलन

१४ अप्रैल। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में विराट महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में मोमासर क्षेत्र की सभी वर्ग एवं जाति की महिलाएं सहभागी बनीं। प्रारंभ महिला मंडल की बहनों के मंगल संगान से हुआ। भाजपा की हनुमानगढ़ जिला अध्यक्ष पुष्पा नाहटा, महिला मंडल की मंत्री सुमन बाफना एवं मुनि किशनलाल ने अपने सारगर्भित विचार रखे। संयोजन मोनिका लोढ़ा ने किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने प्रबोधन में कहा गांवों की अपनी संस्कृति है, अपना गौरव है। गांवों में आज भी सादगी, सज्जनता और अपनेपन का भाव है। वहाँ सत्संग के प्रति गहरा आकर्षण है। महिलाएं शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति में किसी से पीछे नहीं हैं। महिलाओं ने बहुत विकास किया है। उन्हें इस पर भी दृष्टिपात करना है कि वे किस दिशा में जा रही हैं। महिलाओं के सामने भ्रूणहत्या, दहेज, नशा आदि अनेक समस्याएं हैं। परिवार संस्था का विघटन सबसे बड़ी समस्या है।'

संस्कारों के संरक्षण और संवर्द्धन की अभिप्रेरणा देते हुए साध्वीप्रमुखा ने कहा 'संस्कारों के बिना संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकती। बहनों को अपनी ममता, क्षमता और समता को कायम रखना है। अपने धैर्य, संयम और साहस से परिवार को अच्छा बनाना है। गांव की बहनें सत्संगति से अपने जीवन को सुधारें और अच्छा बनाएं।'

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा 'महिला आखिर महिला है, फिर चाहे वह गांव की हो या शहर की। आज महिलाओं और बालिकाओं में शिक्षा का अच्छा विकास हो रहा है। एक बालिका का शिक्षित होना परिवार का शिक्षित होना है। महिलाओं में गुणों का विकास होना चाहिए। महिलाओं का मुख्य काम है अपने बच्चों में सद्संस्कारों का निर्माण करना। एक बालिका के संस्कार पूरे परिवार को संस्कारी बना सकते हैं।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने गुस्से और नशे के दुष्परिणामों की चर्चा करते हुए कहा 'यदि घर और परिवार में शान्ति से रहना है तो गुस्सा और नशा इन दोनों से दूर रहना होगा। शराब घर और परिवार की शान्ति को छीन लेती है, स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा असर डालती है तथा गरीब को और ज्यादा गरीब बना देती है। संघर्ष और पारस्परिक कलह में गुस्सा और नशा इन दोनों की मुख्य भूमिका रहती है। धर्म का एक अर्थ यह भी है कि व्यक्ति गुस्सा और नशा इन दोनों का परित्याग करे। इसी से जीवन में शान्ति, प्रेम और सौहार्द का संचरण हो सकता है।'

अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान

१५ अप्रेल। आज के कार्यक्रम में अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान विनयपुरम द्वारा संचालित अणुव्रत महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की बी.एड् की छात्राएं उपस्थित थीं। छात्राओं ने अपनी भावनाओं को गीत के द्वारा अभिव्यक्ति दी। अध्यापिका आरती पटवा और सुमन टाक ने महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी दी। संस्थान के अध्यक्ष बच्छराज सेठिया, व्यवस्थापक ओमप्रकाश लोहरा ने संस्थान की कार्ययोजना एवं अब तक संपादित कार्यों की अवगति दी। मुनि सुखलाल ने प्रस्तुत संदर्भ में अपने सारगर्भित विचार रखते हुए महिला शिक्षा के क्षेत्र में हुए कार्यों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा 'विनयपुरम में कुछ लोगों ने अपने प्रबल पुरुषार्थ और संकल्प बल से उल्लेखनीय कार्य किया है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के प्रबल संकल्प से नारी उत्थान का जो कार्य हुआ है, उससे महिला समाज लाभान्वित हो रहा है।'

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने उद्बोधन में कहा 'अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान के निर्माण में अनेक कार्यकर्ताओं का योग रहा। उतार-चढ़ाव की अनेक स्थितियों में भी इस संस्थान के कार्यकर्ताओं ने कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाया है। बच्छराज सेठिया आदि कार्यकर्ता इसके साथ निष्ठा से जुड़े हुए हैं। जिस संस्था के साथ आचार्यों का नाम जुड़ जाता है, उसे संबल देना सबका कर्तव्य बन जाता है।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा 'धर्मसंघ के अनेक श्रावकों ने गुरुदेव की भावना को समझा, कठिनाइयों को झेला और उसे साकार रूप दिया।' आचार्यवर ने इस अवसर पर बच्छराज सेठिया की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें 'कल्याणमित्र' संबोधन से संबोधित किया।

पटावरी की कृतियों का लोकार्पण

पदमचन्द पटावरी की दो कृतियों 'पहरेदारी' और 'रास्ते रोशनी के' का लोकार्पण हुआ। जैन विश्वभारती द्वारा प्रकाशित इन दो कृतियों के संदर्भ में शासनसेवी कन्हैयालाल छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कृतियों की संपादक डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन ने ग्रंथ की विषयवस्तु की अवगति दी।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने वक्तव्य में कहा 'भारतीय साहित्य में दुर्लभताओं की सूची प्राप्त होती है। वर्तमान युग में अच्छे साहित्य का लेखन भी दुर्लभ है। अच्छी पुस्तकों के प्रति आज भी लोगों का आकर्षण है। पदमचंद पटावरी का लेखन के प्रति आकर्षण रहा है। ये दोनों प्रतियां उसी आकर्षण की निष्पत्ति हैं।'

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने अभिभाषण में कहा 'पुस्तक अपने समय का आइना होती है, युगीन विचारधारा और संस्कृति होती है। पुस्तक होगी तो संस्कार बचे रहेंगे। वाणी का असर तत्काल होता है, जबकि लेखनी का असर दीर्घकालिक होता है। पदमचन्द पटावरी श्रावकत्व की भूमिका में रहते हुए भी सामाजिक गतिविधियों से जुड़े रहे हैं। इनकी दोनों पुस्तकों के नाम से लगता है कि इनमें कुछ विशेष है। ये अपनी वाणी और लेखनी को और अधिक शक्तिशाली बनाएंगे।'

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा 'पदमचन्द पटावरी गुरुदेव के समय से ही संघीय गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं। ये वक्ता और लेखक भी हैं। पटावरी सेवाभावी और मधुर व्यवहार वाले हैं। इनकी दो पुस्तकें प्रकाश में आई हैं। ये आगे भी खूब काम करते रहें।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा 'युग के अनुरूप साहित्य का निर्माण होता है। जिस युग में जैसी विचारधारा होती है, साहित्य उसका प्रतिनिधित्व करता है और उसका मूल्य भी होता है। पदमचन्द पटावरी चिन्तनशील व्यक्ति है। उसमें निष्ठा है, नए विचारों की उपज है और उसे व्यक्त करने की कला भी है। इनकी पुस्तकें पाठक के लिए

उपयोगी बनेंगी। समाज के लेखकों का लेखकीय कर्तृत्व सामने आता है तो मुझे भी प्रसन्नता होती है।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने इस अवसर पर मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल की साहित्यिक, सामाजिक और संघीय सेवाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें 'कल्याण मित्र' संबोधन से संबोधित किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन सुखराज सेठिया ने किया।

जीवन विज्ञान निबंध प्रतियोगिता

१६ अप्रेल। आज के कार्यक्रम में जीवन विज्ञान निबन्ध प्रतियोगिता में वरीयता स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया। जीवन विज्ञान अकादमी जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता के संदर्भ में मुनि किशनलाल एवं अकादमी के पूर्व निदेशक सुन्दरलाल माथुर ने अपने विचार रखे। मुनि नीरजकुमार ने मंगलाचरण किया। भोजराज धनराज पटावरी जनकल्याण ट्रस्ट के कन्हैयालाल पटावरी एवं कमल पटावरी ने विजेता प्रतियोगियों को ट्राफी एवं सम्मानपत्र प्रदान किया। प्रतियोगी राजेश नाहटा, रतनलाल जैन, बृजेशनन्द शर्मा, नोरतन सुराणा और मोतीलाल संचेती ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन प्रदीप संचेती ने किया।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा 'जीवन विज्ञान अध्यात्म विद्या से जुड़ी हुई शिक्षा है। इसमें केवल सैद्धान्तिक शिक्षा ही नहीं, प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।'

प्रबुद्ध संगोष्ठी

१७ अप्रैल। आज पूज्यवर के सान्निध्य में मोमासर स्तरीय प्रबुद्ध जन संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें मोमासर के निवासी एवं प्रवासी पैंतीस बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। मुनि नीरजकुमार ने मंगल गीत का संगान किया। कमल पटावरी ने प्रस्तुत संदर्भ में अपने विचार रखे। राजेन्द्र संचेती, सुशील संचेती, सुशील पटावरी, डॉ. पन्नालाल ओसवाल, डॉ. मंजू आंचलिया आदि प्रबुद्धजनों ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने प्रबन्धन के सूत्रों की चर्चा की।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा 'बुद्धि और ज्ञान में अन्तर है। बुद्धि एक क्षमता है। उसके द्वारा ज्ञान का विकास किया जा सकता है। ज्ञान अनेक बार दुःख संवेदन का कारण बन जाता है। एक सामाजिक व्यक्ति के लिए धन, बुद्धि और ज्ञान आवश्यक है। किन्तु इनसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है शुद्धि का होना। यदि जीवन शुद्ध और निर्मल होगा तो धन का दुरुपयोग नहीं होगा, बुद्धि उत्पात मचाने वाली नहीं होगी। प्रबुद्ध लोगों में अहिंसा, करुणा और ईमानदारी की चेतना का विकास हो तो ज्ञानबल और बुद्धिबल की सार्थकता बढ़ सकेगी।'

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा 'हमारे दो जगत हैं स्थूल जगत और सूक्ष्म जगत। स्थूल जगत इन्द्रिय चेतना का जगत है, जबकि सूक्ष्म जगत अतीन्द्रिय चेतना का जगत है। केवल इन्द्रिय चेतना में जीने वाला धर्म को नहीं समझ सकता। जब अतीन्द्रिय चेतना में जीने का अभ्यास बढ़ेगा, तभी धर्म का मूल अर्थ पकड़ में आएगा। प्रबुद्धजनों को बाहर की दुनिया का, इन्द्रिय जगत का बहुत ज्ञान हुआ है। अब उन्हें भीतर में जाना सीखना है, जिससे वे जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान खोज सकें।' संयोजन रमण पटावरी ने किया।

बच्चों ने दिया पृथ्वी बचाओ का संदेश

राजसमंद 22 अप्रैल। पृथ्वी दिवस पर बाल निकेतन गांधी सेवा सदन के विद्यार्थियों ने नगर के बाजार तथा बस्तियों में घर-घर जाकर पर्यावरण के प्रति जागरुक बन पृथ्वी को बचाने का नगरवासियों से अनुरोध किया। किशोरनगर विस्तार, सिविल लाईन, इंदिरा नगर में घर-घर में छात्र-छात्राओं ने पर्यावरण के संदर्भ में जानकारी दी। बच्चों ने पृथ्वी बचाओं, जल बचाएं, भ्रष्टाचार मिटाओ के स्टीकर एवं पेम्पलेट भी मकानों-दुकानों में वितरित किये। राजसमंद के कलेक्टर ओंकारसिंह से बच्चों ने अध्यापक पी.जे. बैनी के नेतृत्व में उनके आवास पर मुलाकात की एवं पन्द्रह मिनट तक पृथ्वी बचाओ तथा आपदा प्रबंधन पर चर्चा की। वीरेन्द्र पांडेय, दिनेश तिवारी के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने कांकरोली बाजार, जलचक्की चौराहे पर पृथ्वी बचाओ के परिपत्र वितरित किये। विमला शर्मा के नेतृत्व में छात्राओं ने किशोरनगर विस्तार बस्ती में जन सम्पर्क किया।

पृथ्वी को बचाने के संदर्भ में बाल निकेतन गांधी सेवा सदन में बाल चित्रकला प्रतियोगिता तथा बाल गोष्ठी का आयोजन हुआ। बाल गोष्ठी को संबोधित करते हुए संस्थामंत्री डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा बढ़ते वायु-जल-मृदा प्रदूषण, विलासितापूर्ण जीवन, शहरीकरण एवं औद्योगिकरण से पृथ्वी पर खतरा मंडरा गया है और 4.6 अरब वर्ष पुरानी धरती नष्ट होने के कगार पर पहुँच गई है। महानगरों के विस्तार और औद्योगिकरण की अधिकता के कारण मनुष्य के सामने आज अनेक समस्याएँ हैं जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। जिसके कारण मनुष्य को शुद्ध पेयजल, शुद्ध वायु, शांत वायुमंडल मयस्सर नहीं हो पा रहा है तथा भूमि की उर्वरा शक्ति का दिन-प्रतिदिन ह्रास हो रहा है। पृथ्वी को बचाने के लिए हम कूडा करकट, प्लास्टिक, अपशिष्ट पदार्थ यहाँ-तहाँ नहीं फेंके, जल बचाएँ, खनिज पदार्थो का अत्यधिक दोहन नहीं करें, घरों में रेफ्रीजरेटर - वाशिंग मशीन - वाहनों का उपयोग कम से कम करें ताकि कार्बन डाई आक्साइड गैर उत्सर्जन के प्रतिशत को कम कर ओजोन सुरक्षा कवच को बचा सके। पर्यावरण को बचाने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य विलासितापूर्ण जीवन शैली में बदलाव लाकर संयमित जीवन शैली को स्वीकार कर हिलती-टूटती धरती मां की आवाज को सुनें। आज जरूरत है पर्यावरण को बचाने एवं संतुलित करने की। देश, धर्म, जाति और सम्प्रदाय से परे यह अहम मुद्दा है, जिस पर विश्व के लोगों को एक हो पृथ्वी को बचाने का संकल्प करना है। डॉ. कर्णावट ने बच्चों को एक बाल्टी पानी प्रतिदिन बचाने तथा एक पेड़ को बड़ा करने का संकल्प दिलवाया। गोष्ठी का संयोजन वीरेन्द्र पांडेय, दिनेश तिवारी ने संयुक्त रूप से किया।

आचार्य तुलसी उपवन का लोकार्पण

दिल्ली, अप्रैल। दिल्ली नगर निगम उद्यान विभाग, शाहदरा क्षेत्र द्वारा वार्ड संख्या 238, झिलमिल कॉलोनी, शहीदे आजम भगत सिंह कृष्णा मार्केट स्थित पार्क का नामकरण 'आचार्य तुलसी उपवन' का उद्घाटन साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में हुआ।

साध्वीश्री ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा साधना के शलाका पुरुष आचार्य तुलसी ने शिक्षा साहित्य संस्कृति साधना एवं योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय अवदान दिये भारत ज्योति आचार्य तुलसी ने समय-समय पर राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित सांप्रदायिकता, प्रांतीयता, जातिवाद, भाषाई विवाद, लोकतांत्रिक अवमूल्यन एवं रूढ़िवादिता जैसी समस्याओं के प्रायोगिक समाधान दिये। आज उनके नाम से उपवन का लोकार्पण एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। इस हेतु समाज व प्रशासन के पदाधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

मानवता के मसीहा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी उपवन आध्यात्मिकता व अणुव्रत की सौरभ से आसपास का पूरा क्षेत्र लाभान्वित हो। उपवन के उद्घाटनकर्ता दिल्ली के महापौर कंवरसेन ने कहा कि गांधी के बाद आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व ने समूचे देश व दुनिया को प्रभावित किया। ऐसे महापुरुष के नाम से उपवन का लोकार्पण कर हम गौरवान्वित हैं। मुख्य अतिथि सांसद त्रिलोचन सिंहजी ने कहा, ''मैं आचार्य तुलसी से बहुत अच्छी तरह परिचित और प्रभावित रहा हूँ। पंजाब समस्या का समाधान हो या संत लोंगोवाल वार्ता आचार्य तुलसी ने सच्चे देशभक्त के रूप में देशहित में अपना जीवन झोंका।

पार्षद निर्मल जैन ने आचार्य तुलसी को जैन एकता का संवाहक कहा। इस कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधार जितेन्द्र सिंह शंटी ने कहा मेरा आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ से इतना निकट का सम्पर्क रहा है कि क्षेत्रवासी उन्हें शंटी जैन कहने लगे हैं। वास्तव में आचार्य तुलसी में प्रबल आत्मबल व सम्यक साहस था इसलिए आज ही नहीं युगों-युगों तक आपकी आवाज अनुगूंजित होती रहेगी।

अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा एवं संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत पाक्षिक का विशेषांक ''भ्रष्टाचार-शिष्टाचार'' लोकार्पण हेतु मेयर कंवर सेन को दिया। इस अवसर पर बाबूलाल दूगड़, बाबूलाल गोलछा एवं डॉ. कुसुम लूनिया ने विशेषांक राज्यसभा के सांसद त्रिलोचन सिंह को भेंट किया। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति ने अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित पृथ्वी बचाओ, जल बचाओ, पर्यावरण संरक्षण एवं भ्रूणहत्या निषेध स्टीकर का भी लोकार्पण मेयर एवं सांसद साहब से करवाया।

कार्यक्रम के संयोजक बाबूलाल दूगड़ ने अतिथियों का स्वागत तथा शान्ति पटावरी ने आभार ज्ञापन किया। मेयर कंवर सेन एवं सांसद त्रिलोचन सिंह का स्वागत के.के. जैन, विमलपत सुराणा एवं धनपत लूनिया ने किया। दिल्ली नगर निगम उद्यान विभाग एवं शाहदरा सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुसुम लूनिया ने किया।

अणुव्रत एवं स्वस्थ समाज संगोष्ठी

उदयपुर, 18 अप्रैल। अणुव्रत समिति एवं महावीर जैन श्वेतांबर समिति सेक्टर-11 के संयुक्त तत्वावधान में महावीर भवन सभागार में साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में ''अणुव्रत एवं स्वस्थ समाज'' विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। अणुव्रत समिति उदयपुर के प्रचारमंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया आमजन में अणुव्रत के प्रति जन जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से सेक्टर-11 स्थित महावीर भवन में आयोजित संगोष्ठी में महिलाओं और पुरुषों ने साध्वी सुमनश्री के अमृतमय प्रवचन को श्रवण कर उन्हें अंगीकार किया।

साध्वी सुमनश्री ने उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए कहा इन्सान पहले इन्सान है फिर हिन्दू व मुसलमान है। यह संदेश मानव जाति के लिए आचार्य तुलसी ने दिया। देश आजाद हुआ अनेक प्रकार की योजनाएं बनीं लेकिन चरित्र निर्माण की योजना आचार्य तुलसी ने अणुव्रत मंच से पूरे देश को दी। आज आधुनिकता के नाम पर युवा पीढ़ी ड्रिंक, ड्रग और डांस पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रही है और भारतीय संस्कृति से दूर होती जा रही है आज अपेक्षा है अणुव्रत को समझने की और अपने जीवन में बदलाव लाने की केवल हार्ट बदलने से जीवन नहीं बदलता। व्यवहार को बदले जीवन में अर्थ-विचारों और व्यवहार की प्रामाणिकता लाये इसी का नाम अणुव्रत है।

मुख्य अतिथि सज्जन कटारा उदयपुर ग्रामीण विधायक ने कहा संतों का मार्गदर्शन भटके हुए मानव को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। युग पुरुष महावीर द्वारा प्रदत्त सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों को अपने जीवन में मानव अगर उतार ले तो उसका जीवन धन्य हो जाएगा।

साध्वी सुरेखा ने कहा आज विज्ञान का युग है सभी प्रकार के भौतिक संसाधन सभी के पास है फिर भी प्रत्येक व्यक्ति तनाव व अशांति का जीवन जीता है, क्योंकि संयम की चेतना जागृत नहीं हुई है। अणुव्रत को अपनाकर हर व्यक्ति सुखी इंसान बन सकता है। अणुव्रत कोई नारा नहीं है, घोषणा पत्र नहीं है बल्कि नैतिकता का राजपथ है इस पर चल कर जीवन धारा को बदलें।

अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने स्वागत करते हुए क्रिया-कलापों की जानकारी दी। इस अवसर पर उपाध्यक्ष शब्बीर के. मुस्तफा, जेल अधीक्षक एस.एस. शेखावत, सभा के अध्यक्ष कुन्दनमल सामर, उपाध्यक्ष डॉ. के.एल. तोतावत, महावीर जैन समिति के मंत्री हिम्मत दलाल ने अपने विचार रखे। संगोष्ठी में अरविन्द चित्तौड़ा, अशोक राठोड़, रामप्रसाद गुप्ता, जमनालाल दशोरा, सुरेश सियाल, राकेश चित्तौड़ा, डॉ. जयराज आचार्य, भगवती लाल नागर उपस्थित थे। संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन निर्मल कुणावत ने किया।

विद्यार्थियों में अहिंसा प्रशिक्षण एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोग

शेंदला (मेहकर)। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र मेहकर द्वारा 15 किमी. दूरी पर स्थित शेंदला ग्राम के मराठी पूर्व माध्यमिक स्कूल में 50 विद्यार्थियों के बीच चार दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान प्रतिदिन सुबह 6 बजे से 10 बजे तक आसन, प्राणायाम, नमस्कार मुद्राएं, प्रेक्षाध्यान के प्रयोग, अणुव्रत गीत इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया।

प्रमुख अतिथि डॉ. पनाड एवं जीवन विज्ञान शिक्षक बालरोग विशेषज्ञ डॉ. नाहर ने अपने विचार रखे। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेंदला की प्रशिक्षिका कुमारी पल्लवी व कुमारी पायल का सराहनीय श्रम रहा। कार्यक्रम का संयोजन नंदकुमार नाहर ने किया।

भिवानी में प्रेक्षाध्यान शिविर

भिवानी, 9 अप्रैल। हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में साध्वी यशोमती के सान्निध्य में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान एवं योग साधना शिविर का आयोजन प्रेक्षा विहार में किया गया। शिविर संयोजक रमेश बंसल ने बताया कि इस शिविर में प्रेक्षा प्रशिक्षण डॉ. एस.के. जैन रोहतक एवं संतोष रानी जैन के निर्देशन में प्रदेशभर के अनेक साधकों ने प्रेक्षाध्यान, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का प्रशिक्षण लिया।

साध्वी यशोमती ने शिविर शुभारंभ पर कहा वर्तमान भौतिक जगत में व्यक्ति अपने आपको भूलता जा रहा है और प्रेक्षाध्यान के माध्यम से स्वयं सत्य को पहचानने की शक्ति मिलती है। प्रेक्षाध्यान अभ्यास का विषय है और रोजाना 15 मिनट भी नियमित अभ्यास करने से परिवर्तन अवश्य होगा और शांति का अनुभव होगा। मात्र देखने या सुनने से कुछ नहीं होता, बल्कि अभ्यास करने से आनंद आता है। व्यक्ति की संकल्प शक्ति जितनी मजबूत होगी उसे उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। समिति के प्रदेशाध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र जैन एवं संरक्षक सुरेन्द्र जैन एडवोकेट ने अतिथियों का परिचय एवं सम्मान किया। मुख्य अतिथि सुभाष जैन गुडगांव ने कहा कि ऐसे शिविरों से समाज में शांति एवं सहअस्तित्व की भावना को बढ़ावा मिलता है। हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''अणुव्रत भावना'' के नवीनतम अंक का भी विमोचन किया गया।

दूसरे दिन प्रातः 5.30 बजे प्रेक्षाध्यान सत्र प्रारंभ हुआ। प्रेक्षा प्रशिक्षक लाजपत राय जैन ने शारीरिक, यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण दिया। साध्वीश्री ने कहा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की उचित देखभाल के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कारगर हैं। तन और मन के रोगों से प्रेक्षाध्यान ही छुटकारा दिलवा सकता है। प्रेक्षाध्यान से अपने भावों पर नियंत्रण करने की शक्ति मिलती है और अपने आप पर नियंत्रण रखने वाला व्यक्ति शत-प्रतिशत रोगमुक्त रह सकता है। मन पर काबू पाने से पहले शरीर की चंचलता समाप्त करना जरूरी है। दिनभर के व्यस्त कार्यक्रमों में साधकों को डॉ. एस.के. जैन और डॉ. संतोष जैन, लाजपत राय जैन के अलावा हरियाणा प्राकृतिक चिकित्सालय के चिकित्सा प्रभारी डॉ. मदन मानव ने योग और प्राकृतिक चिकित्सा के महत्त्व को समझाया और स्वस्थ जीवन शैली के गुर बताए।

मुख्य अतिथि विधायक घनश्याम सर्राफ ने शिविर के अंतिम दिन सत्र को संबोधित करते हुए कहा ऐसे शिविरों से आम आदमी लाभान्वित होता है। उन्होंने शिविरार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। समिति के संरक्षक 'एडवोकेट' सुरेन्द्र जैन एवं अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र जैन ने अतिथियों का स्मृतिचिह्न एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया।

शिविर के तीनों दिन प्रेक्षाविहार के सुरम्य वातावरण में सभी साधकों को बहुत आनंद का अनुभव हुआ। समापन सत्र में अनेक शिविरार्थियों ने अपने लिखित अनुभवों के माध्यम से कहा कि अपने जीवन में उन्होंने इतना सफल और सुफल तथा व्यवस्थित शिविर में पहली बार भाग लिया। शिविर में हाँसी, हिसार, आदमपुर, गुडगांव, फरीदाबाद रोहतक, बुवानी खेड़ा, तोशाम तथा जीन्द के सैकड़ों साधकों ने लाभ उठाया। हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा सर्वोत्तम शिविरार्थी के रूप में जगन्नाथ एवं स्नेहलता गौतम को पुरस्कृत किया गया।

कारागृह बने सदाचार गृह

नगाँव, 14 अप्रैल। साध्वी त्रिशलाकुमारी के सान्निध्य में तेयुप के तत्वावधान में नगाँव केन्द्रीय कारागृह में अणुव्रत आचार संहिता पर कार्यक्रम रखा गया। शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात अजीत कोठारी ने साधु-साध्वियों एवं अतिथियों का परिचय दिया।

साध्वी त्रिशलाकुमारी ने कारागृह के बंदी भाइयों को संबोधित करते हुए कहा आज आप लोगों को कारागृह में संतों के दर्शन एवं प्रवचन का लाभ प्राप्त हो रहा है, यह आपका सौभाग्य है। संतों के दर्शन से पापी भी पावन बन जाते हैं, नास्तिक भी आस्तिक बन जाते हैं और चोर व डाकू भी सज्जन बन जाते हैं। इसलिए आज से आपकी चेतना में भी बदलाव आये, जीवन व्यसनमुक्त बने। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित छोटे-छोटे अणुव्रत नियमों को अपने जीवन में उतारें। कारागृह से छुट्टी होने पर आपके जीवन में नैतिकता, सदाचार, परस्पर प्रेमभाव बढ़े तभी हमारे यहाँ आने की सार्थकता होगी। कैदी भाइयों ने साध्वीश्री के उपदेश से प्रभावित होकर स्वेच्छा से खड़े होकर नशा न करने एवं व्यसन- मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया।

साध्वी कल्पयशा ने कहा हमें दुर्लभ मानव का जन्म मिला है, हमें अपने जीवन को प्रकाश से भरना है। अंधकार से नहीं इसके लिए सन्मार्ग पर चलने की जरूरत है।

कार्यक्रम के समापन पर कैदी भाइयों को असमिया भाषा में अनुवादित अणुव्रत आचार संहिता एवं खाद्य सामग्री वितरित की गयी। बजरंगलाल नाहटा, उत्तमचंद नाहटा ने जेल में एक रंगीन टी.वी. देने की घोषणा की। धन्यवाद ज्ञापन अजीत कोठारी ने किया।

अणुव्रत चरित्र निर्माण का अभियान

नई दिल्ली, 20 अप्रैल। किसी के लिए भी जितना बुद्धिमान होना जरूरी है, उतना ही चरित्र बल से सम्पन्न होना भी जरूरी है। आज हर क्षेत्र में बौद्धिकता के आधार पर ही मनुष्य का मूल्यांकन होता है। इस दृष्टिकोण में सुधार और बदलाव की आवश्यकता है। नेता के विचार उदार और स्वार्थ रहित होने चाहियें। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार ने शालीमार बाग में आयोजित विचार संगीती में व्यक्त किये। इसमें मुख्य रूप से भाजपा पंजाब प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष व राष्ट्र कार्यकारिणी के अध्यक्ष राजेन्द्र भंडारी भी उपस्थित थे। मुनिश्री ने अणुव्रत की चर्चा करते हुए कहा अणुव्रत असांप्रदायिक व चरित्र निर्माण का मिशन है। अणुबम की शक्ति को अणुव्रत के द्वारा ही निष्प्राण बनाया जा सकता है। राजेन्द्र भंडारी ने मुनि राकेशकुमार के विचारों पर सहमति प्रकट करते हुए कहा वर्तमान की राजनीति हिंसा और भ्रष्टाचार का पर्यायवाची बन गई हैं। चरित्र निर्माण के द्वारा ही राजनीति व देश के स्तर को ऊंचा उठाया जा सकता है। इस अवसर पर मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार, सुरेश जैन, अमित गोयल, संजय गोयल, संजय सुराणा उपस्थित थे।

बच्चों में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का विकास आवश्यक

नई दिल्ली, 25 अप्रैल। हमें मानवीय चारित्रिक मूल्यों से जुड़ना होगा। मनसा, वाचा, कर्मणा जब तक इंसान एक नहीं होगा मानवीय गुणों का विकास नहीं होगा। हमारा सबसे बड़ा कर्त्तव्य मूल्यपरक शिक्षा को स्थापित करने का है। मीडिया के हम दास बन गये हैं और मीडिया ने हमारा सबकुछ छीन लिया है। मीडिया देश को भ्रष्ट कर रहा है। मीडिया को ऐसे कार्यक्रम प्रचारित-प्रसारित नहीं करने चाहियें जो बालपीढ़ी की मानसिकता पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। आज संस्कृति एवं मूल्यों का भी राजनीतिकरण हो गया है। हम अपने घरों को मानवीय मूल्यों की प्रयोगशाला बनायें। घर की प्रयोगशाला में बच्चों को संस्कृति से परिचित करायें। पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह 'शशि' ने नगराज एकता मंदिर में अणुव्रत महासमिति, राष्ट्रीय एकता परिषद् एवं भारतीय संस्कृति संस्थान द्वारा आयोजित द्विदिवसीय सेमिनार में उक्त विचार व्यक्त किए। सेमिनार के विषय ''बच्चों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास'' को प्रतिपादित करते हुए शिक्षाविद् एवं भारत-हरियाणा सरकार के पूर्व शिक्षा सलाहकार डॉ. धर्मपाल मैनी ने कहा बच्चों में कौन-से मूल्य अनुस्यूत किये जायें इस पर विचार आवश्यक है। विश्व में आज तक इस दिशा में वैज्ञानिक आधार पर कार्य नहीं हुआ है। मूल्यों से युक्त व्यक्ति ही सुसंस्कृत समाज का निर्माण कर सकता है। हमारे अंदर जो चेतना जागृत है उसे नई पीढ़ी को हस्तांतरित करें।

भारत सरकार के पूर्व शिक्षा सलाहकार प्रो. सोमदत्त दीक्षित ने कहा-स्थायित्व एवं परिवर्तन दोनों आवश्यक हैं। संस्कृति स्थायी होती है अतः इसका संरक्षण आवश्यक है। हमारे देश की संस्कृति ने जियो और जीने दो को जीवन में उतारा है अतः हम मन को विशाल बनायें।

अध्यात्म साधना केन्द्र के स्वामी धर्मानन्द का सुझाव रहा-बच्चों में मानवीय गुणों के विकास के क्रम में हमारे में संकल्प शक्ति का अभाव है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से हम संकल्प शक्ति का विकास पूरे परिवार में कर सकते हैं। बच्चों में भ्रमर गुंजन करवायें, मूर्तिवत बिठाये इन प्रयोगों से संस्कृति एवं संकल्प शक्ति का विकास होगा।

वायु सेना के पूर्व शिक्षा निदेशक कैप्टन ओ.पी. शर्मा का विचार था कि जीवन मूल्यों को पनपाने के लिए हमें अनौपचारिक बनना होगा तथा इस कार्य में नवयुवकों को साथ जोड़ उन्हें उत्तराधिकार सौंपना होगा। रामकृष्ण मिशन के सूर्यकुमार ने कहा-चित शुद्धि का क्या तंत्र हो? यह प्रश्न विचारणीय है। मस्तिष्क स्वच्छ होगा तो अंदर की शक्ति बाहर आयेगी। बच्चे के अंदर जो प्रतिभा छिपी हुई है उसे बाहर निकालना ही शिक्षा है।

द्विदिवसीय सेमिनार में चार सत्र हुए एवं इसमें कैप्टन ओ.पी. शर्मा, डॉ. प्रभात कौशिक, कैप्टन के.के. शर्मा, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, ईश्वर दयाल कंसल, कैप्टन सी.एम. व्यास, स्वामी धर्मानन्द, जी.एस. नेगी, बाल साहित्यकार रजनीकांत शुक्ल, स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी.एन. पांडेय, सर्वोदयी सहित रामकृष्ण मिशन, संस्कारम्, महेश योगी संस्थान, विश्व मानव मूल्य संघ, विद्या भारती, वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर वेल्यू एजूकेशन, भारतीय संस्कृति संस्थान, अणुव्रत महासमिति, कॉसमिक ग्रुप ऑफ बी स्कूल, भारतीय विद्या भवन, हिन्दी मित्र सेवा समिति, भारतीय गौ सेवक समाज, अध्यात्म साधना केन्द्र के 40 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। गांधी सेवा सदन राजसमंद के मंत्री एवं अणुव्रत पाक्षिक के संपादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा हिंसक खिलौने से यदि हम बच्चों का मनोरंजन करेंगे तो बच्चे हिंसक ही बनेंगे। बच्चों को अपराधी माता-पिता ही बनाते हैं। बच्चा माता-पिता का ही अनुकरण करता है अतः आवश्यक है कि माता-पिता की कथनी-करनी का अंतर मिटे। डॉ. शशि एवं डॉ. मैनी का शाल्यार्पण कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन विजयराज सुराणा ने स्वागत एवं आभार ज्ञापन अमृत कुमार नवलखा, बाबूलाल गोलछा ने किया।

बच्चों में नैतिक एवं मानवीय मूल्य अणुव्रत कार्यशाला नई दिल्ली में मंचासीन कैप्टन ओ.पी. शर्मा, कैप्टन सी.एम. व्यास, अमृत नवलखा, डॉ. धर्मपाल मैनी एवं डॉ. श्यामसिंह 'शशि' उद्घाटन वक्तव्य देते हुए

कृति

लोक सेवक की डायरी

एल.आर. भारती

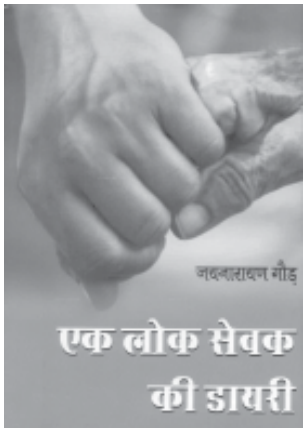

जयनारायण गौड द्वारा लिखित 'एक लोक सेवक की डायरी' वास्तव में छोटे-छोटे कदमों से प्रारंभ हो बड़ी यात्रा का आख्यान है। लेखक ने 34 वर्षों तक प्रशासनिक जीवन जीने के साथ-साथ उनके मूल्यपरक जीवन में आध्यात्मिकता चिरसंगी रही है। कुल मिलाकर उनका बहुआयामी व्यक्तित्व रहा है। किसी व्यक्ति के चरित्र का असली आईना उसकी बातें नहीं उसका आचरण होता है। उन्होंने कहा है कि यह देश का दुर्भाग्य है कि आजादी के विगत 62 वर्षों में प्रशासन और जनता के बीच की खाई अधिक गहरी और चौड़ी हुई है। प्रशासन के दोनों पक्षों (अच्छे और बुरे) को दर्शाया गया है जैसाकि देखने में आता है कि शीर्षस्थ पदों पर बैठे राजनेताओं का स्वयं का आचरण, प्रशासन में भ्रष्टाचार हेतु हरी झंडी बन गया। साथ ही भारत में सरकारी सेवाओं को अत्याधिक सुरक्षा प्रदान कर उन्हें अनुत्तरदायी बना दिया..... देश का प्रशासन आज चौराहे पर खड़ा है और उसे निर्णय लेना है कि आगे बढ़े या अपनी पुरानी शैली में ही गतिहीन तथा निष्क्रिय बना रहे।' श्री गौड़ ने अपनी डायरी में जो संस्मरण प्रस्तुत किए हैं एक आत्मकथा के रूप में यह स्वमूल्यांकन स्वयं में बहुत कठिन कार्य है और वह भी एक लोक सेवक द्वारा जिन्होंने अपने प्रशासनिक सफरनामे के साथ अपनी निजी जिन्दगी के उतार-चढ़ाव को बेबाक-बेलगाम और निष्पक्ष होकर वास्तव में अपनी चारित्रिक निर्मलता और दृढ़ता दशार्यी है। उनकी डायरी के अंश प्रमाणित करते हैं कि एक लोकसेवक अहंकार, आवेश और आत्मश्लाघा से मुक्त हो काजल की कोठरी में रहकर भी निष्पक्ष और बेदाग रहता है। पुस्तक पढ़ने के बाद लगता है कि श्री गौड़ की संपूर्ण सोच रचनात्मक है। समाजिकता, सेवाभाव एवं कार्यों के प्रति निष्ठा इसीलिए एक आत्मसंतोषी की झलक मिलती है।

गौड़ लेखन एवं निर्धनों, उपेक्षितों की सार्थक सहायता में सक्रिय और अनेक समाज-सेवी संस्थाओं से जुड़कर कार्यरत हैं।

आत्मकथा लिखना एक साहस और सच्चाई का कार्य है। आज की नौकरशाही एक लांछन का पर्याय बन गई है। राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष वेद व्यास ठीक ही कहते हैं कि 'धरती वीरों से खाली नहीं है' तथा 'सत्यमेव जयते' आज भी मनुष्य और समाज का आदर्श उद्घोष है जहां लोकसेवा का दर्शन रचती है यहां न्याय की प्रकृति को भी रेखांकित करती है।

लेखक ने अपनी पूरी ईमानदारी और निष्पक्षता बरती है। पुस्तक में उन सभी तथ्यों के अनेकानेक प्रस्तुत छायाचित्र हैं जो उनकी प्रशासनिक क्षमता, सामाजिकता एवं सेवाभावी होने की गवाही देते हैं। पूरा विश्वास है कि आज के परिप्रेक्ष्य में यह लोकसेवक की डायरी सभी प्रबुद्ध एवं पाठकों को प्रेरित करेगी तथा उपयोगी भी सिद्ध होगी। पुस्तक का आवरण आकर्षक है और टाइपसेटिंग भी सुंदर है।

पुस्तक	: एक लोक सेवक की डायरी
लेखक	: जयनारायण गौड़
पृष्ठ	: 224 ● मूल्य : 300 रुपए
प्रकाशक	: शीतल ऑफसैट, जयपुर

रोशनारा रोड़, दिल्ली–110007

भारत-पाक सीमा बाघा बॉर्डर पर मुनिश्री का स्वागत

उदयपुर, 12 अप्रैल। आचार्य महाप्रज्ञ के सुशिष्य मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनि उदितकुमार आदि संतों का भारत-पाक सीमा आगमन पर व्यापार के मार्ग 'बाधा बार्डर' पर सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने स्वागत किया। बी.एस.एफ. के बाघा बॉर्डर के कमांडेंट संजयकुमार ने मुनिश्री का अभिनंदन किया। उन्हें आचार्यवर की लोकप्रिय पुस्तक ''हैप्पी एंड हारमोनियस फैमिली'' भेंट की गयी। कई वरिष्ठ अधिकारियों को भी पुस्तक भेंट की गयी।

बार्डर पर आयोजित परंपरागत 'रीट्रिट सेरेमनी' में मुख्य मेहमानों के विशेष लॉज में मुनिश्री सहित संत व साथ आए लोगों को ससम्मान बिठाया गया। कमांडेन्ट की विशेष अनुमति से सभी संत बार्डर के जीरो पाइन्ट पर गए। वहां पाकिस्तानी रेंजर्स ने भी मुनिश्री का स्वागत किया। दोनों देशों के मध्य अमन-चैन, भाईचारा एवं सौहार्द भाव विकसित होने और उसके टिके रहने की मंगल कामना की। इस अवसर पर इज्राइल, बेल्जियम आदि देशों के लोग भी उपस्थित थे। उन्होंने भी मुनिश्री के सामने अपनी जिज्ञासाएं रखीं, जिनका समाधान किया गया।

इस अवसर पर अमृतसर, लुधियाना, अहमदगढ़, संगरूर, शेरपुर इत्यादि क्षेत्रों के लोग साथ थे। रीट्रिट सेरेमनी में सुंदर व्यवस्था हेतु डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल-भीखीविंड के प्राचार्य संजीव कोचर तथा सिविल एंड ज्यूडिशयल मजिस्ट्रेट के.के. जैन का बहुत योगदान रहा। इसमें कमांडेंट इन चीफ सांधा, अटारी डी.ए.वी. स्कूल के प्रिंसीपल परमजीत कुमार का भी सहयोग मिला। मार्गवर्ती व्यवस्था में मोतीलाल बैंगाणी, शांतिलाल बोथरा, हेमराज सुराणा, कमल संचेती, गणेश बैंगाणी, प्रदीप कोचर, सौरभ कोठारी, सिपाणी आदि का योग रहा।

www.terapanthionfo.com